हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद

दूरभाष नं० 0172–2570743
ई–मेलः chairpersonhshec@gmail.com

तकनीकी शिक्षा सदन,
बेज़ नं० 7–12, सैक्टर – 4,
पंचकूला – 134109

पत्र कमांकः 8/1-2020 Adv./HSHEC
दिनांकः 07.10.2020

सेवा में,

सभी राजकीय महाविद्यालयों एवं राज्यपोषित महाविद्यालयों के प्राचार्य।

विषयः– **स्नातक स्तर पर महाविद्यालयों के पाठयक्रम में जीविकोपार्जन के उपायों का समावेश।**

–0–

जैसा की आप सभी को विदित है की राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 मे इस बात का उल्लेख है की भारत में विज्ञान और गणित से लेकर कला, साहित्य, स्वर विज्ञान और भाषा से लेकर चिकित्सा और कृषि तक के विषयों में अनुसंधान और ज्ञान सृजन की एक लंबी ऐतिहासिक परंपरा रही है। अब समय की मांग है कि भारत जल्द से जल्द एक मजबूत और प्रबुद्ध ज्ञान–समाज के रूप में अपनी खोयी हुई स्थिति को शीघ्र ही पुनः प्राप्त करे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को हरियाणा के संदर्भ में कार्यान्वित करने हेतु हाल ही में हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद ने 4 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इसके निष्कर्षों की प्रस्तुति महामहिम राज्यपाल महोदय को प्रस्तुत की गयी थी। इसमें यह सिफारिश की गयी कि हर पाठयक्रम में जीविकोपार्जन के साधनों का प्रशिक्षण अनिवार्य हो तथा हर पाठयक्रम में विषय से संबधित आचार–विचार व मानव मूल्यों का समावेश किया जाए।

इस सन्दर्भ में हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद ने कुछ समय पूर्व से ही पहल कर दी थी। अतः विषय विशेषज्ञों, विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, महाविद्यालयों के प्राचार्यों, प्राध्यापकों से लगातार विमर्श करके स्नात्क स्तर के 21 विषयों में निहित जीविका उपार्जन से जुड़े कार्यों को चिन्हित किया। इस बारे तैयार की गयी अभ्यास पुस्तिका की मृदु प्रति संलग्न है।

आप से अनुरोध है कि कृप्या इसे इसी सत्र से पाठ्यक्रम में समावेश करके इसे कार्यरूप देने की कृपा करें। साथ ही इस पर समय–समय पर सत्र के दौरान छात्रों तथा शिक्षकों से प्रतिक्रिया लेकर परिषद से सांझा करे ताकि इसे अधिक से अधिक व्यवहारिक एवं लाभप्रद बनाया जा सके।

परिषद इस महत कार्य के लिए आपकी सहभागिता के लिए आभारी होगी।

K Agnihotri

सलाहकार,
ह.रा.उ.शि.परिषद

पृष्ठांकन क्रमांकः 8/1-2020 Adv./HSHEC दिनांकः 07.10.2020

इसकी एक प्रति अनुलग्नक सहित निम्नलिखित को सूचनार्थ प्रेषित हैः–

1. महानिदेशक, उच्च शिक्षा हरियाणा, पंचकूला।

2-17. राज्य के सभी राज्यपोषित विश्वविद्यालयों के कुलसचिव।

K Agnihotri

सलाहकार
ह.रा.उ.शि.परिषद

जीविकोपार्जन के उपायों का समावेश

हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद

पंचकूला -134109 (हरियाणा)

दूरभाष : 0172-2570743,

अणुडाक : chairpersonhshec@gmail.com

हमारी शिक्षा नीति का मूल तत्व यह है कि उच्चतर शिक्षा संस्थाओं में स्वायत्तता एवं दायित्वबोध की व्यवस्था स्थापित हो। उच्चतर शिक्षा की दिशा ऐसी होनी चाहिए कि वह राज्य और राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान में प्रत्यक्ष योगदान करें। प्रदेश की आवश्यकता के अनुसार उच्चतर शिक्षा की दिशा एवं विकास की योजना निर्धारित हो, ऐसी अपेक्षा है।

- मनोहर लाल खट्टर
मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार

प्राक्कथन

अध्यक्ष हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद की पहल पर परिषद ने स्नातक स्तर पर महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में जीविकोपार्जन के उपायों का समावेश विषय को कार्यरूप देने हेतु इसकी शुरूआत माननीय मुख्यमंत्री जी के सानिध्य में दिनांक 12.04.2018 को आयोजित एक दिवसीय सम्मेलन से की। मूलमन्त्र के रूप में विमर्श उपरान्त यह तय किया गया कि स्नातक स्तर के विषयों में चिन्हित आजिविका के 10–10 कार्य बिंदुओं को चिन्हित किया जाए।

इस प्रयोजन हेतु परिषद द्वारा विशेषज्ञों, विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, महाविद्यालयों के प्राचार्यों, प्राध्यापकों से लगातार विमर्श जारी रखा, गोष्ठीयां की। परिणामस्वरूप एक पुस्तिका तैयार की गई जिसमें 24 विषय चिन्हित किये गये हैं। प्रत्येक विषय में ऐसे कार्यबिन्दुओं का समावेश किया गया है, उन्हें शिक्षक कैसे कार्यरूप देगें, का विस्तृत उल्लेख किया गया है। इस प्रौजेक्ट का उद्देश्य, महत्व इत्यादि की व्याख्या इस पुस्तिका में दी गई है।

परिषद का मत है कि प्रत्येक विषय का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से यह पुस्तिका उपयोगी होगी। अतः इसकी महाविद्यालयों को मृदु प्रति के रूप में प्रेषित करके इसे इस सत्र से पाठ्यक्रम में समावेश करके विद्यार्थियों को अभ्यास करवाना प्रस्तावित है। इससे समय–समय पर सत्र के दौरान छात्रों तथा शिक्षको से प्रतिक्रिया लेने का प्रयास किया जायेगा जिससे कि इसे अधिक से अधिक व्यवहारिक एवं लाभप्रद बनाया जा सके। दूसरे चरण में शेष विषयों को भी चिन्हित करने की प्रक्रिया आरम्भ की जायेगी।

संदेश

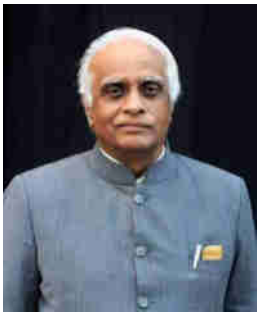

शिक्षा समाज का आधार स्तम्भ है और सुशिक्षित युवा पीढ़ी इस समाज की नींव है। समाज की नींव मजबूत कैसे हो, इस दिशा में शिक्षा के तीन उद्देश्य उभर कर सामने आते है–ज्ञान, जीविका व जीवन। शिक्षा ज्ञान प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है, इसी ज्ञान के आधार पर वह समाज में विवेक व बुद्धि का प्रयोग कर अच्छा नागरिक बन सुन्दर जीवनयापन कर पाने में सफल हो पाता है।

सुन्दर व सफल जीवन की संकल्पना भी शिक्षा के द्वारा ही पूरी होती है क्योंकि शिक्षा मनुष्य को नवजीवन, नवसृजन का आधार प्रदान करती है। मनुष्य नित–प्रतिदिन नया सीखता है और इसी व्यावहारिक ज्ञान के बल पर वह जीवन के विभिन्न आयामों को समझने में सक्षम बन पाता है।

शिक्षा का तीसरा उद्देश्य आय या जीविकोपार्जन है। विभिन्न विषयों व विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त की गई शिक्षा के बल पर ही विद्यार्थी रोजगार या नौकरियाँ को पाने में सक्षम होता है तथा अपना व अपने परिवार का भरण–पोषण करता है।

परंतु वर्तमान समय में हमारे समाज की युवा पीढ़ी शिक्षा प्राप्ति के पश्चात भी बेरोजगारी की समस्या से जूझ रही है। इसी बेरोजगारी की समस्या के निराकरण हेतु हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद ने विभिन्न विषय विशेषज्ञों की मदद से स्नातक स्तरीय कक्षाओं में पढ़ाये जाने वाले 21 विषयों में निहित जीविका उपार्जन से जुड़े कार्यों को चिन्हित किया है।

अनेकों कार्यशालाओं एवं बैठकों में विचार–मंथन के बाद हर विषय से संबंधित दस–दस बिन्दु सूचीबद्ध किये गये है तथा इस पुस्तक में इन बिन्दुओं के व्यावहारिक क्रियान्वन संबंधी दिशा–निर्देश भी दिये गये है।

रोजगार सृजन के साथ–साथ हमें समस्या के प्रति दृष्टिकोण भी स्पष्ट करना होगा कि शिक्षा प्राप्ति के उपरांत केवल नौकरी प्राप्त करना ही एक मात्र उद्देश्य नहीं होना चाहिए। जीवनयापन हेतु आर्थिक रूप से सशक्त होना भी आवश्यक है। यह आर्थिक स्वाबलम्विता सिर्फ नौकरी से ही आयेगी; ऐसा हमें नहीं मानना चाहिए। रोजगार से प्रति व्यापक रूप से सोचना होगा कि वर्तमान दौर में इसके और कौन–कौन से बेहतर विकल्प हो सकते है। रोजगार सृजन के अधिकाधिक विकल्पों की तलाश की जानी चाहिए। अतः शिक्षक समय का दायित्व बनता है कि वे उनके यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को विषय संबंधी चिन्हित दस–दस बिन्दुओं के व्यावहारिक व प्रायोगिक पक्ष को ध्यान में रखते हुए अध्ययन करवाएं। रोजगार सृजन के तत्त्व हर विषय में विद्यमान है। आवश्यकता इस बात की है कि हम उन्हें समझकर क्रियान्विन कर सके।

हमारा विश्वास है कि महाविद्यालय व विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाली युवा पीढ़ी इन विषयों से जुड़े। 10–10 कार्यों में से कोई 2 या 4 कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त कर जीविका उपार्जन में सक्षम हो सकेगी। अतः शिक्षक समाज से निवेदन है कि वे अपने–2 विषयों में निहित जीविकोपार्जन से जुड़े कार्यों का प्रशिक्षण देना प्रारम्भ करें ताकि हम अपने समाज में व्यापत बेरोजगारी की समस्या के निराकरण में सहायक बन सके।

आशा है कि यह पुस्तिका सभी विद्यार्थियों और प्राध्यापकों के लिए मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करेगी। साथ ही साथ जो भी क्षेत्र, विषय व बिन्दु शेष रह गए है, उन पर भी प्रबुद्ध प्राध्यापक वर्ग अपनी तीव्र दृष्टि व तीक्ष्ण बुद्धि के माध्यम से विद्यार्थियों हेतु अन्य जीविकोपार्जन के उपाय उपलब्ध करवाने का सार्थक प्रयास करेंगे। ऐसी अपेक्षा है।

प्रो॰ बृज किशोर कुठियाला

विषय सूची

क्र.स.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	01
2.	संदेश	02—03
3.	विषय सूची	04
4.	अंग्रेजी	05—08
5.	अर्थशास्त्र	09—12
6.	इतिहास	13—16
7.	कंप्यूटर	17—20
8.	खेल एवं शारीरिक शिक्षा	21—25
9.	गणित	26—29
10.	जनसंचार एवं पत्रकारिता	30—34
11.	प्राणी विज्ञान	35—39
12.	भूगोल	40—44
13.	भौतिक विज्ञान	45—48
14.	मनोविज्ञान	49—52
15.	राजनीति शास्त्र	53—56
16.	रसायन विज्ञान	57—61
17.	लोक प्रशासन	62—65
18.	वनस्पति शास्त्र	66—70
19.	वाणिज्य	71—74
20.	शिक्षा	75—78
21.	संस्कृत	79—82
22.	समाजशास्त्र	83—86
23.	हिन्दी	87—90
24.	होटल एवं पर्यटन	91—94

अंग्रेजी

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	कंप्यूटर पर अंग्रेजी में कार्य करने की क्षमता।
2.	कंप्यूटर पर अंग्रेजी में लेख संबंधी तैयार करने की दक्षता।
3.	अंग्रेजी में बोले हुए शब्दों की कंप्यूटर पर टंकण करने की दक्षता।
4.	कार्यालयों में अंग्रेजी में पत्राचार व टिप्पणी लिखने की दक्षता।
5.	अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद की दक्षता।
6.	हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद की दक्षता।
7.	संभ्रांत व्यक्तियों का सोशल मीडिया का लेखन एवं प्रबंधन।
8.	अंग्रेजी में वेबसाईट पोर्टल इत्यादि बनाने की दक्षता।
9.	मंच संचालक व उद्वघोषक के कार्य में दक्षता।
10.	लेखक व समीक्षक के रूप में जीवनयापन।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **कंप्यूटर पर अंग्रेजी में कार्य करने की क्षमता –** महाविद्यालय में प्राध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को कंप्यूटर पर अंग्रेजी का कार्य करने में सक्षम बनाने हेतु अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध सभी वेबपोर्टल्स व सॉफ्टवेयर की जानकारी देने के साथ–साथ उन्हें प्रायोगिक कार्य देकर अभ्यास करवाएं, ताकि वे इस जानकारी का उपयोग जीविका कमाने में कर सके।
2. **कंप्यूटर पर अंग्रेजी में लेख संबंधी तैयार करने की दक्षता** – अध्यापकों को चाहिए कि जो भी विद्यार्थी अंग्रेजी विषय में अच्छी पकड़ रखने के साथ–साथ लेख लिखने में जिनकी रूचि है, ऐसे विद्यार्थियों को इस क्षेत्र में प्रायोगिक अभ्यास करवाकर, उनकी प्रतिभा को और अधिक विकसित किया जाए तथा लेख लिखने से संबंधित अंग्रेजी भाषा के सभी फॉन्टस की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करवायी जाए ताकि वे इस जानकारी का उपयोग कंप्यूटर पर अंग्रेजी भाषा से संबंधित लेख लिखने में कर, अपने लिए आय के साधन जुटाने में सक्षम हो सके।
3. **अंग्रेजी में बोले गए शब्दों की कंप्यूटर पर टंकण करने की दक्षता –** वर्तमान समय में अंग्रेजी भाषा में शब्दों के टंकण हेतु रोमनलिपि के बहुत से सॉफ्टवेयर उपलब्ध है। यदि प्राध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को इन सभी सॉफ्टवेयरों की जानकारी देने के साथ–साथ कक्षा में यदि किसी भी विषय पर अभ्यास कार्य देकर सॉफ्टवेयरों का प्रयोग करना सिखा दिया जाए तो वे इस ज्ञान का प्रयोग आजीविका कमाने हेतु कर सकते है।
4. **कार्यालयों में अंग्रेजी में पत्राचार व टिप्पणी लिखने की दक्षता** – कार्यालयों में अंग्रेजी में पत्राचार व टिप्पणी लिखने की दक्षता के विकास हेतु, प्राध्यापकों द्वारा व्यावहारिक तौर पर पत्राचार के विभिन्न रूपों का अभ्यास प्रयोग देकर करवाया जाना चाहिए तथा टिप्पणी कैसे व कितने शब्दों में, किस प्रारूप में लिखी जाती है। विभिन्न अभ्यास कार्य देकर सिखा दी जाए तो भविष्य में विद्यार्थी कार्यालयों में क्लर्क के रूप में अपना कैरियर बनाने में सक्षम हो सकेंगे।
5. **अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद की दक्षता –** वर्तमान समय में अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद की दक्षता का विकास कर भी विभिन्न प्रकार से रोजगार प्राप्ति के सुअवसर प्राप्त हो सकते है। मध्यवर्गीय व आप जनता को बाजार में उपलब्ध बहुत से उत्पादों की जानकारी इसलिए नहीं प्राप्त हो पाती है क्योंकि ऊपर अंग्रेजी में लिखा होता है। अतः ग्रामीण जनता को यदि सब जानकारी हिन्दी में अनुवाद के माध्यम से उपलब्ध करवा दी जाए अज्ञानता दूर होने के साथ–साथ विद्यार्थी, अनुवादक के रूप में भी जीविका कमाने में सक्षम हो सकेंगे।
6. **हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद की दक्षता –** प्राध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को हिंदी व अंग्रेजी के मूलज्ञान की समझ पूर्णतः विकसित करने के साथ–साथ उन्हें अनुवाद संबंधी विभिन्न गुणों को भी सिखाएं कि किस तरह से अंग्रेजी भाषा में निपुणता हासिलकर छात्र, हिंदी शब्दावली को अंग्रेजी भाषा में रूपान्तरित कर भविष्य में अनुवादक के रूप में अपनी पहचानर बनाकर जीविका कमाने में सक्षम हो सकते है।
7. **संभ्रांत व्यक्तियों का सोशल मीडिया का लेखन एवं प्रबंधन –** वर्तमान समय में सोशल मीडिया का वर्चस्व होने के कारण संभ्रांत व्यक्तियों को दिन–प्रतिदिन समय में संवाद हेतु एक मर्यादित व उपयुक्त भाषा की आवश्यकता होती है जो स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावहारिक ज्ञान

में भाषा कुशलता के साथ–साथ उनकी लेखन शैली को विकसित करना जीविकोपार्जन में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

8. **अंग्रेजी में वेबसाइट पोर्टल इत्यादि बनाने की दक्षता –** वर्तमान समय कंप्यूटर का युग है। जावा, पाइथन, C++ आदि अनेकों भाषाओं व सॉफ्टवेयरों के माध्यमों से कंप्यूटर पर अंग्रेजी भाषा में काम किया जाता है परंतु उपयुक्त जानकारी के अभाव के बिना विद्यार्थी इस सब कार्यों में स्वयं को असमर्थ बनाते है। अतः प्राध्यापकों द्वारा कक्षा में विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा में वेबसाइट व पोर्टल बनाने का व्यावहारिक ज्ञान न केवल शुद्धलेखन को बढ़ावा देगा अपितु इस को सीखकर विद्यार्थी भविष्य में जीविका कमाने में भी सक्षम बन सकेंगे।
9. **मंच संचालक व उद्घोषक के कार्य में दक्षता –** वर्तमान समय में मंच संचालन करना एक बहुत कला के रूप में उभर कर आ रहा है। जिन विद्यार्थियों की भाषा पर अच्छी पकड़ होती है, प्राध्यापकों को चाहिए कि वे महाविद्यालयों के प्रत्येक कार्यक्रमों में उन्हें इस प्रतिभा के विकास का मौका दे ताकि उनमें मंच संचालक के सभी गुणों का विकास हो। आत्म विकास में वृद्धि हो सके तो इसी निपुणता कुशलता का उपयोग वे भविष्य में जीविका कमाने में कर सकेंगे।
10. **लेखक व समीक्षक के रूप में जीवनयापन –** अंग्रेजी भाषा का विद्यार्थी यदि भाषा पर पकड़, रूचि व अच्छा ज्ञान रखता है, सामाजिक स्तर पर समाज की स्थिति का मूल्यांकन यदि भावात्मक स्तर पर करना सीख लेता है और साहित्य में रूचि रखता है तो वह भविष्य में लेखक व समीक्षक के रूप में जीविकोपार्जन का कार्य कर सकता है।

अर्थशास्त्र

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	लघु उद्योगों एवं छोटे व्यापारियों के लिए बजट बनाने का कार्य करना।
2.	उपभोक्ताओं को शिकायत होने पर उपभोक्ता शिकायत निवारण परिषद में शिकायत व मुआवजा लेने का कार्य करना।
3.	मोबाईल के माध्यम से किसानों को खाद, कीटनाशक बीज आदि की उपलब्धता एवं दरों की जानकारी देना।
4.	मोबाईल के माध्याम से किसानों को फसल के अधिक दाम प्राप्त करने के लिए परामर्श देना।
5.	जनमानस को ई—कॉमर्स के माध्याम से वस्तुएं प्राप्त करवाने में सहायक होना।
6.	शेयर बाजार में निवेश के लए एजेंट का कार्य।
7.	अपने पूंजी से शेयर बाजार में अपना कार्य प्रारंभ करना।
8.	सहकारी समितियों को वित्त संबंधी परामर्श देना।
9.	क्लाउड सोर्सिंग से व्यवसाय के लिए धन एकत्रित करने का परामर्श एवं व्यवसाय।
10.	समाचार पत्रों, चैनलों व पोर्टलों के लिए अर्थसंबंधी समाचार एवं विश्लेषण देना।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **लघु उद्योगों एवं छोटे व्यापारियों के लिए बजट बनाने का कार्य करना –** वर्तमान समय में लघु उद्योगों और छोटे व्यापारियों की आय–व्यय का ब्यौरा बजट कहलाता है। यदि व्यावहारिक रूप से कक्षा में विद्यार्थियों को बजट बनाने का कार्य सिखा दिया जाए तो वे लघु उद्योगों एवं छोटे व्यापारियों के हिसाब–किताब का लेखा जोखा तैयार करके आय प्राप्त कर सकते है।
2. **उपभोक्ताओं को शिकायत होने पर उपभोक्ता शिकायत निवारण परिषद में शिकायत व मुआवज़ा लेने का कार्य करना –** उपभोक्ता कानून अधिनियम के तहत उपभोक्ता कानून की जानकारी कक्षा में व्यावहारिक तौर पर अभ्यास करके सिखाना ताकि उपभोक्ता कानून के विषय में सभी तथ्यों को विस्तार से समझ सके और इस ज्ञान व जानकारी उपयोग वे पीड़ित उपभोक्ताओं की सहायता करने में कर सके । यह भी आय प्राप्ति का एक बेहतरीन विकल्प है।
3. **मोबाइल के माध्यम से किसानों को खाद, कीटनाशक, बीज आदि की उपलब्धता एवं दरों की जानकारी देना –** वर्तमान में डिजिटल तकनीकी का वर्चस्व है। हरियाणा प्रदेश कृषक प्रधान राज्य होने के कारण, किसानों को अपनी उपज बढ़ाने हेतु, सभी खाद कीटनाशक, बीज आदि के बारे में जानकारी कक्षा में प्राध्यापकों की मदद से यदि छात्र प्राप्त कर लेंगें, तो वे इन जानकारियों के माध्यम से किसानों की सहायता के साथ–साथ जीविका प्राप्त करने में भी स्वावलम्बी बन सकेगें।
4. **मोबाइल के माध्यम से किसानों को फसल के अधिक दाम प्राप्त करने के लिए परामर्श देना –** वर्तमान समय में हरियाणा सरकार इलेक्ट्रोनिक मण्डी के द्वारा किसानों को फसलों का सही दाम, विभिन्न रूपों और योजनाओं के माध्यम से दिलवाने के लिए प्रयासरत है। यदि इस प्रकार की व्यावहारिक जानकारी कक्षा में छात्र प्राप्त कर लेते है तो वे किसानों के लिए परामर्शदाता के रूप में कार्य कर सकते है।
5. **जनमानस को ई–कॉमर्स के माध्यम वस्तुएं प्राप्त करवाने में सहायक बनना–** ई–कॉमर्स आज व्यापार का एक वैधानिक स्वरूप बन चुका है और इनका दिन–प्रतिदिन ऑनलाईन व्यापार का कार्य भी बढ़ता जा रहा है। विद्यार्थियों को ई–कॉमर्स के माध्यम से व्यापार की उचित जानकारी देकर जीविका अर्जन हेतु सक्षम बनाया जा सकता है।
6. **शेयर बाजार में निवेश के लिए एजेंट का कार्य – श**ेयर बाजार वर्तमान समय में विनियोग का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। शेयर बाजार की सभी प्रकार की जानकारियों, नियमों का ज्ञान, कक्षा में विद्यार्थियों को व्यावहारिक तौर पर अभ्यास कार्य देकर सिखाना, ताकि वे भविष्य में शेयर बाजार एजेंट के रूप में जीविका कमाने में सक्षम बन सके।
7. **अपने पूंजी से शेयर बाजार में अपना कार्य प्रारंभ करना –** शेयर बाजार में व्यक्तिगत रूप से अपना धन, शेयर बाजार के व्यापार में निवेश करने के लिए जानकारियों व नियमों का ज्ञान होना। बाजार में विद्यार्थियों को व्यावहारिक तौर पर शेयर बाजार के नियमों की जानकारी देना ताकि विद्यार्थी शेयर बाजार में अपना व्यक्तिगत काये करने में समर्थ बन सके।
8. **सहकारी समितियों को वित्त संबंधी परामर्श देना –** कोई भी आर्थिक या सामाजिक कार्य हेतु धन की आवश्यकता होती है और कोई भी व्य्वसाय प्रारंभ करने हेतु धन की उपलब्धता

किस–किस माध्यम से हो सकती है और सहकारी समितियों को कर्ज प्राप्ति के माध्यमों जैसे बैंक, वित्तीय संस्थाएं, सरकारी वित्तीय सहायता इत्यादि की जानकारी, कक्षा में विद्यार्थियों को सिखाकर, वित्तीय सलाहकार के रूप में कार्य करने हेतु निपुण बनाया जा सकता है, जिससे वे सहकारी समितियों के मध्य वित्तीय सलाहकार के रूप में कार्य कर आय कमाने में सक्षम बन सकते है।

9. **क्लाउड सोर्सिंग के व्यवसाय के लिए धन एकत्रित करने का परामर्श एवं व्यवसाय** –वर्तमान समय में व्यवसाय करने के लिए नई तकनीकों की जानकारी होती है जिसमें क्लाउड सोर्सिंग के नाम से ऑनलाईन अप के जरिए व्यवसाय के आधुनिक तरीकों को खोजा जाता है। कक्षा में विद्यार्थियों को इस क्लाउड सोर्सिंग एप के बारे में विस्तृत व व्यावहारिक जानकारी देकर उन्हें ऑनलाईन परामर्शदाता के रूप जीविका अर्जन करने में सक्षम बनाया जा सकता है।
10. **समाचार पत्रों, चैनलों व पार्टलों के लिए अर्थसंबंधी समाचार एवं विश्लेषण देना** – अर्थसंबंधी सभी तरह के आंकड़े एकत्रित कर, उनमें विश्लेषण करने की कला का अभ्यास यदि व्यावहारिक तौर पर कक्षा में छात्रों को सिखा दिया जाए तो वे अपनी लेखनी के माध्यम से समाचार पत्रों, चैनलों व पोर्टलों में अपनी सेवाएं देकर जीविका अर्जन का कार्य कर सकते है।

इतिहास

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	पंचायत में तहसील प्रशासन की वित्तीय सहायता से ग्राम और छोटे नगरों का इतिहास लिखना।
2.	जनमानस की वित्तीय सहायता से जातियों एवं गोत्रों का इतिहास संकलन करना।
3.	स्थानीय धार्मिक वह ऐतिहासिक स्थलों का इतिहास लिखना।
4.	अपने क्षेत्र में धार्मिक एंव ऐतिहासिक स्थानों पर यात्रियों की योजना व्यवस्था करना।
5.	कम प्रचलित व्यक्तियों की जीवनियाँ लिखना।
6.	अपने क्षेत्र के इतिहास को लेकर वीडियो बनाकर यू–टयूब चैनल चलाना।
7.	स्थानीय मेलों में धार्मिक कार्यक्रमों का प्रबंधन करना।
8.	जातियों, गोत्रों, कुनबों के गौरव बिंदु को ढूंढ कर उनका इतिहास लिखना व वीडियों बनाना।
9.	कुलदेवी एवं जठेड़ा प्रथाओं के प्रति जागृत कर समाज में प्रचलित करना।
10.	समाचार पत्रों चैनलों व समाचार पोर्टल के लिए इतिहास से संबंधित समाचार विश्लेषण लिखना और वीडियो बनाना।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **पंचायत में तहसील प्रशासन की वित्तीय सहायता से ग्राम और छोटे नगरों का इतिहास लिखना**– किसी भी गांव व नगर का इतिहास वहां के स्थानीय लोगों द्वारा बताया गया हो या वहाँ के पुराने भवन, मंदिर, मस्जिद, जोहड़, स्कूल आदि पुरास्थल से ज्ञात हो सकता है। उस गाँव के इतिहास के बारे में किस प्रकार से तथ्य जुटाएं जाए आदि बातों का व्यावहारिक ज्ञान जीविका अर्जन में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।
2. **जनमानस की वित्तीय सहायता से जातियों एवं गोत्रों का इतिहास संकलन करना**– पंचायत द्वारा व स्वयंसेवी संगठन के द्वारा गांव में विभिन्न जातियों एवं गोत्रों के लोग रहते है। वहां इन जातियों व गोत्रों का पिछला इतिहास जैसे कि उनके पूर्वज कहां से आए, कब आए, वे प्राचीन समय में क्या कार्य करते थे, इत्यादि इतिहास का संकलन करना हो सकता है तो स्नातक स्तर के विद्यार्थी ग्रामीण स्तर के इतिहास संकलनकर्त्ता के रूप में अपनी भूमिका देकर जीविका उपार्जन कर सकते है।
3. **स्थानीय धार्मिक व ऐतिहासिक स्थलों का इतिहास लिखना**– गांव में नगर के स्थानीय धार्मिक स्थल जैसे मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, कब्रिस्तान खण्डहर आदि के बारे में स्थानीय लोगों से पूछ कर या किसी बुजुर्ग से जानकारी लेकर इतिहास लिखना, गाँव के बावड़ी, तालाब, भवन आदि पुरास्थलों की जानकारी लेना सीखना; जिससे विद्यार्थी इतिहास लेखन संबंधी निपुणता प्राप्त कर सकेंगे तथा भविष्य में इस जानकारी का उपयोग जीविका कमाने में सकेंगे।
4. **अपने क्षेत्र में धार्मिक एंव ऐतिहासिक स्थानों पर यात्रियों की योजना व्यवस्था करना**– हमारे देश में लगभग ग्रामीण क्षेत्र में धार्मिक मेले इत्यादि लगते रहते हैं जिसका प्राचीनकाल से ही विशेष महत्व रहा है। इन धार्मिक स्थलों पर यात्री आते रहते हैं। उनके रहने ठहरने की विशेष व्यवस्था के प्रंबधन की जानकारी व्यावहारिक तौर पर प्राध्यापकों द्वारा सिखाना ताकि वे व्यवस्थापक के रूप में इस व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग स्वाबलम्बी बनने में कर सके।
5. **कम प्रचलित व्यक्तियों की जीवनियाँ लिखना–** हमारे समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जिन्हें अक्सर हम नजरअंदाज करते हैं जैसे गांव के भूतपूर्व सैनिक, स्वतंत्रता सेनानी, खिलाड़ी, अध्यापक भूतपूर्व विधायक, सरपंच आदि की जीवनी या उनके परिवार से प्राप्त करके लिखी जा सकती है। यदि प्राध्यापकों द्वारा लेखन में रूचि रखने वाले छात्रों के अंदर लेखक बनने संबंधी गुणों को विकसित कर दिया जाए तो वे एक जीवनी लेखक के रूप में भी आजीविका अर्जन का कार्य कर सकते है।
6. **अपने क्षेत्र के इतिहास को लेकर वीडियो बनाकर यू–टयूब चैनल चलाना –** गांव में नगर के विभिन्न प्रकार के विषयों से संबंधित इतिहास की जानकारी लेकर उसके वीडियो बनाकर सोशल मीडिया में यू–टयूब में डाउनलोड कर चैनल चला सकते है। गांव के भौगोलिक स्वरूप की फोटो वीडियो अपलोड करके उसके बारे में विस्तार से जानकारी बता सकते हैं। गांव के मौजूदा लोगों द्वारा जानकारी इकट्ठे कर करके इतिहास लिखा जा सकता है। उनके वंशज या वंशावली बनाई जा सकती है, इसकी जानकारी सोशल मीडिया पर डाली जा सकती है, जिससे यू–टयूब चैनल व समाचार चैनल चलाए जा सकते हैं ऐसी जानकारी का व्यावहारिक ज्ञान आय कमाने का माध्यम बन रहा है।

7. **स्थानीय मेलों में धार्मिक कार्यक्रमों का प्रबंधन करना–** गांवों में स्थानीय मेले लगते रहते हैं। इन मेलों में काफी संख्या में यात्री आते है। उनकी ठहरने, चाय–पानी, दुकानों, भजन–कीर्तन, झूले, कुश्ती आदि कार्यक्रमों की व्यवस्था और विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करना सीखना। इन सभी कार्यक्रमों का ठीक प्रकार से प्रबंधन करने के लिए अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता होती है। अतः प्राध्यापकों द्वारा कक्षा में विद्यार्थियों को एक प्रबंधक के गुणों का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाना चाहिए जिससे वे भविष्य में प्रबंधक के रूप में आय कमाने में सक्षम बन सके।
8. **जातियों, गोत्रों, कुनबो गौरव बिंदु को ढूंढकर उनका इतिहास लिखना व वीडियों बनाना –** हमारे देश के गांव व नगरों में विभिन्न जातियों, गोत्रों एवं कुनबों के लोग रहते हैं। उन बिंदुओं को ढूंढकर लिखना कि कौन–कौन सी जातियों व कुनबों के लोग रहते हैं, उनके गोत्र क्या है ? इससे गांवों के इतिहास का पता चलता है। इन सब जानकारियों को लिखा जा सकता है। उनका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया में डाला जा सकता है जिससे प्राचीन सामाजिक व्यवस्था को पुर्नजीवित करने के साथ–साथ विद्यार्थी को सोशल मीडिया में जीविका अर्जन करने हेतु प्रेरित किया जा सकता है।
9. **कुलदेवी एवं जठेड़ा प्रथाओं को जागृत कर समाज में प्रचलित करना–**हमारे देश के गांवों में प्राचीन प्रथाओं जैसे कुआँ पूजन, कुलदेवी व जठेड़ा जैसी प्रथाओं को समाचार पत्र सोशल मीडिया आदि पर चलाना जिससे समाज को पुराने रीति–रिवाज से अवगत करवाया जा सकता है। हमारे देश की प्राचीन संस्कृति धरोहर को पुनः जागृत किया जा सकता है। प्राचीन सभ्यता व संस्कृति के व्यावहारिक ज्ञान के तथ्यों को एकत्रित करना सिखाना ताकि भविष्य में इस ज्ञान का उपयोग वे आय कमाने में कर सके।
10. **समाचार–पत्रों चैनलों व समाचार पोर्टल के लिए इतिहास से संबंधित समाचार विश्लेषण लिखना और वीडियो बनाना–** जनमानस के सहयोग से जातियों, गोत्रों का इतिहास का संकलन किया जा सकता है। स्थानीय धार्मिक ऐतिहासिक स्थलों का इतिहास गांव व छोटे नगरों के कम प्रचलित व्यक्तियों की जीवनियों के द्वारा प्राप्त करना; प्राध्यापकों की मदद से इतिहास संबंधी तथ्यों को एकत्रित करना सीखना तथा समाचार पत्रों में लेख लिखकर व यू–टयुब पर वीडियों डालकर विद्यार्थी आय कमाने में सक्षम बन सकता है।

कंप्यूटर

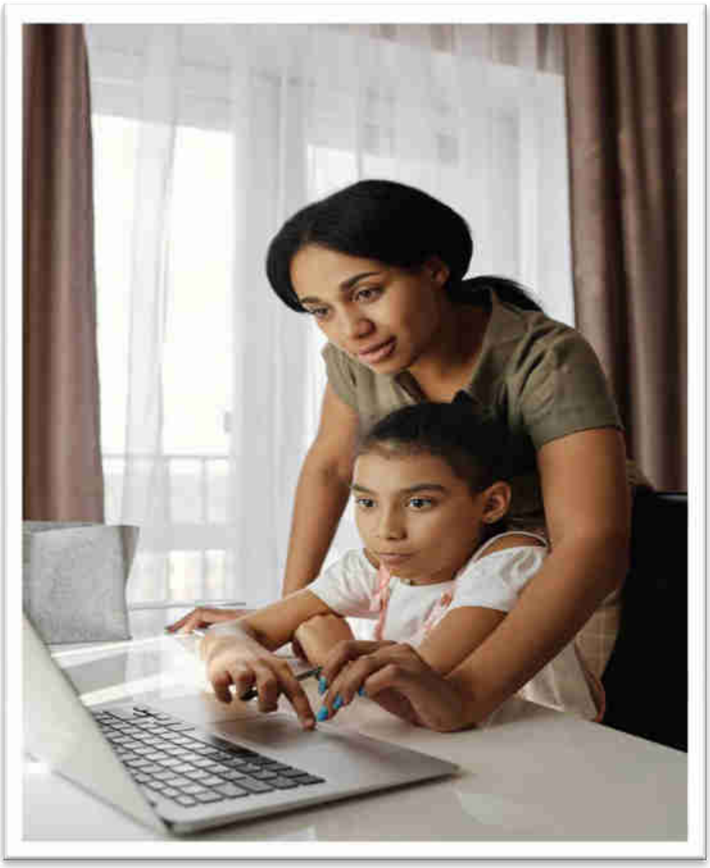

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	कंप्यूटर पर अंग्रेजी में कार्य करने की दक्षता।
2.	कंप्यूटर पर अंग्रेजी में प्रकाशन योग्य सामग्री तैयार करने की दक्षता।
3.	अंग्रेजी में बोले गए शब्दों को कंप्यूटर पर टंकण करने की दक्षता।
4.	कार्यालयों में अंग्रेजी में पत्राचार व टिप्पणी लिखने की दक्षता।
5.	नई एप बनाने की दक्षता।
6.	पाईथन, जावा स्क्रीप्ट आदि में दक्षता।
7.	डाटा को इन्फोग्राफिक्स के रूप में प्रस्तुत करने की कला।
8.	ई–कॉमर्स का अपना कार्य करना।
9.	वीडियों एडिटिंग में कार्य दक्षता।
10.	लघु उद्योगों एंव छोटे व्यापारियों के कार्य को कंप्यूटरीकृत करना और ऑनलाईन करने की सेवा का व्यापार।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **कंप्यूटर पर अंग्रेजी में कार्य करने की दक्षता –** वर्तमान समय में समाज के हर क्षेत्र में कंप्यूटर का बोलबाला है। सभी कार्यालयों व दफ्तरों में सब प्रकार का कार्य कंप्यूटर द्वारा हो रहा है। शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में यदि प्राध्यापकों द्वारा विषय को रूचिकर बनाने में कंप्यूटर का समावेश कर दिया जाए तो विद्यार्थी न केवल विषय को ठीक से समझ पाएगा व रूचिपूर्वक विषय को सीखेगा व समझेगा भी। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि वह छात्रों को टाइपिंग की दोनों भाषाओं में सक्षम बनाएँ, क्योंकि दैनिक जीवन में दोनों भाषाओं का प्रयोग व्यापक स्तर हो रहा है। अतः विद्यार्थी कंप्यूटर पर अंग्रेंजी टाइपिंग में दक्षता प्राप्त कर भी जीविकोपार्जन का कार्य कर सकते है।
2. **कंप्यूटर पर अंग्रेजी में प्रकाशन योग्य सामग्री तैयार करने की दक्षता–** वर्तमान समय में समाज में प्रचलित पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों स्तम्भ लेखकों व ब्लॉग के माध्यम से प्रकाशन योग्य सामग्री तैयार करने का अभ्यास करवाकार भी प्राध्यापक विद्यार्थियों को जीविकोपार्जन में सहायता कर सकते है।
3. **अंग्रेजी में बोले गए शब्दों को कंप्यूटर पर टंकण करने की दक्षता–** विभागों, निगमों की बैठक के तुरंत बाद उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों की बैठक के विवरण की प्रतिलिपि उपलब्ध हो सके। इस हेतु प्राध्यापकों को चाहिए कि प्रचलित Software Voice to Text का अभ्यास करवायें। इसके माध्यम से विद्यार्थी बहुत कम समय में बैठक के परिशुद्ध विवरण की प्रतिलिपि सभी को उपलब्ध करवा सकते है। प्राध्यापक विद्यार्थियों को शुद्ध टंकण हेतु ऑनलाईन सॉफ्टवेयर की भी जानकारी अवश्य प्रदान करें।
4. **कार्यालयों में अंग्रेजी में पत्राचार व टिप्पणी लिखने की दक्षता–** प्राध्यापकों को कंप्यूटर विषय से स्नातक की डिग्री प्राप्त विद्यार्थियों को, कार्यालयों व समाचार पत्रों में छपने वाली विभिन्न खबरों व लेखों पर टिप्पणी लिखने हेतु सक्षम बनाना चाहिए। प्राध्यापकों को चाहिए कि वे टिप्पणी हेतु उपयुक्त शब्दावली व कंप्यूटर पर उपलब्ध विभिन्न सॉफ्टवेयरों की उपयुक्त जानकारी ज्ञान दें ताकि विद्यार्थी इन प्रविधियों व सॉफ्टवेयरों का उपयोग व विभिन्न भाषाओं की टिप्पणी करना सीखकर आजीविका कमा सके।
5. **नई एप बनाने की दक्षता–** प्राध्यापकों को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को नई तकनीक का प्रयोग करने वाले सॉफ्टवेयरों और सी.एम.एस. का छात्रों का अभ्यास करवाकर नई एप बनाने के लिए प्रेरित करें। प्रत्येक विद्यार्थी को कोई न कोई विषय प्रदान कर एप बनाने के लिए अभ्यास करवाएँ Android, Mobility आदि। ताकि इन सॉफ्टवेयरों के द्वारा भी विद्यार्थी अनेक विषयों पर Android एप बना सके। विद्यार्थी अपने विषय से संबंधित आकर्षक नोटस को भी एप में बनाकर कहीं भी उन्हें ऑन लाईन देख व पढ़ सकता है। इस तरह से भी वे भविष्य में आजीविका अर्जन का कार्य कर सकते है।
6. **पाईथन, जावा स्क्रीप्ट आदि में दक्षता–**कंप्यूटर में सभी प्रोग्राम कंप्यूटर की विधियों के निश्चित अभ्यास से, कंप्यूटर भाषा के द्वारा ही बनाए जाते है। कंप्यूटर की विभिन्न भाषाएं जैसे पाईथन, जावा स्क्रीप्ट आदि भाषाओं का अभ्यास व ज्ञान सीखकर विद्यार्थी किसी भी सॉफ्टवेयर व एप्लीकेशन का निर्माण कर सकते है। कंप्यूटर की प्रमुख भाषा में C, C++, Java, Pascal, Cobol and Pythen इत्यादि है। प्राध्यापकों को चाहिए कि इन सभी भाषाओं की प्रारंभिक ट्रेनिंग देकर

विद्यार्थियों को सॉफ्टवेयर बनाने की दक्षता में निपुण करें ताकि वे इन भाषाओं के माध्यम से कोई भी काम कर जीविका कमा सके।

7. **डाटा को इन्फोग्राफिक्स के रूप में प्रस्तुत करने की कला–** वर्तमान समय में बैठकों, सेमिनारों को रूचिकर व क्रमबद्ध बनाने हेतु इन्फोग्राफिक्स का प्रयोग बृहद स्तर पर चल रहा है। उपलब्ध डाटा को Flowchart, Bar Diagram, Pie Diagram, Photos or Videos इत्यादि के माध्यम से प्रस्तुत करके विद्यार्थी को जीविकोपार्जन करने में सक्षम बनाया जा सकता है। अतः प्राध्यापकों को कक्षा में इस सभी कार्यों का अभ्यास कक्षा में करवाना चाहिए ताकि वे इन सब कार्यों में निपुण बन सके।
8. **ई–कॉमर्स का अपना कार्य करना–** इलैक्ट्रॉनिक कॉमर्स एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा उत्पादक और उपभोक्ता इलैक्ट्रॉनिक माध्यम से माल और सेवाएं बेचते व खरीदते है। विद्यार्थी ई–कॉमर्स की सहायता से, अपने मूल स्थान पर ही उत्पादकों से संपर्क करके उत्पादित माल को अपने ई–कॉमर्स प्लेटफार्म द्वारा देश व विदेश में बेच सकते है। विद्यार्थी B2C, B2B, C2C या C2B (Computer to Business) किसी भी प्रकार के ई–कॉमर्स साधन का प्रयोग जीविकोपार्जन हेतु कर सकता है।
9. **वीडियों एडिटिंग में कार्य दक्षता–** समाज में वीडियों एडिटिंग की विधियों का प्रचलन व्यापक स्तर पर हो रहा है। वीडियों एडिटिंग तकनीक द्वारा विद्यार्थी सेल्फ डिस्क्रीप्ट वीडियों बनाकर शिक्षा, व्यवसाय व जानकारी का प्रसार समाज में बड़े स्तर पर कर सकता है। विवाह, विज्ञापन की वीडियों एडिटिंग द्वारा भी विद्यार्थी जीविका अर्जन कर सकता है। प्राध्यापकों को इस बिन्दु से संबंधित टूल की अधिक से अधिक जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान करनी चाहिए ताकि भविष्य में वह इन विधियों का प्रयोग कर जीविका कमाने में सक्षम बन सके।
10. **लघु उद्योगों एंव छोटे व्यापारियों के कार्य करने कंप्यूटरीकृत करना और ऑनलाईन करने की सेवा का व्यापार–** विद्यार्थी व्यक्तिगत स्तर पर छोटे व्यापारियों व उद्योगों के कार्य भी ऑनलाईन व कंप्यूटरीकृत करके उन्हें व्यवस्थित कर सकते है। इस कार्य के बदले में उद्योगपतियों द्वारा प्राप्त मानदेय से विद्यार्थी अपनी जीविका अर्जन कर सकता है। Accounting Software जैसे Tally इत्यादि की सहायता से व्यापार का अभ्यास जैसे पूर्णतः लेखा–जोखा व डाटा को कंप्यूटरीकृत करने का अभ्यास सीखना। इन सभी विधियों का अभ्यास सीखकर विद्यार्थी भविष्य में जीविका कमाने में सक्षम बन सकता है।

खेल एवं शारीरिक शिक्षा

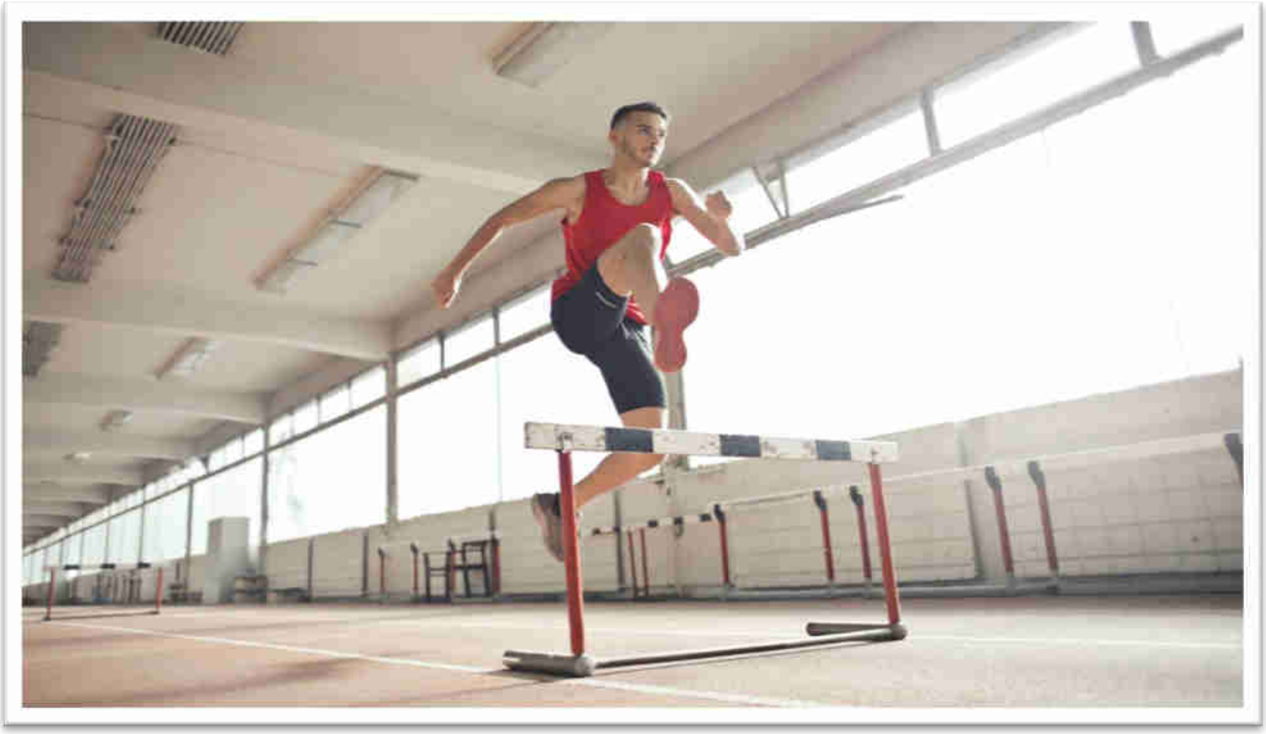

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	फिटनेस प्रशिक्षक का फ्री–लांस कार्य करना।
2.	अपना फिटनेस केंद्र स्थापित करना।
3.	किन्हीं एक या दो खेलों के कोच के रूप में स्वतंत्र कार्य करना।
4.	खेलों और फिटनेस के लिए प्रयोग में आने वाले उपकरणों आदि का व्यापार।
5.	वजन कम करने के विशेषज्ञ के रूप में कार्य करना।
6.	बीमार व बुर्जुगों को उनके निवास पर व्यायाम व योग आदि करवाना।
7.	खेल प्रतियोगिताओं के टूर्नामेंट गतिविधियों का प्रबंधन करना।
8.	योग प्रशिक्षक बनना।
9.	प्रतिस्पर्धाओं के लिए शारीरिक तैयारी करवाना।
10.	समाचार पत्रों, चैनलों व पोर्टलों के लिए खेल, फिटनेस, योग आदि के समाचार स्वयं विश्लेषण लिखना।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **फिटनेस प्रशिक्षक का फ्री–लांस कार्य करना**–आजीविका हेतु शारीरिक शिक्षा में स्नातक के बाद कैरियर के बहुत अवसर है। वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति फिट व स्वस्थ रहना चाहता है लेकिन आजकल मार्किट में हर नुक्कड़ या गली में जिम खोले गए है लेकिन उनमें योगा व व्यायाम करवाने वाले लोग प्रशिक्षक नहीं होते है। योगा से स्नातक की डिग्री प्राप्त विद्यार्थी यदि जिम सेंटर जाकर व्यावहारिक तौर पर वहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कर लें तो वह फिटनेस सेंटर में प्रशिक्षक के रूप में आजीविका कमा सकता है।
2. **अपना फिटनेस केन्द्र स्थापित करना**–वर्तमान जीवन में प्रत्येक मनुष्य स्वस्थ रहने हेतु कोई योगा या फिटनेस सेंटर में जाकर योगा व व्यायाम करने लगा है ताकि वह स्वयं को स्वस्थ रख बीमारियों से मुक्त कर सके। पंरतु वह ऐसे ही फिटनेस केंद्र में जाना पसन्द करता है जहाँ पर प्रशिक्षित पेशे पर ट्रेनर हो, जिसकी सहायता से वह ठीक व उचित प्रकार से व्यायाम कर सके। यदि स्नातक स्तर के विद्यार्थी ने विद्यालय या महाविद्यालय स्तर पर योग का अभ्यास किया है व योग कार्यक्रर्मों में भाग लेकर, योगा व कोडियों की जानकारी योगा प्राध्यापकों की मद्द से सीखली है तो वह थोड़ा सा पूंजी निवेश कर अपना फिटनेस केंद्र स्थापित कर सकता है और आजीविका कमाने में सफल हो सकता है।
3. **किन्हीं एक या दो खेलों के कोच के रूप में स्वतंत्र कार्य करना**– शारीरिक शिक्षा विषय से स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र को यदि कक्षा में प्राध्यापकों द्वारा एक या दो खेल, जिनकी छात्रों में रूचि है। उनकी रूचिनुसार यदि प्राध्यापक उनकों व्यावहारिक तौर पर एक या दो खेलों की सैद्धांतिक व व्यावहारिक शिक्षा का ज्ञान देकर प्रशिक्षित कर दें तो इस प्रशिक्षण का लाभ वह भविष्य में स्वतंत्र कोच के रूप में जीविका अर्जन करने में कर सकता है।
4. **खेलों और फिटनेस के लिए प्रयोगों में आने वाले उपकरणों आदि का व्यापार**– शारीरिक शिक्षा का छात्र विद्यालय या महाविद्यालय स्तर पर पढ़ाई के साथ–साथ अगर फिटनेस के लिए उपयोग में आने वाले उपकरणों व खेल किट जोकि शारीरिक फिटनेस व मनोरंजन हेतु उपयोग में लायी जाती है। यदि प्राध्यापक कक्षा में छात्रों को इन सभी उपयोग में आने वाले उपकरणों व खेल किटों का व्यावहारिक ज्ञान व जानकारी दे देगा तो भविष्य में इन उपकरणों संबंधी अच्छी जानकारी का उपयोग विभिन्न स्पोर्टस गुडस मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों जैसे शिवा–नरेश, दीपा–स्पोर्टस, वैम्पायर, फ्लैश, कोस्को एडिडास, रीकाके के मार्केटिंग अधिकारियों के रूप या स्वयं के व्यापार करने में इस जानकारी का उपयोग कर जीविका कमा सकता है। खेल उपकरणों का विनिर्माण स्पोटिंग व एथलेटिक सामानों का विनिर्माण भारत के सबसे बड़े उद्योगों में से एक है। खेल उपकरण उद्योग में क्रिकेट बैट, गेंद, सुरक्षा उपकरण, हॉकी स्टिक, फुटबॉल, हैंडबाल आदि उपकरणों का किसी एजेंसी से संपर्क कर व्यापार के रूप में आजीविका अर्जन का कार्य किया जा सकता है।
5. **वजन कम करने के विशेषज्ञ के रूप में कार्य करना**–वर्तमान समय में वजन बढ़ने की समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। प्रत्येक कोई व्यक्ति सुन्दर स्वस्थ व फिट दिखना चाहता है। इसी फिटनेस को पाने के लिए वह जिम सेंटर व योगा सेंटर में जाकर व्यायाम, कार्डियों ऍरोबिक्स व आहार योजना आदि नियमों का ध्यान रखकर वजन कम करने की कोशिश करता है। यदि प्राध्यापकों द्वारा शारीरिक शिक्षा के छात्रों को सभी तरह के वजन कम

करने संबंधी प्रविधियों का ज्ञान अभ्यास द्वारा सिखा दिया जाए तो वह जिम सेंटर व योगा सेंटर में वजन कम करने वाले विशेषज्ञ अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएँ देकर जीविका अर्जन का कार्य कर सकता है।

6. **बीमार व बुर्जुगों को उनके निवास पर व्यायाम व योग आदि करवाना**—यदि शारीरिक शिक्षा से स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र को व्यायाम व योगा करने व करवाने की पूरी समझ व ज्ञान है तो वह इस ज्ञान का उपयोग वरिष्ठ बुजुर्ग लोगों के निवास स्थल पर जाकर उनकी बीमारियों के हिसाब से योगा करवाने में मद्द कर सकता है। प्राध्यापकों को चाहिए कि शारीरिक शिक्षा की व्यावहारिक कक्षाओं में उन्हें सब प्रकार के व्यायाम व योगा व्यायाम में निपुण बनाया जाए ताकि वे इस जानकारी व ज्ञान का उपयोग योगा प्रशिक्षक के रूप में जीविका कमाने में कर सके।
7. **खेल प्रतियोगिताओं के टूर्नामेंट इंवेट को मैनेज करना** —विद्यालय या महाविद्यालय स्तर पर सरकार द्वारा व अन्य संस्थाओं के द्वारा बहुत—सी खेल प्रतियोगिताओं के टूर्नामेंट आयोजित किए जाते है। वर्ष भर में अलग—2 खेलों से संबंधित टूर्नामेंट का आयोजन होता रहता है। इन टूर्नामेंटों की सभी गतिविधियों का प्रबंधन सीखना भी एक कला है। इन टूर्नामेंट कार्यक्रमों में बड़े पैमाने पर सभी गतिविधियों में काम करने वाले अधिकारियों व सहायकों की आवश्यकता होती है। यदि स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र को महाविद्यालय या विद्यालय में प्राध्यापकों द्वारा इस सभी कार्यक्रमों के प्रबंधन का कार्य सिखा दिया जाए तो वे अपनी योग्यता व निपुणता के आधार पर टूर्नामेंटों में सहायक या प्रबंधक अधिकारी के रूप में कार्य कर जीविका कमा सकते है।
8. **योग प्रशिक्षक बनना—** शारीरिक शिक्षा विषय से स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र योग प्रशिक्षक बनकर भी जीविका अर्जन का कार्य कर सकता है। यदि प्राध्यापकों द्वारा कक्षा में योगा की कक्षाओं में योग संबंधी सभी नियमों, व प्रविधियों के व्यावहारिक ज्ञान की समझ छात्रों के अन्दर विकसित कर दी जाए तो छात्र बड़े—बड़े योगा सेंटरों में योग प्रशिक्षक के रूप में जीविका कमाने में सफल हो सकते है।
9. **प्रतिस्पर्धाओं के लिए शारीरिक तैयारी करवाना—** विद्यालय या महाविद्यालय स्तर पर खेलों संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन वर्ष भर में स्थानीय जिला व राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर होता रहता है और इन खेल संबंधी प्रतियोगिताओं में विद्यालय व महाविद्यालय के अलावा स्वतंत्र रूप से खेल विशेष की तैयारी करने वाले विभिन्न प्रतिभागी भाग लेते है। सभी में प्रतिस्पर्धा होती है कि हमारे विद्यालय या महाविद्यालय की टीम राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर जीत हासिल करें। परंतु इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों में न केवल खेल खेलने की निपुणता का ज्ञान व कौशल का होना अनिवार्य है अपितु उनके अन्दर शारीरिक दृष्टि से भी तंदुरूस्ती व मजबूती का होना अनिवार्य है। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि शारीरिक शिक्षा विषय प्राप्त छात्र को प्रतिदिन खेल समयावधि के समय शारीरिक तैयारी का अभ्यास करवाने का उचित ज्ञान व प्रशिक्षण भी प्रदान करें ताकि वह स्वयं भी भविष्य में खिलाड़ियों को प्रतिस्पर्धा प्रतियोगिताओं के लिए प्रशिक्षक बन प्रशिक्षण देकर तैयार कर सके।
10. **समाचार पत्रों, चैनलों व पोर्टलों के लिए खेल, फिटनेस, योग आदि के समाचार स्वयं विश्लेषण लिखना—** वर्तमान समय में खेल जगत का बड़ा बोलबाला है। खेल जगत में बहुत से खिलाड़ी

अपनी पहचान एवमं वर्चस्व स्थापित किए हुए है और समाचार पत्रों में भी विशेष तौर पर खेलों व खिलाड़ियों से संबंधित पेज होता है जिसमें खेल जगत की सभी जानकारी होती है व पोर्टलों से संबंधित, योग से संबंधित विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ आजकल बाजार में उपलब्ध है। शारीरिक शिक्षा से प्राप्त डिग्री छात्र को यदि खेलों संबंधी ज्ञान व फिटनेस संबंधी, आहार योजना संबंधी विभिन्न जानकारियों का उचित ज्ञान है तो वह समाचार पत्रों, व विभिन्न योगा व फिटनेस संबंधी पत्रिकाओं में लेख लिखकर वक्ता/ लेखक के रूप में जीविका अर्जन कर सकता है।

गणित

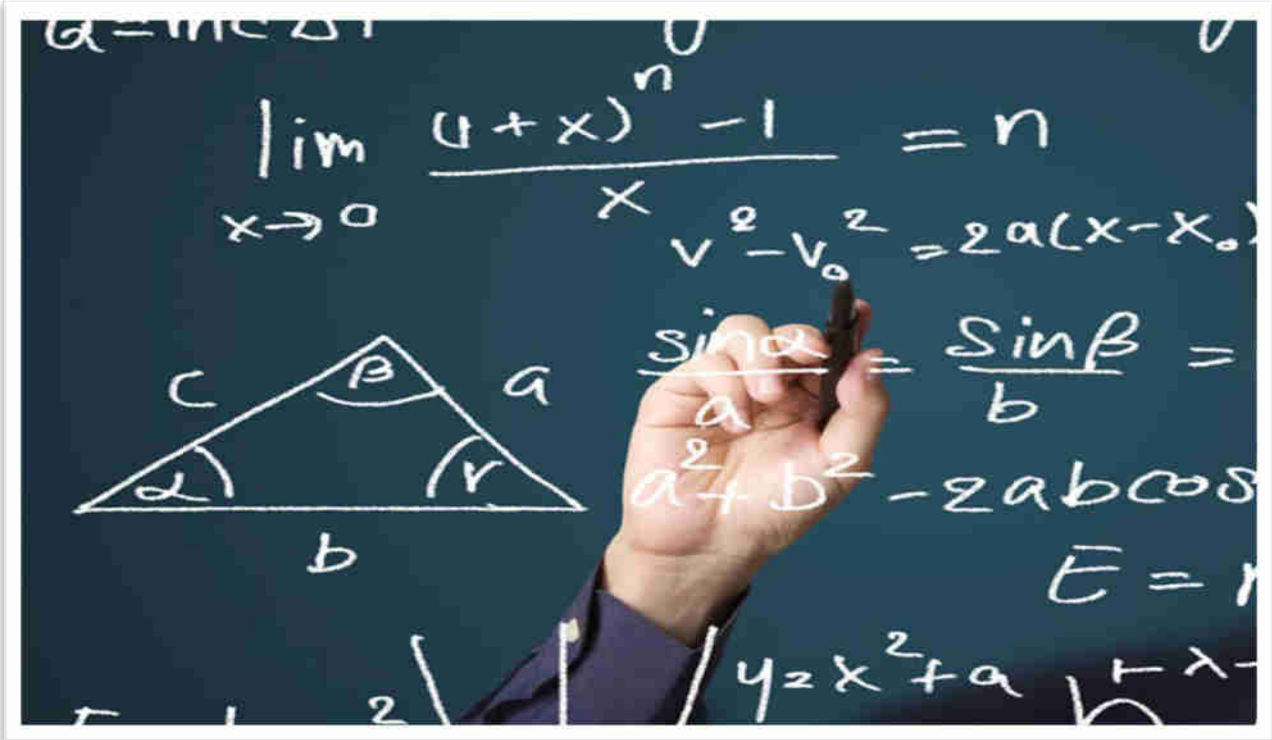

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	गणित एवं तर्क आधारित पहेलियों और खेलों का निर्माण विशेषज्ञ।
2.	प्रतियोगी परीक्षाओं में लॉजिक प्रश्नों व पुस्तकों का प्रशिक्षक।
3.	डाटा को इन्फोग्राफिक्स के रूप में प्रस्तुत करने की कला।
4.	डाटा के विश्लेषण करने की दक्षता।
5.	डाटा के आधार पर पूर्वानुमान और भविष्य में अनुमान लगाने की कला।
6.	नई एप बनाने की दक्षता।
7.	पाइथन, जावा स्क्रिप्ट आदि में दक्षता।
8.	गणित के स्वतंत्र ट्यूटर के रूप में।
9.	गणित के कोचिंग सेंटर का स्वरोजगार।
10.	समाचारों, चैनलों एवं पोर्टलों पर गणित विज्ञान संबंधी लेखन विश्लेषण आदि।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **गणित एवं तर्क आधारित पहेलियों और खेल–निर्माण विशेषज्ञ–** गणित विषय के विभिन्न अंगों जैसे अंकगणित, बीजगणित, ज्योमीति, त्रिकोणमीति, समाकलन व अवकलन आदि सभी भागों के अध्ययन में छात्र की किसी विशेष विषय में रूचि व पकड़ अच्छी होती है। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि वे छात्रों की रूचि व समझ के आधार पर उनमें तर्क आधारित पहेलियों के निर्माण की दक्षता का विकास करें, ताकि वे विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं तथा ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों को भी लिख कर आय कमा सके।
2. **प्रतियोगी परीक्षाओं में लॉजिक प्रश्नों पुस्तकों के प्रशिक्षक बनना–**उच्चकोटि की नौकरियों में गणित एवं मानसिक योग्यता के लॉजिक प्रश्नों के टेस्ट आयोजित किए जाते हैं। प्राध्यापकों को चाहिए कि वे स्नातक स्तर के विद्यार्थी को गणित विषय के अंतर्गत इस प्रकार के प्रश्नों को देकर अभ्यास करवाएं ताकि वे अभ्यास से स्वयं भी प्रश्नों को हल करने के साथ–साथ नए प्रश्नों के निर्माण में प्रशिक्षित हो सके।
3. **डाटा को इन्फोग्राफिक्स के रूप में प्रस्तुत करने की कला–**उच्चकोटि की कंपनियों में अधिकांश डाटा का प्रस्तुतीकरण इन्फोग्राफिक्स के रूप में किया जाता है। अतः प्राध्यापकों की मद्द से महाविद्यालयों में छात्रों को डाटा का प्रस्तुतीकरण ग्राफिक्स के रूप में बनाना सिखाया जाना चाहिए व इसका अभ्यास अनिवार्य है। ताकि वे इस कार्य में प्रशिक्षित होकर कंपनियों में डाटा प्रस्तुतीकरण की सेवाएं देकर स्वावलम्बी बन सके।
4. **डाटा को विश्लेषण करने की दक्षता–**यदि विद्यालय या महाविद्यालय में छात्र गणित विषय के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के डाटा को प्राध्यापकों की मदद से विश्लेषण करना सीख लेगा तो वह भविष्य में डाटा एनालिसिस के रूप में जीविकोपार्जन कर सकता है।
5. **डाटा के आधार पर पूर्वानुमान और भविष्य में अनुमान लगाने की कला–**विभिन्न कंपनियां व संस्थाएं उपलब्ध डाटा के आधार अपने उत्पादों का पूर्वानुमान लगाकर भविष्य संबंधी योजनाएँ तैयार करती है। अतः प्राध्यापकों को कक्षा में छात्रों के अन्दर ऐसी कुशलता व दक्षता का विकास करना चाहिए ताकि भविष्य में इस कार्य में दक्षता हासिल कर अपने आय के स्त्रोत प्राप्त कर सके।
6. **नई एप बनाने की दक्षता–** गणित विषय में बाईनरी पद्धति से कंप्यूटर की सब भाषाएं विकसित की गई है। इन्हीं से पाइथन, जावा स्क्रिप्ट एप्लीकेशन इत्यादि के गहन अध्ययन से कक्षा में प्राध्यापकों की मदद से वह नई एप बनाने में कुशलता हासिल कर सकता है तथा प्राध्यापकों को चाहिए कि वे इस तरह के अभ्यास कार्य कक्षा में करवाकर छात्रों को दक्ष बनाए, ताकि भविष्य में छात्र नई एप बनाने के कार्य से रॉयल्टी प्राप्त कर जीविकोपार्जन कर सके।
7. **पाइथन, जावा स्क्रिप्ट आदि में दक्षता–**वर्तमान युग कंप्यूटर का युग है और बड़ी–बड़ी फैक्टरियों, संस्थाओं व कंपनियों में डाटा प्रबंधनों का अधिकांश कार्य कंप्यूटर की विभिन्न एपों तथा भाषाओं जैसे पाइथन, जावा स्क्रिप्ट के सॉफ्टवेयर बनाकर किया जाता है। यदि कक्षा में प्राध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को कंप्यूटर की विभिन्न भाषाओं के साथ–2 सॉफ्टवेयर बनाने का ज्ञान दे दिया जाए तो वह इस क्षेत्र में जीविका अर्जन कर सकते हैं।
8. **गणित के स्वतंत्र टयूटर के रूप में–**गणित एक ऐसा विषय है जोकि वर्तमान में प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने हेतु उपयोग में आता है। प्रत्येक प्रतियोगी परीक्षा में गणित

के विभिन्न भागों से संबंधित लॉजिक, तर्क आधारित, सामान्य योग्यता आधारित विभिन्न तरह के 25 या 30 अंक के प्रश्न आते है। प्राध्यापक अपने विवेक से गणित विषय में प्रतिभाशाली छात्र को गणित संबंधी विभिन्न विधियों व तकनीकों की जानकारी व व्यावहारिक ज्ञान देकर उसे विषय विशेष में और अधिक कुशल बना सकता है ताकि भविष्य में वह स्वतंत्र गणित टयूटर के रूप में जीविका अर्जन कर सके।

9. **गणित के कोचिंग सेंटर का स्वरोजगार–** प्रत्येक प्रतियोगी परीक्षा में गणित विषय के मानसिक योग्यता संबंधी प्रश्नों को शामिल किया जाता है। स्नातक स्तर पर यदि विद्यार्थी की गणित विषय में अच्छी पकड़ व रूचि है तो प्राध्यापकों को लगातार अभ्यास के द्वारा छात्रों को इस विषय में और अधिक कुशल व निपुण बनाया जाना चाहिए ताकि थोड़ी सी पूंजी निवेश के साथ वह कोचिंग सेंटर खोलकर स्वयं का व्यवसाय खड़ा कर सके।

10. **समाचारों, चैनलों एवं पोर्टलों पर गणित विज्ञान संबंधी लेखन विश्लेषण आदि–** स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र की यदि गणित विषय में अच्छी पकड़ व अच्छा ज्ञान है तो वह समाचार पत्रों में विषय विशेषज्ञ के रूप में लेख दे सकता है तथा चैनलों व पोर्टलों पर वक्ता/लेखक का कार्य भी कर सकता है और जीविका कमाने में सक्षम बन सकता है।

जनसंचार एवं पत्रकारिता

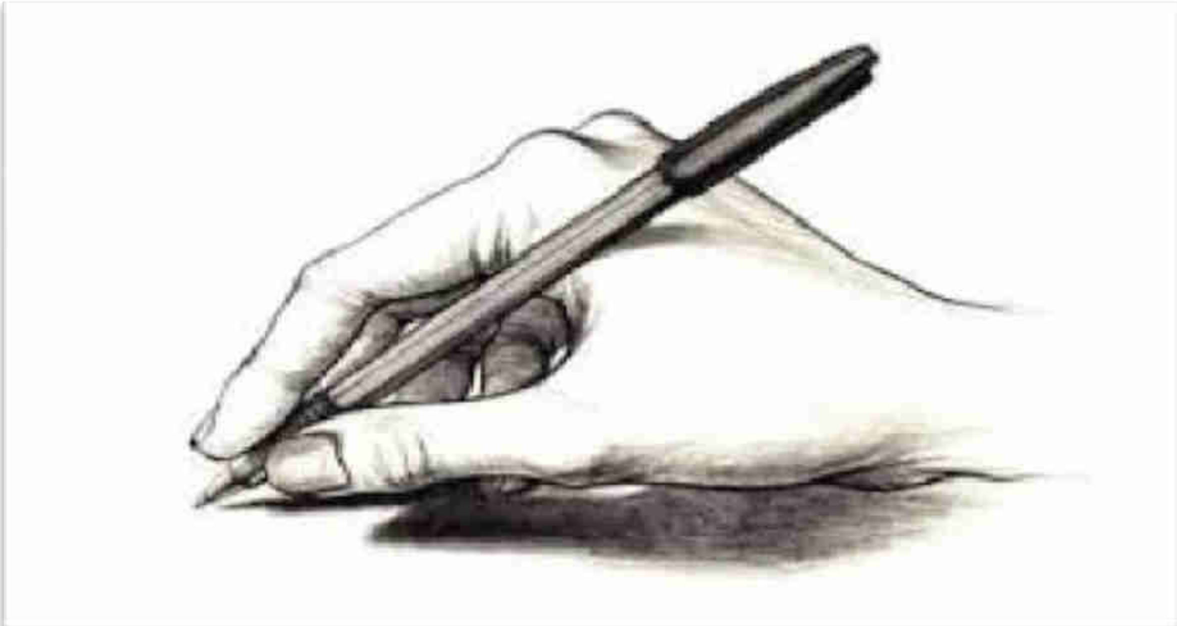

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	स्वतंत्र रूप से अपना समाचार पत्र या पत्रिका चलाने का व्यवसाय।
2.	समाचार पोर्टल चलाने का व्यवसाय।
3.	यू–ट्यूब चलाने का व्यवसाय।
4.	संभ्रात व्यक्तियों का सोशल मीडिया का लेखन एंव प्रबंधन।
5.	फ्रिलांस समाचार संवाददाता (मुद्रित एवं वीडियों) का व्यवसाय।
6.	संभ्रात व्यक्तियों का मीडिया सलाहकार या मीडिया प्रबंधक के कार्य की दक्षता।
7.	स्थानीय क्षेत्रीय व राष्ट्रीय मीडिया के लिए विज्ञापन संकलन का व्यवसाय।
8.	समाचार पत्र–पत्रिकाओं के वितरण का व्यवसाय।
9.	ब्लॉग लेखन का व्यवसाय।
10.	व्यक्तियों, संस्थानों व उत्पादकों की प्रसिद्धि के विशेषज्ञ का व्यवसाय।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **स्वतंत्र रूप से अपना समाचार पत्र या पत्रिका चलाने का व्यवसाय** – वर्तमान समय में सोशल मीडिया में जहाँ बड़ी–2 खबरों व पत्रिकाओं का बोलबाला है। वहीं पर लघु पत्र–पत्रिकाएँ भी विशिष्ट स्थान रखती है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्थानीय समाचारों व सूचनाओं को प्राप्त करना चाहता है। यदि जनसंचार व पत्रकारिता से डिप्लोमा डिग्री प्राप्त छात्रों को इन छोटे मीडिया समूहों के द्वारा निकलने वाले पत्र व पत्रिकाओं में लेख लिखने हेतु प्रेरित किया जाए या स्वयं के समाचार पत्र या पत्रिका का व्यवसाय चलाने हेतु उपयुक्त ज्ञान दिया जाए तो वे इस दिशा में कार्य कर भी स्वावलंबी बन सकते है।
2. **समाचार पोर्टल चलाने का व्यवसाय** – प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में स्मार्ट फोन आने से वह विभिन्न प्रकार का ज्ञान अर्जित करने हेतु उसे उपयोग करने लगा है। जैसे–जैसे सुविधाएं बढ़ रही है वैसे–वैसे ही जिज्ञासा भी बढ़ रही है। हर व्यक्ति अपने आस–पास के समाचारों को जानने के लिए सदैव उत्सुक रहता है। इसी उत्सुकता ने समाचार पोर्टल्स के कारोबार को जन्म दिया है। जनसंचार व पत्रकारिता से डिग्री प्राप्त छात्रों को, कक्षा में प्राध्यापकों द्वारा समाचार लिखने, लेख लिखने व समाचार पोर्टल्स पर अभ्यास द्वारा कार्य करना सिखाया जाना चाहिए ताकि वे इस माध्यम से भविष्य में आय के स्त्रोत प्राप्त कर सके।
3. **यू–ट्यूब चलाने का व्यवसाय** – यू–ट्यूब चैनल विज्ञापन का सुगम माध्यम बन चुका है। बड़ी संख्या में युवा अपने चैनल खोलकर विज्ञापन के माध्यम से धनार्जन कर रहे है। किसी विषय विशेष को लेकर यू–ट्यूब चैनल शुरू किया जा सकता है। वर्तमान में पेंटिंग, इंटरटेनमेंट, प्रतियोगी परीक्षाओं, धर्म, लोक संगीत आदि से संबंधित विषय काफी अच्छी आय का साधन बन चुके है। ये व्यवसाय बहुत छोटे निवेश से शुरू किया जा सकते है। प्रतिभा के प्रदर्शन का यह सशक्त माध्यम है और आय प्राप्ति का अच्छा स्त्रोत भी। अतः कक्षा में छात्रों को इस दिशा में कार्य हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।
4. **संभ्रात व्यक्तियों का सोशल मीडिया का लेखन एंव प्रबंधन** – फेसबुक पेज ट्विटर हैंडल व्यक्तियों और संगठन की छवि गढ़ने का प्रभावी माध्यम बन चुके है। राजनेता, बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठान, वैचारिक संगठन अपनी छवि गढ़ने के लिए सोशल मीडिया का सहारा ले रहे है। इतना ही नहीं अनेक धर्म गुरूओं के विचार को स्थापित करने के लिए उनके अनुयायी भी इस माध्यम का उपयोग कर रहे है। इन सभी कार्यों हेतु सोशल मीडिया में पारंगत युवाओं की आवश्यकता रहती है। इसके लिए वे खर्च करने के लिए भी तैयार रहते है। अतः युवा पीढ़ी अपनी लेखनी में निपुणता के आधार पर भी इस क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकती है।
5. **फ्रिलांस समाचार संवाददाता (मुद्रित एवं वीडियो) का व्यवसाय** – मीडिया समूह प्रतिस्पर्धा की दौड़ में है। उन्हें हर स्थान से पल–पल के समाचारों की आवश्यकता रहती है। उनकी इस आवश्यकता के कारण फ्रीलांस समाचारों का व्यवसाय विकसित हुआ है। अनेक छोटे कस्बों से लेकर महानगरों तक, मीडिया संस्थानों को फ्रीलांस संवाददाताओं की आवश्यकता है। इसके लिए वे संवाददाताओं को लेखन के आधार पर मानदेय देते है। बड़े और प्रतिष्ठित समूह संतोषजनक अदायगी करते है। अतः युवा पीढ़ी स्थानीय क्षेत्र की खबरों, सूचनाओं व रिपोर्टों को इन मीडिया समूहों तक मुद्रित एवं वीडियो रूप में पहुँचाकर आय प्राप्त कर सकती है।

6. **संभ्रात व्यक्तियों का मीडिया सलाहकार या मीडिया प्रबंधक के कार्य की दक्षता –** नेताओं, विचारकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, व्यवसायियों को लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए मीडिया की आवश्यकता रहती है। इनमें से अधिकतर व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र मे ंतो पारंगत होते है, लेकिन मीडिया में अपनी बात रखने की दक्षता उनके पास नहीं रहती है। इसलिए मीडिया प्रबंधन एक बडा व्यवसाय बनता जा रहा है। कौन सा पक्ष मीडिया में लाया जा सकता है और किस तथ्य से अनावश्यक दिशाभ्रम हो सकता है? कुशल मीडिया सलाहकार ही इस प्रकार की योजना बना सकता है। अतः जनसंचार व पत्रकारिता पढ़ने वाले छात्रों के अन्दर इस प्रकार के गुण व समझ विकसित कर उन्हें कुशल मीडिया सलाहकार के रूप अपनी सेवाएँ देने हेतु प्रेरित किया जा सकता है।
7. **स्थानीय क्षेत्रीय व राष्ट्रीय मीडिया के लिए विज्ञापन संकलन का व्यवसाय –** सभी मीडिया संस्थानों की आय का प्रमुख माध्यम विज्ञापन है। अधिकतर मीडिया संस्थान इस कार्य के लिए सभी स्थानों पर वैतनिक कर्मचारी नहीं रख सकते। इसकी बजाय वे विज्ञापनों के संग्रहण के लिए अंशधारक प्रतिनिधि रखते है। इन प्रतिनिधियों को वे विज्ञापन राशि का एक निश्चित प्रतिशत देते है। वर्तमान में मीडिया संस्थान 15 से 20 प्रतिशत तक राशि अपने अंशधारक प्रतिनिधियों को देते है। अतः विज्ञापनों के माध्यम से आय प्राप्त करना भी एक बेहतरीन विकल्प है।
8. **समाचार पत्र–पत्रिकाओं के वितरण का व्यवसाय –** संपादक समाचार पत्र बांटने वाले वितरकों को 10 से 20 पैसे प्रति समाचार पत्र वितरण के लिए देता है। इस प्रकार वितरकों की यह आय महीने में हजारों रूपयों में हो जाती है। अनेक पत्रिकाओं को वितरण के लिए स्थान–2 पर इस प्रकार के वितरकों की आवश्यकता रहती है। यह ऐसा कार्य है, जिसके साथ व्यक्ति अन्य कोई भी व्यवसाय या नौकरी कर सकता है। यह काम साप्ताहिक या दैनिक स्तर पर भी किया जा सकता है। अनेक लोगों ने इसे आजीविका के मुख्य व्यवसाय के रूप में अपनाया हुआ है।
9. **ब्लॉग लेखन का व्यवसाय –** ब्लॉग लेखन के लिए सृजनशीलता और भाषा पर अधिकार अनिवार्य गुण है। निरंतर अध्ययन और अपने सामाजिक परिवेश के प्रति जागरूक रह इन गुणों को विकसित किया जा सकता है। ई–मीडिया पर विभिन्न विधाओं के सिद्धहस्त लेखकों की मांग निरंतर बढ़ती जा रही है। ब्लॉगर अपने विषय के अच्छे जानकार होते है, इनके साथ ही अभिव्यक्ति का कौशल भी होता है। ब्लॉग लेखन आज बड़े व्यवसाय का रूप ले रहा है। अतः प्राध्यापकों द्वारा इस विषय से स्नातक डिग्री प्राप्त छात्रों को इस व्यवसाय हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।
10. **व्यक्तियों, संस्थानों व उत्पादकों की प्रसिद्धि के विषेशज्ञ का व्यवसाय –** जैसे–जैसे मीडिया का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, वैसे ही यह बाजार का प्रमुख सहयोगी भी बन रहा है। अनेक उत्पादों को उनके उपभोक्ताओं के बीच लोकप्रिय बनाने में मीडिया माध्यमों का प्रमुख योगदान रहता है। इन उत्पादों की प्रसिद्धि के पीछे कुशल मीडिया रणनीतिकारों की भूमिका रहती है। बाजार की आवश्यकताओं को समझते हुए उत्पादों को लोकप्रिय बनाने की योजना आय का प्रमुख माध्यम बनती जा रही है। इस प्रकार अनेक विशिष्ट व्यक्ति और संस्था भी अपनी प्रसिद्धि के लिए मीडिया का सहारा लेती है। जो युवा पीढ़ी इस कार्य में दक्ष व निपुण होती है। वह

अपनी दक्षता के आधार पर उचित मानेदय प्राप्त कर अपना गुजारा करने में सक्षम हो सकते है।

प्राणी विज्ञान

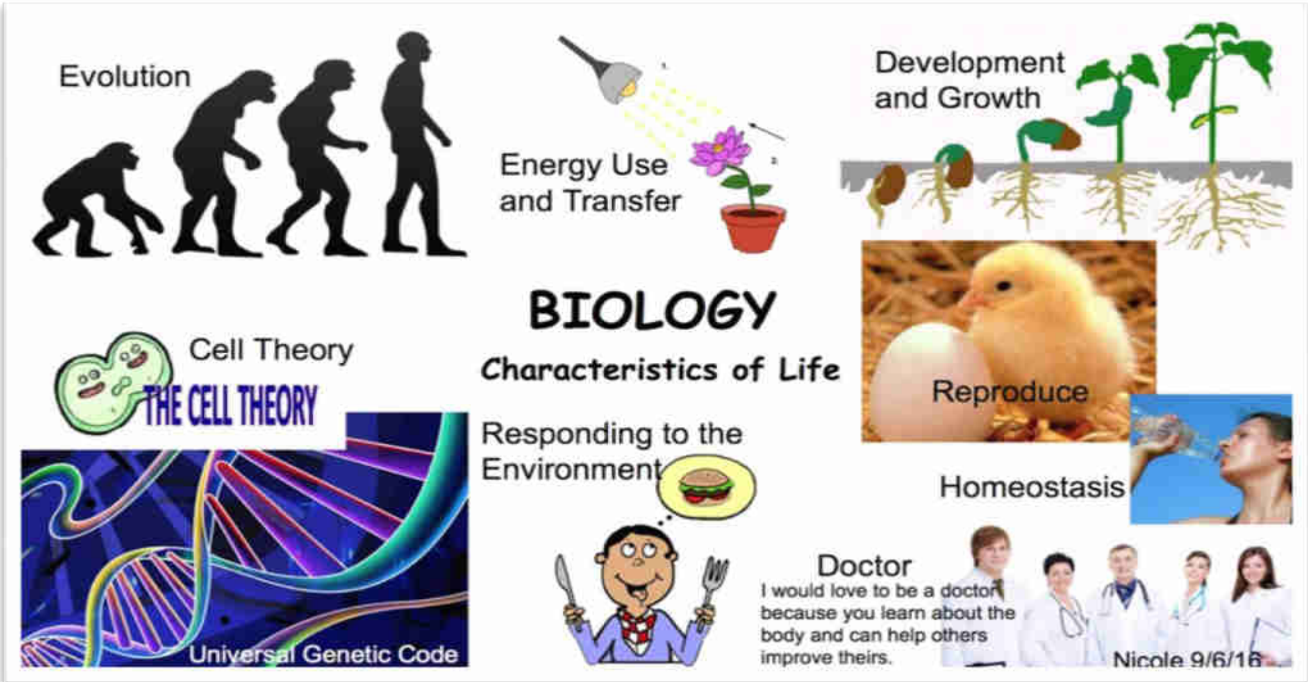

<u>जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास</u>

1.	वर्मीकम्पोस्ट (केंचुओं) के उपयोग से खाद बनाने का स्वरोजगार।
2.	मछली (झींगा) पालन का परामर्शदाता।
3.	मछली (झींगा) पालन का स्वरोजगार।
4.	मुर्गी पालन के परामर्शदाता।
5.	मुर्गीपालन का स्वरोजगार।
6.	मधुमक्खी पालन के परामर्शदाता के रूप में।
7.	मधुमक्खीपालन का स्वरोजगार।
8.	वनों में जीव गाइड के रूप में।
9.	घरों में पालतू पशुओं (कुत्ता, बिल्ली, तोता) आदि की ट्रेनिंग के लिए परामर्श।
10.	समाचार पत्रों, चैनलों व पोर्टलों पर प्राणी शास्त्र संबंधी लेखन, विश्लेषण व वीडियों आदि।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **वर्मीकम्पोस्ट (केंचुओं) के उपयोग से खाद बनाने का स्वरोजगार** – वर्मीकम्पोस्ट को वर्मीकल्चर या केंचुआ पालन भी कहते है। केंचुओं के मल से तैयार की गई खाद ही वर्मीकम्पोस्ट कहलाती है। वर्ममान समय में फसलों के लिए यह प्राकृतिक, सम्पूर्ण एवं संतुलित आहार है। कक्षा में प्राध्यापकों द्वारा इस खाद को बनाने की तकनीक व विधि का व्यावहारिक ज्ञान देकर उनको भविष्य में आजीविका कमाने हेतु प्रेरित कर सकता है क्योंकि इस खाद के उपयोग से किसानों को उत्पादन वृद्धि के सुअवसर प्राप्त होते है। इस खाद के उपयोग से मटर व जई के उत्पादन में 70 प्रतिशत, सेब उत्पादन में 25 प्रतिशत व गेहूँ उत्पादन में 30 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। अतः विद्यार्थी इस खाद को बनाने की विधि का अभ्यास कर, अपना स्वयं का रोजगार शुरू कर सकता है।
2. **मछली (झींगा) पालन का परामर्शदाता –** भारतीय अर्थव्यवसाय में मछली पालन एक सुलभ–सस्ता व अधिक आय देने वाला व्यवसाय है। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाला गरीब समुदाय इस व्यवसाय को अपनाकर अपना व अपने परिवार का पेट भरने में सक्षम हो सकता है। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि वे कक्षा में विद्यार्थियों को मत्स्य उद्योग को व्यवसाय के रूप में आरंभ करने की सभी विधियों तथा सरकारी तंत्र द्वारा चलाई गई सभी योजनाएँ की जानकारी जैसे मछुआ प्रशिक्षण ट्रेनिंग, मत्स्य कृषक विभाग अभिकरण योजना, मछुआ दुर्घटना बीमा केन्द्र योजना, निज मत्स्य पालकों को अनुदान राशि आदि योजनाएं जिससे अंतर्गत कृषकों व मत्स्यपालन उद्योग करने वाले गरीब किसानों, अनुसूचित व अनुसूचित जन जाति के लोगों को भूमि, तालाब व वित्तिय सहायता की सुविधाएं दी जाती है। अतः प्राणी विज्ञान का विद्यार्थी इस व्यावहारिक ज्ञान के बल पर परामर्शदाता के रूप में जीविका कमाने में सक्षम बन सकता है।
3. **मछली (झींगा) पालन का स्वरोजगार –** भारतीय अर्थव्यवसाय में मछली पालन एक महत्त्तपूर्ण व्यवसाय है जिसमें रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं। इस उद्योग को शुरू करने हेतु कम पूंजी की आवश्यकता होती है। हमारे देश के भू–क्षेत्रफल का एक बड़ा हिस्सा नदियों, समुद्र व अन्य जल स्त्रोतों से ढका हुआ है। वहाँ पर विद्यार्थियों को मछलीपालन व्यवसाय हेतु प्रेरित कर जीविका कमाने में सक्षम बनाया जा सकता है। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि वे कक्षा में मछलीपालन संबंधी तकनीकों का ज्ञान देने के साथ–2 सरकार द्वारा चलाए गए 30 दिवसीय मत्स्यपालन प्रशिक्षण कार्यक्रम में जाने हेतु प्रेरित करें। सरकार द्वारा इस व्यवसाय को अपनाने हेतु मत्स्य कृषक अभिकरण योजना के अंतर्गत तालाब धारी मत्स्य कृषकों को 10 दिवसीय लघु प्रशिक्षण तथा भत्ता भी दिया जाता हैं। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि वे कक्षा में विद्याथियों को इन सब जानकारियों से अवगत करवाएं ताकि वे भविष्य में इस जानकारी का उपयोग आय कमाने में कर सके।
4. **मुर्गी पालन के परामर्शदाता –** वर्तमान समय में मुर्गीपालन का व्यवसाय आजीविका कमाने के अच्छे स्त्रोत के रूप में उभर कर सामने आ रहा है। प्राध्यापकों को चाहिए कि वे कक्षा में प्राणी विज्ञान के विद्यार्थियों को स्नातक स्तर पर मुर्गी पालन के व्यवसाय संबंधी विधियों व तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान दें। मुर्गीपालन के लिए साइट चयन, परियोजना प्रस्ताव, संरचना का अनुभाग, पक्षियों की नस्ल का चयन, मुर्गी पालन के लिए मशीन व उपकरण खरीदने, पक्षियों के पालन, चूजों की आपूर्ति, मुर्गियों का कीट व रोग प्रबंधन, चारा, अंडे का संग्रहण, भंडारण,

अंडे की बिक्री, कोल्ड स्टोरेट व सरकारी तंत्र द्वारा दी गई योजनाएँ व वित्तीय सहायता का व्यावहारिक ज्ञान अति आवश्यक है। इसी ज्ञान के आधार पर वह मुर्गीपालन करने वाले उद्यमियों व कृषकों के लिए परामर्शदाता के रूप में काम कर जीविका कमाने में सफल हो सकता है।

5. **मुर्गीपालन का स्वरोजगार –** मुर्गीपालन एक ऐसा व्यवसाय है जोकि ग्रामीण अर्थव्यवसाय व गरीब लोगों की आय का बड़ा स्त्रोत बन सकता है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे बहुत कम लागत से शुरू करके लाखों–करोंड़ों रूपये का लाभ कमाया जा सकता है। सुगुना पोल्ट्री के. वी. सौदार राजन और जीबी सुंदर राजन का उदाहरण सबके सामने है। इन्होंने मुर्गीपालन के बहुत छोटे से व्यवसाय से अपनी शुरूआत की और वर्तमान समय में उनका यह व्यवसाय 4200 करोड़ की कंपनी में बदल गया। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि एनिमल साइंस व जीव विज्ञान के छात्रों को इन व्यवसायों को अपनाने हेतु प्रेरित करें।
6. **मधुमक्खी पालन के परामर्शदाता के रूप में –** प्राणी विज्ञान विषय से स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र को प्राध्यापकों की मदद से यदि कक्षा में मधुमक्खीपालन संबंधी डिप्लोमा, डिग्री कोर्स तथा सरकार द्वारा करवाए जा रहे प्रशिक्षण प्रोग्राम व मधुमक्खियों की विभिन्न प्रकार किस्मों जैसे –एपिस मेलोफेरा, एपिस इंडिका, एपिस डोरसाला और एपिस फलोरिया आदि की जानकारी उपलब्ध करवाना तथा बताना कि एपिस मेलीफेरा मक्खियाँ अधिक शहद उत्पादित करने की क्षमता रखती है। मधुमक्खी पालन का उचित समय, प्रविधि, उपयुक्त सामान व उपकरण तथा सरकारी ऋण व्यवस्था आदि की जानकारी रखना तथा आवश्यकतानुसार उद्यमी व जरूरतमंद किसान, जो इस व्यवसाय में रूचि रखते हो, उन्हें इस व्यवसाय संबंधी जानकारी देकर, युवा परामर्शदाता के रूप में जीविका अर्जन कर सकते है।
7. **मधुमक्खी पालन का स्वरोजगार –** मधुमक्खी पालन एक ऐसा स्वरोजगार है जिसे आसानी से कहीं भी प्रारंभ किया जा सकता है। थोड़ी पूंजी व कम मेहनत वाले इस व्यवसाय को अपनाकर बेरोजगार युवा आसानी से रोजगार प्राप्त कर सकते है। अतः प्राध्यापकों को कक्षा में विद्यार्थियों को मधुमक्खी पालन संबंधी विधियों व तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे अच्छी प्रकार से प्रशिक्षित होकर, भविष्य में इस रोजगार को प्रांरभ कर जीविका कमा सके।
8. **वनों में जीव गाइड के रूप में –** प्राणी विज्ञान विषय से स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्रों को प्राध्यापकों द्वारा वनों में जीव गाइड के रूप में कार्य करने हेतु भी प्रेरित कर रोजगार के अवसर दिए जा सकते है। प्रकृति संरक्षण के अंर्तगत युवा जंगलों की रक्षा के कर्त्तव्य को रोजगार के रूप अपना कर सफल हो सकते है। इस क्षेत्र के अंर्तगत भारत तथा विदेशों में भी युवाओं के लिए सरकारी नौकरी के अवसर उपलब्ध है। अतः वन्यक्षेत्र से संबंधित गाइड के रूप में डिप्लोमा कोर्स का प्रशिक्षण प्राप्त कर नौकरी प्राप्त की जा सकती है।
9. **घरों में पालतू पशुओं (कुत्ता, बिल्ली, तोता) आदि की ट्रेनिंग के लिए परामर्श –** पशु प्रशिक्षण से तात्पर्य जानवरों को विशिष्ट परिस्थितियों में कुछ प्रतिक्रियाओं को सिखाने से है। प्राणी विज्ञान के विद्यार्थियों को स्नातक स्तर पर पशु पालन संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी दिलवाकर उन्हें प्रशिक्षित किया जा सकता है। पशु प्रशिक्षक वास्तव में प्रशिक्षित, प्रशिक्षक होते है जोकि विभिन्न प्रकार के जानवरों को मानव संपर्क में आदि होने के लिए तैयार करते है।

उन्हें विशेष आदेशों व स्थितियों का जवाब देने के लिए तैयार करते है तथा वे जानवरों की सुरक्षा, आज्ञाकारिता मनोरंजन, रेसिंग आदि विशिष्ट कार्यों के लिए प्रशिक्षित करते है। युवा ग्रेजुएट छात्र, पशु प्रशिक्षण प्रोग्रामों को सीखकर, परामर्शदाता के रूप में जीविका कमाने में सफल हो सकते है।

10. **समाचार पत्रों, चैनलों व पोर्टलों पर प्राणी शास्त्र संबंधी लेखन, विश्लेषण व वीडियों आदि–** प्राणी विज्ञान विषय से स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र, अपने ज्ञान के आधार पर विभिन्न प्राणियों व पशुओं की जानकारी देने संबंधी लेख, पत्र व पत्रिकाओं में लिखकर वक्ता या लेखक के रूप में तथा पशुओं संबंधी जानकारी को चैनलों पर वीडियो बनाकर, पाठकों व दर्शकों को जानकारी उपलब्ध करवाकर, जीविका कमाने में सफल हो सकते है।

भूगोल

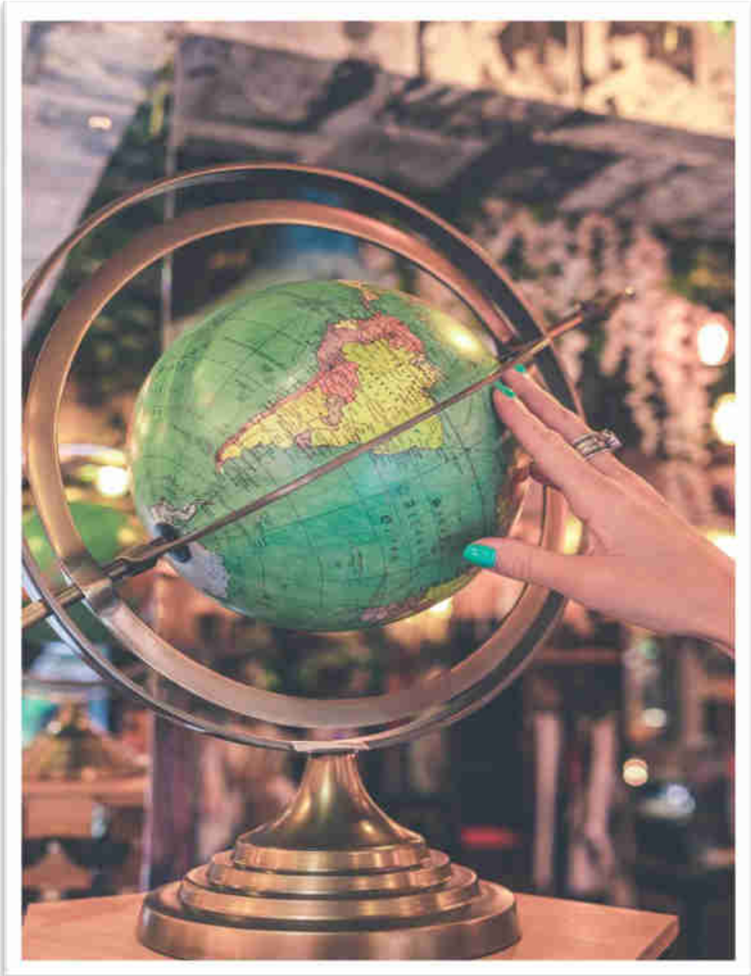

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	स्वतंत्र भूमि सर्वेक्षक बनना।
2.	किसानों की फसलों की सिंचाई के प्रबंधन का परामर्श देना।
3.	स्थानीय शासन के साथ आपदा प्रबंधन की योजना बनाना।
4.	मोहल्लों, ग्रामों एवम नगरों के बदलते स्वरूप में मानचित्र बनाना।
5.	भवन निर्माण से पूर्व भूमि के विषय में परामर्श देना।
6.	GPS के माध्यम से सर्वेक्षण करने की दक्षता प्राप्त करना।
7.	मौसम की समीक्षा एवं पूर्वानुमान लगाना।
8.	प्रदूषण निवारण परामर्शदाता बनना।
9.	वास्तु–शास्त्र विशेषज्ञ बनना।
10.	जल, वायु, भूमि आदि विषयों में मीडिया के लिए लेखन एंव वीडियों आदि बनाना।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **स्वतंत्र भूमि सर्वेक्षक बनना–** भूगोल विषय से स्नातक स्तर पर कक्षा में अध्ययन के समय यदि प्राध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को भूमि का सर्वे करने की जितनी भी तकनीक व प्रविधियाँ होती है। उनका ज्ञान व्यावहारिक रूप से विभिन्न प्रकार की भूमि क्षेत्रों में भेजकर करना सिखा दिया जाए तो वह रेतीली, बंजर, ऊपजाऊ आदि सभी प्रकार की भूमि का निरीक्षण करना उपकरणों के माध्यम से सीख लेगा तो वह स्वतंत्र भूमि सर्वेक्षक के रूप में जीविका कमा सकता है।
2. **किसानों की फसलों की सिंचाई के प्रबंधन का परामर्श देना –**भूगोल विषय में मुख्य तौर पर क्या, कहाँ और कैसे प्रश्नों के उत्तर उपलब्ध होते है। उदाहरण के तौर पर किसी क्षेत्र विशेष की भौगोलिक दशाओं के अनुरूप, फसलों को उगाना, वहाँ के धरातल, जल तथा भूमि का सर्वेक्षण इत्यादि का ज्ञान भूगोल विषय से डिग्री प्राप्त छात्रों को प्राध्यापकों द्वारा दिया जाता है। प्राध्यापकों द्वारा फसलों के लिए सिंचाई की आधुनिक तकनीकें जैसे Drip Irrigation, Sprinblers आदि सभी आधुनिक तकनीकी द्वारा सिंचाई की विभिन्न विधियों का प्रयोग करना सिखाना, भविष्य में उन्हें इस क्षेत्र में परामर्शदाता के रूप में जीविका अर्जन करने में स्वावलंबी बना सकता है।
3. **स्थानीय शासन के साथ आपदा प्रबंधन की योजना बनाना–**एक भूगोलवेत्ता ही किसी स्थान की भौगोलिक परिस्थितियों को सही तरीके से समझ कर भविष्य में घटित होने वाले आपदाओं का पूर्वानुमान लगाकर, प्रशासन को पहले ही सावधान कर देता है उदाहरणस्वरूप – बादलों की स्थिति व प्रकार को समझकर मूसलाधार वर्षा व उसके बाद की संभावनाओं को बताकर बचाव के आवश्यक सुझाव देना, इसी प्रकार भूकंप संभावी क्षेत्रों में भूस्खलन क्षेत्रों का पता लगाकार आवश्यक कार्यवाही हेतु बचाव के सुझाव देना। अतः प्राध्यापकों को भूगोल विषय पढ़ाते समय विद्यार्थियों के अन्दर आपदाप्रबंधन की समझ विकसित कर, समस्याओं का आकलन करना सिखाना चाहिए ताकि वे भविष्य में आपदा प्रबंधन की योजनाएं बनाने में निपुण बन सके व जीविका कमाने का कार्य कर सके।
4. **मोहल्लों, ग्रामों एवम नगरों के बदलते स्वरूप में मानचित्र बनाना–**वर्तमान समय में किसी भी भौगोलिक क्षेत्र की सम्पूर्ण जानकारी का ज्ञान होना अति आवश्यक है। किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों के लिए मानवीय व प्राकृतिक दोनों कारक उत्तरदायी होते है। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि भूगोल से स्नातक डिग्री के छात्रों को मोहल्लों, ग्रामों एवं नगरों के Topographical, Map/ Sheets व Satelites Images बनाने का तरीका व विधियां अभ्यास द्वारा बनाना सिखाएं ताकि वे Overlapping जैसी तकनीकों का प्रयोग करना सीखकर किसी भी ग्राम मोहल्ले व नगरों की सीमाओं का निर्धारण करके उस स्थान विशेष के बदले स्वरूप के आधार मानचित्रों का निर्माण कर सके। इस तरह से छात्र आजीविका कमाने में सफल हो सकते है।
5. **भवन निर्माण से पूर्व भूमि के विषय में परामर्श देना–**अपने स्वयं का भवन निर्माण या किसी प्रकार का भवन निर्माण करने से पहले व्यक्ति उस भूमि के बारे में अच्छी प्रकार से जाँच पड़ताल व गहन अध्ययन करता है। एक भूगोल विषय का छात्र Soil Geography के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की मिट्टियों का गहन अध्ययन करता है व विभिन्न प्रकार की मृदाओं के

प्रकार, वितरण, उपलब्धता तथा सभी प्रकार के तथ्यों को एकत्रित कर भवन निर्माणकर्ता को उस भूमि की स्थिति से अवगत करवाता है। अतः प्राध्यापकों को कक्षा के अलावा छात्रों को बाहर क्षेत्र में ले जाकर विभिन्न प्रकार की मृदा व भूमि परीक्षण की विधियों का ज्ञान व अभ्यास सिखाया जाना चाहिए ताकि भविष्य में वे परामर्शदाता के रूप में जीविका कमा सके।

6. **जी.पी.एस. माध्यम से सर्वेक्षण करने की दक्षता प्राप्त करना–** जी.पी.एस. यानि ज्योग्राफिकल पोजिशनिंग सिस्टम, किसी भी वस्तु की डिग्री, मिनट, सैंकेड के इस्तेमाल से जगहों को ढूंढने में मदद करता है। यदि भूगोल विषय के छात्रों को प्राध्यापकों द्वारा भूगोल की विभिन्न शाखाओं में वेब मैपिंग, फोटोग्राफी, कार्टोग्राफी, भूगणित, आपदा प्रबंधन, ग्लोबल नेविगेशन, सैटेलाइट सिस्टम व भौगोलिक इन्फोरमेशेन्स सिस्टम के अंतर्गत डाटा व नक्शों का विश्लेषण तथा अन्वेषण में रूचि के आधार पर सर्वेक्षण की विधियों का अभ्यास करवा दिया जाए तो वे सर्वेक्षक के रूप में भविष्य में आय प्राप्त करने में सक्षम बन सकते है।
7. **मौसम की समीक्षा एवं पूर्वानुमान लगाना–** भूगोल विषय प्राप्त छात्रों को प्राध्यापकों द्वारा मौसम की समयानुसार बदलती हुई गतिविधियों के आधार पर पूर्वानुमन लगाना सिखाया जाना चाहिए क्योंकि एक भूगोलवेत्ता मौसम संबंधी आवश्यक एवं सटीक जानकारियाँ प्रदान कर सकता है। पवनों की दिशा, वेग, तापमान, आर्द्रता एवं वायुदाब की अवस्थितियों को समझकर, वहां के मौसम में परिवर्तन संबंधी सभी स्थितियों का आकलन करना उसे आना चाहिए ताकि भविष्य में वह इस ज्ञान का उपयोग अपनी जीविका कमाने में कर सके।
8. **प्रदूषण निवारण परामर्शदाता बनना–** भूगोल विषय से स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र को क्षेत्र विशेष में बढ़ रहे प्रदूषण तथा वहां के वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना आ जाता है। उदाहरण स्वरूप Global Warming का प्रमुख कारण वातावरण में कार्बन का बढ़ना है। किसी भी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में बढ़ते प्रदूषण के अनेकों कारणों की समीक्षा करना सिखाना ताकि छात्र व्यावहारिक ज्ञान के तौर पर भविष्य में प्रदूषण निवारक परामर्शदाता के रूप में आय कमाने में स्वाबलम्बी बन सके।
9. **ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विकास में प्लानर के रूप में –** भूगोल को पृथ्वी का विज्ञान कहा जाता है। इनके अंतर्गत धरती एवं उसके आसपास पाए जाने वाले तत्त्वों का अध्ययन किया जाता है। यदि भूगोल विषय से स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्रों को, भूगोल की शाखा, फिजिकल ज्योग्राफी के अंतर्गत पृथ्वी की संरचना, उसके अंदर होने वाली हलचलों की जानकारी है तो वह शहरी क्षेत्रों की भूमि पर बसावट व नई कॉलोनियों को विकसित करने के अलावा ग्रामीण इलाकों में गैस प्लांट लगाने या अन्य सर्वे से संबंधित काम सीखकर वे प्रोपर्टी मालिक या डेवलपर के साथ मिलकर प्लेनर के रूप में जीविकोपार्जन का कार्य कर सकते है।

10. **जल, वायु, भूमि आदि में विषयों में मीडिया के लिए लेखन एंव वीडियों आदि बनाना–** प्रत्येक क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के अंतर्गत जल, वायु, व भूमि के विभिन्न स्तरों का अवलोकन करना आता है। कृषि उद्योग में लगे हुए लोग अपने भौगोलिक क्षेत्र मैं, जल की उपलब्धता व वायु व भूमि के विभिन्न स्तरों के आधार पर ही फसलों के उत्पादन तथा मकान व फैक्ट्री इत्यादि बनाने का कार्य करते है। अतः प्राध्यापकों द्वारा भूगोल विषय के छात्रों को जल, वायु, व भूमि

से संबंधित विषयों पर जानकारी रखने वाले छात्रों को मीडिया में लेख लिखने संबंधी तथा चैनलों में वीडियो बनाने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि वे स्वावलंबी बन सके।

भौतिक विज्ञान

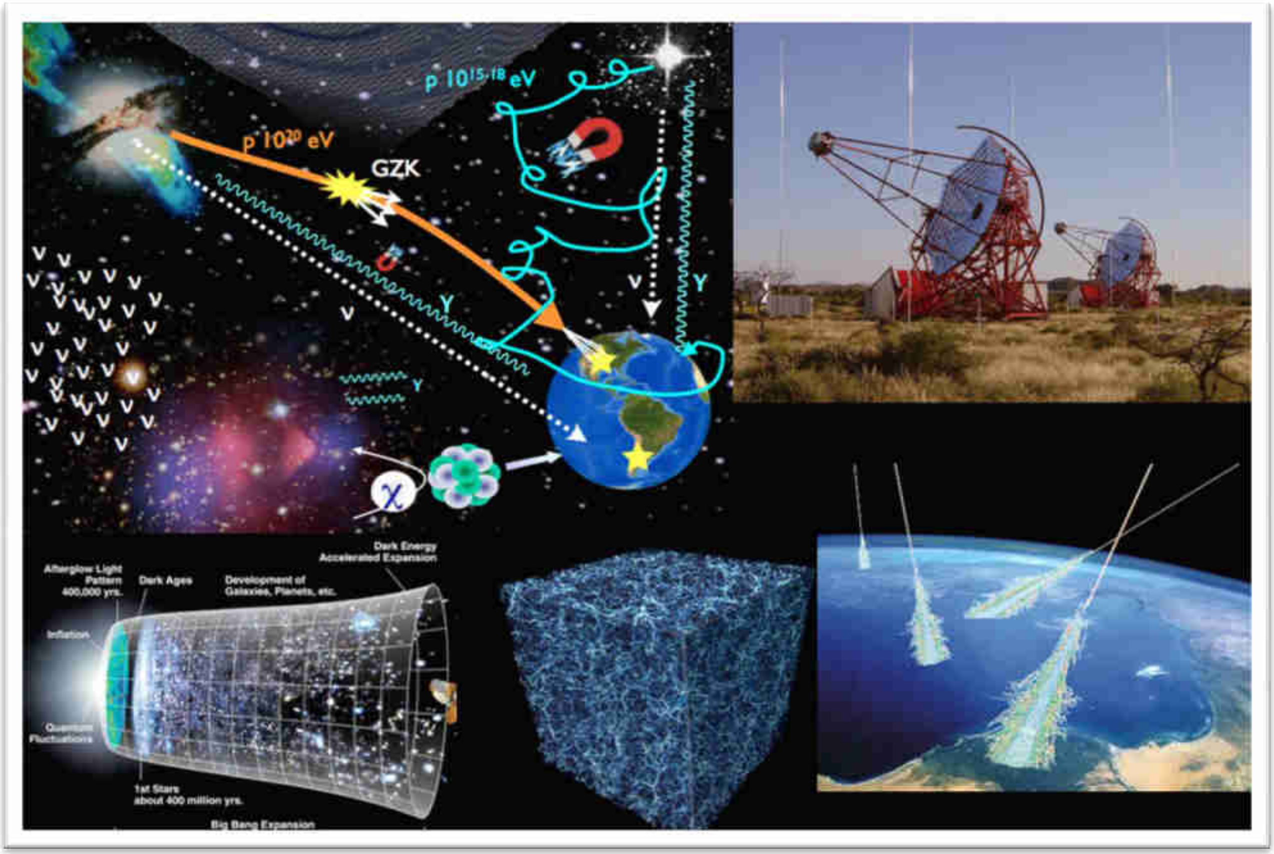

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	सोलर सेल निर्माण का लघु उद्योग लगाना।
2.	बैटरी के रख–रखाव के विषय में परामर्श।
3.	दृष्टि का प्रशिक्षण करने की कला एंव उपयुक्त लेंस लगाने का परामर्श।
4.	चश्मों में प्रयोग होने वाले लेंसो को बनाना, नापना व लगाना।
5.	निर्माणाधीन भवनों में बिजली की तारों की योजना/नक्शा बनाना।
6.	घर के कार्य में उपयुक्त उपकरणों के रख–रखाव व मुरम्मत के कार्य का स्वरोजगार।
7.	सभाग्रहों में ऑडियो उपकरण लगाने का स्वरोजगार।
8.	विभिन्न स्थानों में सी.सी.टी.वी. लगाने का परामर्श एवं स्वरोजगार।
9.	विभिन्न स्थानों में उपयोग होने वाले सेंसर लगाने का परमर्श व स्वरोजगार।
10.	समाचार पत्रों, चैनलों व पोर्टलों पर विषय संबंधी लेखन, विश्लेषण व वीडियों आदि।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **सोलर सेल निर्माण का लघु उद्योग लगाना–** वर्तमान समय में बिजली व अन्य विद्युत संचालित उपकरणों हेतु सोलर सेल एक प्रदूषण रहित, सस्ता व टिकाऊ संसाधन है। इसका उपयोग लंबी अवधि हेतु आसानी से किया जा सकता है। अतः महाविद्यालय में प्राध्यापकों द्वारा छात्रों को सोलर–सेल की उपयोगिता समझाकर उन्हें इस लघु उद्योग को लगाने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए क्योंकि सोलर सेल उद्योग पूरी तरह से जानकारी और तकनीकी स्किल पर आधारित व्यवसाय है। अतः युवा पीढ़ी इस क्षेत्र से संबंधित तकनीकी व व्यावसायिक कुशलता से इस व्यवसाय को प्रारंभ कर जीविका कमाने में सक्षम हो सकती है।
2. **बैटरी के रख–रखाव के विषय में परामर्श–** सभी विद्युत संचालित उपकरणों में बैटरी का उपयोग होता है। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि वे कक्षा में सभी प्रकार की बैटरी के रख–रखाव से संबंधित विधियों व तरीकों को अभ्यास से प्रयोगशाला में करना सिखाएं तथा खराब होने की स्थिति में उनसे संबंधित प्रशिक्षण व ट्रेनिंग कोर्सों की जानकारी के प्रति भी जागरूक कर, उन्हें भविष्य में परामर्शदाता के रूप में जीविका कमाने में स्वावलंबी बना सकते है।
3. **दृष्टि का प्रशिक्षण करने की कला एंव उपयुक्त लेंस लगाने का परामर्श –** भौतिक विज्ञान पढ़ने वाले विद्यार्थियों को प्राध्यापकों द्वारा कक्षा में दृष्टि से संबंधित जिसने भी दोष होते है उनकी विधिवत जानकारी व उपयुक्त लेंस लगाने संबंधी विधियों का ज्ञान व्यावहारिक तौर पर दिया जाना चाहिए। यदि प्रयोगशाला में विद्यार्थियों को लेंस लगाने संबंधी व्यावहारिक ज्ञान दे दिया जाएगा तो वह स्वयं थोड़े से पूंजी निवेश के साथ स्वयं का व्यवसाय व परामर्शदाता के रूप में कार्य कर, जीविका कमाने में स्वावलंबी बन सकता है।
4. **चश्मों में प्रयोग होने वाले लेंसो को बनाना, नापना व लगाना–** वर्तमान समय में बहुत से लोग चश्मा लगाने की अपेक्षा, दृष्टि दोष को दूर करने हेतु चश्में में लेंस को लगाना पसंद करते है और यह व्यवसाय दिन–प्रतिदिन प्रगति की ओर है और चश्मों में उपयोग होने वाले लेंसों को नापने की विधि भी बहुत ही सरल होती है। यदि कक्षा में प्राध्यापकों द्वारा इन लेंसों को बनाने, नापने व लगाने की विधि प्रयोगशाला में अभ्यास द्वारा विद्यार्थियों को सिखा दी जाए तो रोजगार की दृष्टि से यह युवा पीढ़ी के लिए बेहतर विकल्प साबित हो सकता है।
5. **निर्माणाधीन भवनों में बिजली की तारों की योजना/नक्शा बनाना–** किसी भी भवन के निर्माण में बिजली की तारों द्वारा विद्युत संचालन एक महत्त्वपूर्ण कार्य होने के साथ–2 एक योजनाबद्ध कार्य है। भौतिकी विषय से स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्रों ने, कक्षा में यदि सुचारू रूप से बिजली की तारों को सुनियोजित करने का कार्य यदि अभ्यास से सीखा हो तो वह छोटे से व्यवसाय के रूप इस कार्य को कर आजीविका कमाने में स्वावलंबी बन सकते है। अतः प्राध्यापकों को विद्यार्थियों को इस कार्य हेतु उचित ज्ञान व प्रशिक्षण देकर इस व्यवसाय हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।
6. **घर के कार्य में उपयुक्त उपकरणों के रख–रखाव व मुरम्मत के कार्य का स्वरोजगार–** वर्तमान समय में सुसज्जित घर के साथ–2 घरों में आवश्यक सुविधाओं हेतु विभिन्न प्रकार के उपकरण प्रयोग में लाए जाते है जैसे– वाशिंग मशीन, मिक्सर ग्राइंडर, इंर्वटर बैटरी, LCD व LED, विभिन्न प्रकार की इलैक्ट्रानिक आइटम्स उपकरण बगैरा में उपयुक्त जानकारी व उपयुक्त रख–रखाव

के अभाव में इनकी मशीनरी में खराबी आ जाती है। यदि भौतिक विज्ञान के छात्रों को, कक्षा में इन सब उपकरणों की मरम्मत से संबंधित आयोजित होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षण हेतु भेजा जाए तो छात्र थोडे से पूंजी निवेश के साथ स्वयं का व्यवसाय शुरू कर सकते है। यह भी जीविका कमाने का बेहतरीन विकल्प है।

7. **सभाग्रहों में ऑडियो उपकरण लगाने का स्वरोजगार** –वर्तमान समय में समाज में सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक उद्देश्यों के लिए जो भी बड़े–2 कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। उन सब में सूचना व संचार हेतु वीडियों उपकरण लगाए जाते है। अधिक श्रोताओं तक आवाज के संचरण हेतु ऑडियो सिस्टम माध्यम का प्रयोग आम बात हो गई है। बाजार में बहुत सी कंपनियों व क्वालिटी के ऑडियों सिस्टम मौजूद है। यदि भौतिक विज्ञान पढ़ने वाले छात्र, कक्षा में प्राध्यापकों की मदद से, विभिन्न ऑडियो सिस्टम की जानकारी व प्रशिक्षण प्राप्त कर लेगें तो वे कम लागत के इस व्यवसाय को स्वरोजगार के रूप चयन कर सकते है।
8. **विभिन्न स्थानों में सी.सी.टी.वी. लगाने का परामर्श एवं स्वरोजगार–** वर्तमान समय में दिन–प्रतिदिन होती चोरी व अपराध की दुर्घटनाओं की निगरानी हेतु सी.सी.टी.वी. कैमरों का प्रचलन बहुतायत मात्रा में हो रहा है। ये कैमरे आजकल घरों, दफ्तरों, होटलों मार्किटिंग संस्थानों, बैंकों व सड़कों पर जगह–2 लगाए जाते है ताकि अपराध, चोरी व दुर्घटनाओं का आकलन किया जा सके। अतः प्राध्यापकों द्वारा उपरोक्त कैमरे लगाने की तकनीकी जानकारी का प्रशिक्षण देना या दिलवाना विद्यार्थियों व युवा पीढ़ी को रोजगार दिलवाने का अच्छा विकल्प है।
9. **विभिन्न स्थानों में उपयोग होने वाले सेंसर लगाने का परामर्श व स्वरोजगार–** भूकंप, बाढ़, मौसम के पूर्वानुमान हेतु, दुर्घटना संभावित क्षेत्रों में सेंसर लगाए जाते है ताकि पूर्वानुमान के आधार पर प्रशासन को सचेत कर, आगामी घटित होने वाली दुर्घटनाओं से बचा जा सके। अतः महाविद्यालय प्राध्यापकों द्वारा छात्रों को ऐसे सेंसरों के उपयोग का प्रशिक्षण, विद्यार्थियों को रोजगार प्राप्त करने में सक्षम बना सकेगा।
10. **समाचार पत्रों, चैनलों व पोर्टलों पर विषय संबंधी लेखन, विश्लेषण व वीडियों आदि–** विज्ञान संबंधी लेख व वीडियों न केवल विज्ञान के प्रति बच्चों का ज्ञान बढ़ाते है। बल्कि आधुनिक समय में यह एक अच्छे आय स्त्रोत का माध्यम भी बन रहे है। अतः प्राध्यापकों द्वारा कक्षा में छात्रों को वीडियों अपलोड करना सिखाना व लेख लिखने संबंधी प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि वे वक्ता/ लेखक के रूप में आय प्राप्त कर सके।

मनोविज्ञान

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों का प्रवृत्ति/योग्यता/कौशल परीक्षण करके परामर्श देना।
2.	हरियाणा के शहरी बच्चों का प्रवृत्ति/योग्यता/कौशल परीक्षण करके परामर्श देना।
3.	तनाव मुक्ति के उपायों की सेवाएं देना।
4.	अवसाद मुक्ति के लिए परामर्श देना।
5.	मनोवैज्ञानिक डॉक्टर के सहायक का कार्य करना।
6.	बच्चों के व्यक्तित्व सुधारने के कार्य का विशेषज्ञ बनना।
7.	पारिवारिक मन–मुटाव के निपटारे का विशेषज्ञ बनना।
8.	सुखी संतुष्ट एंव स्वस्थ जीवन पद्धति के परामर्शदाता बनना।
9.	छोटे–बड़े उद्योगों में कर्मचारियों की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए प्रेरक का कार्य करना।
10.	समाचार पत्रों, चैंनलो व पोर्टलों पर मनोविज्ञान संबंधी लेखन, विश्लेषण आदि।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों का प्रवृत्ति/योग्यता/कौशल परीक्षण करके परामर्श देना**– स्नातक डिग्री प्राप्त विद्यार्थी को यदि व्यावहारिक तौर पर मनोविज्ञान विषय के सैंद्धातिक अध्ययन के साथ–साथ यदि महाविद्यालयों में बालकों की प्रवृत्ति/योग्यता/कौशल परीक्षण के जितने भी टेस्ट या उपकरण होते हैं। उनको प्रयोग करने का ज्ञान कक्षा में प्राध्यापक द्वारा सिखा दिया जाए तो वे परामर्शदाता के रूप में जीविका अर्जन का कार्य कर सकते है।
2. **हरियाणा के शहरी बच्चों का प्रवृत्ति/योग्यता/कौशल परीक्षण करके परामर्श देना**–स्नातक डिग्री प्राप्त विद्यार्थी को यदि व्यावहारिक तौर पर मनोविज्ञान विषय के सैंद्धातिक अध्ययन के साथ–साथ यदि महाविद्यालयों में बालकों की प्रवृत्ति/योग्यता/कौशल परीक्षण के जितने भी टेस्ट या उपकरण होते हैं। उनको प्रयोग करने की विधियों व तरीकों से प्रशिक्षित कर दिया जाएगा तो वे परामर्शदाता के रूप में जीविका कमा सकते है।
3. **तनाव मुक्ति के उपायों की सेवाएं देना**– मनोविज्ञान विषय से डिग्री प्राप्त विद्यार्थी को मानव मन की विभिन्न सतहों के व्यावहारिक ज्ञान की समझ होना अति आवश्यक है। इसी व्यावहारिक ज्ञान के बल पर वह वर्तमान जीवन के मानव की उन सभी समस्याओं को ठीक प्रकार से समझ सकता है जोकि तनाव पैदा करती है। यदि वह व्यावहारिक तौर पर तनाव मुक्ति की विभिन्न क्रियाओं का अध्ययन, प्राध्यापक द्वारा कक्षा में अभ्यास द्वारा सिखा दिया जाए तो भविष्य में वे काउंसलर के रूप में अपनी जीविका कमाने में सफल हो सकते है।
4. **अवसाद मुक्ति के लिए परामर्श देना** – वर्तमान समय में मानव बहुत सी समस्याओं से घिरा हुआ रहता है। इन छोटी बड़ी समस्या से स्वयं को अवसाद ग्रस्त महसूस करता है। यदि मनोविज्ञान विषय के विद्यार्थी को कक्षा में प्राध्यापक द्वारा अवसाद मुक्ति की विभिन्न विधियों का व्यावहारिक प्रयोग करना सिखा दिया जाए तो वह परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवाएं देकर जीविका कमा सकता है।
5. **मनोवैज्ञानिक डॉक्टर के सहायक का कार्य करना**–वर्तमान समय में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के कारण आम आदमी युवा व बच्चे तनाव अवसाद से ग्रसित है और अवसाद के कारण मनोवैज्ञानिक डॉक्टरों के पास ईलाज के लिए जाते है। मरीज को बहुत प्रकार से तनाव की स्थिति से गुजरना पड़ता है। ऐसे में मनोवैज्ञानिक डॉक्टर अपनी सहायता के लिए सहायक को रखता है ताकि वह मरीज से सभी प्रकार की जानकारी इकट्ठी करने में उसकी सहायता कर सके। प्राध्यापक द्वारा कभी–कभी मनोविज्ञान विषय के छात्रों को मनोवैज्ञानिक डॉक्टर के साथ मिलकर सहायता सभी आवश्यक कार्यो का अभ्यास सीखना चाहिए ताकि वह सहायक के कार्यों को ठीक प्रकार से समझकर, सहायक के रूप में अपनी आय कमा सके।
6. **बच्चों के व्यक्तित्व सुधारने के कार्य का विशेषज्ञ बनना**– वर्तमान समय में एकल पारिवारिक व्यवस्था होने के कारण बच्चों में संस्कारहीनता आती जा रही है। बच्चों के व्यक्तित्व का विकास मानव मूल्यों के अनुसार नहीं हो रहा है, क्योंकि वर्तमान समय में बढ़ती हुई मोबाइल व कंप्यूटर की तकनीकी ने बौद्धिक विकास में तो वृद्धि कर दी है लेकिन मानव मूल्यों का कहीं ना कहीं अभाव है। ऐसी दशा में मानव मूल्यों के विशेषज्ञ के रूप जीविका अर्जन का कार्य किया जा सकता है। प्राध्यापक द्वारा व्यक्तित्व विकास की विभिन्न शैलियों जैसे उठने–बैठने का तरीका, अच्छा वक्ता या लेखक बनने के गुण स्वयं की साज–सज्जा, कुशल

नेतृत्व करने वाला आदि गुणों को विकसित किया जाना चाहिए ताकि उसमें हर तरह का आत्मविश्वास पैदा हो और भविष्य में वह विशेषज्ञ के रूप में अपनी आय कमा सके।

7. **पारिवारिक मन–मुटाव के निपटारे का विशेषज्ञ बनना–**वर्तमान समय में आचार–विचारों में समानता न होने के कारण व स्वयं के अहम के कारण परिवारों में पति–पत्नी, सास–बहू व पिता–पुत्र के झगड़े आम बात हो गई कभी–2 ये झगड़े बहुत बड़े पैमाने पर बढ़ जाते है। ऐसी दशा में लोग बाहर की पंचायतों व मनोवैज्ञानिकों की सहायता भी लेते है। मानसिक समझ के व्यावहारिक ज्ञान की विभिन्न विधियों व परीक्षणों का अभ्यास प्राध्यापक द्वारा करवाना जाना चाहिए ताकि वह भविष्य में इन परीक्षणों व विधियों का सहारा लेकर मन–मुटाव संबंधी झगड़ों को निपटाने का कार्य विशेषज्ञ के रूप में कर सके।
8. **सुखी संतुष्ट एंव स्वस्थ जीवन पद्धति के परामर्शदाता के रूप में –**वर्तमान समय में हर कोई सुखी, संतुष्ट व स्वस्थ जीवन जीना चाहता है लेकिन तनाव इतना अधिक बढ़ गया है कि कोई भी व्यक्ति अपने घर परिवार व नौकरी से संतुष्ट नहीं है। ऐसी दशा में सुखी रहने के क्या सिद्धांत व कौन सी शैली व जीवन पद्धति को अपनाकर सुखी रहा जा सकता है, इन सभी शैलियों व तरीको का अभ्यास व्यावहारिक तौर पर सिख कर परामर्शदाता के रूप में जीविका अर्जन का कार्य करने में सक्षम हो सकता है।
9. **छोटे–बड़े उद्योगों में कर्मचारियों की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए प्रेरक का कार्य करना–** बड़ी–बड़ी कंपनियों व फैक्ट्रियों में कर्मचारियों के ऊपर अनावश्यक रूप से काम का बोझ लादा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है वे अत्यधिक तनाव के कारण ठीक प्रकार से काम नहीं कर पाते है। एक प्रेरक के रूप में उनकी समस्याओं को समझकर उनको समाधान बताना व प्रेरित करने वाले उपाय बताकर उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाने के साथ–साथ प्रेरक के रूप में जीविका कमायी जा सकती है।
10. **समाचार पत्रों, चैंनलो व पोर्टलों पर मनोविज्ञान संबंधी लेखन, विश्लेषण आदि –**वर्तमान समय में युवा पीढ़ी अत्यधिक तनाव व अवसाद से ग्रसित दिखायी देती है। ऐसी स्थिति में हर कोई व्यक्ति चाहता है कि कुछ ऐसा अच्छा पढ़ने या सुनने को मिले कि कुछ समय मन को शांति मिल सके। ऐसी स्थिति में प्राध्यापकों द्वारा छात्रों को प्रेरित करने वाले लेख लिखने हेतु अभ्यास करवाया जाना चाहिए तथा अपने ज्ञान के बल पर समय–समय पर वे समाचार पत्रों व पोर्टलों पर अपने प्रेरणात्मक लेख देकर तथा टी.वी. चैनलों में प्रेरणात्मक आप्त वचनों व आशीर्वचनों को वक्ता या लेखक के रूप में प्रस्तुत कर अपनी आय कमा सकते है।

राजनीति शास्त्र

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	सरकार की ग्रामीण विकास योजनाओं का ग्राम पंचायत के लिए कार्य करना।
2.	स्वयंसेवी संस्थाओं में सरकारी योजनाओं के लाभ पंहुचाने का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में करना।
3.	अपनी एन.जी.ओ. बनाकर ग्रामीण व नगरीय विकास के कार्य करना।
4.	जिला व पंचायत स्तर के राजनीतिज्ञों के सहायक के रूप में कार्य करना।
5.	राजनीतिक दलों व राजनीतिज्ञों के जन–सम्पर्कों का प्रबंधन करना।
6.	जन मानस की अपेक्षाओं, समस्याओं व शिकायतों का आकलन करना।
7.	सामाजिक सर्वेक्षण करने का अभ्यास।
8.	राजनीतिज्ञों व सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए भाषण लिखना।
9.	ज्वलंत विषयों पर अभियान चलाने की विशेषज्ञता।
10.	समाचार पत्रों, चैनलों व समाचार पोर्टलों के लिए राजनीतिक संबंधित समाचार एवं विश्लेषण लिखना।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **सरकार की ग्रामीण विकास योजनाओं का ग्राम पंचायत के लिए कार्य करना–** राजनीति शास्त्र पढ़ने वाले विद्याार्थी को प्राध्यापकों द्वारा पंचायतीराज अधिनियम 73वां संशोधन की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करवायी जानी चाहिए ताकि वह अपने ज्ञान का उपयोग ग्राम के विकास से संबंधित जितनी भी योजनाएँ होती है, उनको लागू करवाने में ग्राम पंचायत के मध्य, मध्स्थ की भूमिका के रूप में कार्य कर जीविका कमा सके।
2. **स्वयंसेवी संस्थाओं में सरकारी योजनाओं के लाभ पहुंचाने का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में करना–** वर्तमान समय में अनेकों स्वयं सेवी संस्थाएं सरकारी योजनाओं को लाभ पहँचाने का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में कर रही है। अनेक स्वयं सेवी संस्थाएं सामाजिक विकास व ग्रामीण विकास में अहम भूमिका निभा रही है। राजनीति विज्ञान पढ़ा हुआ छात्र प्राध्यापकों की मदद से वित्त प्रबंधन, विपणन, किसान मजदूर संगठन आदि कार्यों की जानकारी व्यावहारिक तौर पर सीख लेगा तो वह स्वयंसेवी संस्थाओं के मध्य मध्यस्थ की भूमिका निभाकर जीविका कमाने में सक्षम हो सकता है।
3. **अपनी एन.जी.ओ. बनाकर ग्रामीण व नगरीय विकास के कार्य को करना–** राजनीति विज्ञान से स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र एन.जी.ओ. बनाकर भी अपना आर्थिक व सामाजिक विकास कर सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अनेकों समस्याएँ होती है जैसे अशिक्षा, सामाजिक असमानता, पेयजल, परिवार नियोजन, बँधुआ मजदूरी, अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता आदि। अतः प्राध्यापकों को कक्षा में विद्यार्थियों को ग्रामीण समस्याओं की व्यावहारिक जानकारी उनकी समस्या व समाधान के तरीकों को समझाकर उन्हें स्वयं की एन.जी.ओ. खोलने में दक्ष बनाया जा सकता है। ताकि वे ग्रामीण क्षेत्र में विकास कार्यों में योगदान देने के साथ–साथ जीविका कमाने में भी स्वावलम्बी बन सके।
4. **जिला व पंचायत स्तर के राजनीतिज्ञों के सहायक के रूप में कार्य करना–**राजनीति शास्त्र का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी जिला व पंचायत स्तर के राजनीतिज्ञों के सहायक के रूप में कार्य कर अपनी आजीविका कमा सकते है, क्योंकि राजनीतिज्ञों को राजनीति का व्यावहारिक ज्ञान तो होता है लेकिन सैद्धांतिक ज्ञान के अभाव में वे किसी भी समस्या का विश्लेषण करने में स्वयं को असमर्थ पाते है। विषय का समुचित ज्ञान प्राध्यपाकों द्वारा दिया जाए तो वे राजनीति शास्त्र से डिग्री प्राप्त छात्रों को सहायक के रूप में उनको अपनी सेवाएं देकर स्वावलम्बी बना सकते है।
5. **राजनीतिक दलों व राजनीतिज्ञों के जन–सम्पर्कों का प्रबंधन करना–** राजनीति शास्त्र का विद्यार्थी कक्षा में राजनीतिक दलों के कार्यों व महत्व से भली–भाँति परिचित होता है और किसी भी राजनीतिज्ञ को राजनीतिक दलों के मध्य अपनी पैठ बनाने के लिए राजनीतिक दलों व जनता से जनसंपर्क की अत्यन्त आवश्यकता होती है। जनता को राजनीतिक दलों व राजनीतिज्ञों के साथ कैसे संगठित करना है? कैसे जनता के मध्य संवाद स्थापित करवाना है। इसकी व्यावहारिक समझ के बल पर विद्यार्थी जनसंपर्क विशेषज्ञ के रूप में राजनीतिज्ञों को अपनी सेवाएं देकर आजीविका कमाने में सफल हो सकता है।
6. **जनमानस की अपेक्षाओं, समस्याओं व शिकायतों का आकलन करना–**लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था में जनता को सरकार व प्रशासन से बहुत सी उम्मीदें व शिकायतें रहती है। जनता

की इन्हीं अपेक्षाओं, समस्याओं व शिकायतों को समझकर उनका आकलन करना सीखना भी एक महत्वपूर्ण काम है। यदि कक्षा में प्राध्यापकों के द्वारा इस प्रकार की समझ विद्यार्थियों में विकसित कर दी जाए तो स्नातक की डिग्री प्राप्त विद्यार्थी आकलनकर्त्ता के रूप में जीविका कमा सकता है।

7. **सामाजिक सर्वेक्षण करने का अभ्यास**—सामाजिक सर्वेक्षण के अंतर्गत जनता की सभी तरह की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक गतिविधियों के प्रति विचारों, समस्याओं व घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। राजनीति शास्त्र का विद्यार्थी न केवल राजनैतिक तौर पर अपितु सामाजिक तौर पर भी समाज में घटित होने वाली घटनाओं का यदि व्यावहारिक तौर पर कक्षा में प्राध्यापकों की मदद से तथ्यों का मूल्यांकन करना सीख लेगा तो वह भविष्य में सामाजिक सर्वेक्षण के रूप में जीविका कमाने में सफल हो सकता है।
8. **राजनीतिज्ञों व सामाजिक कार्यकत्ताओं के लिए भाषण लिखना**—लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था में राजनीतिज्ञ यानि नेता लोग व सामाजिक कार्यकर्त्ता देश का नेतृत्व करते है। जब किसी भी गतिविधि या कार्यक्रम में सामाजिक या राजनीतिक गतिविधियों संबंधी मंच संचालित करना होता है या मीडिया के समकक्ष अपने विचार रखने होते है। ये राजनीतिज्ञ व सामाजिक कार्यकर्त्ता अपने लिए भाषण तैयार करवाते है। यदि प्राध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों के अन्दर भाषण लिखने की कला विकसित कर दी जाए तो वे लेखक के रूप में जीविकोपार्जन कर सकते है।
9. **ज्वलंत विषयों पर अभियान चलाने की विशेषज्ञता**—वर्तमान समय में सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में कई ज्वलंत विषय है जैसे स्वच्छ भारत अभियान, जल संरक्षण, बेटी बचाओं व बेटी पढ़ाओं, बँधुआ मजदूरी आदि ज्वलंत मुद्दे है जिन पर कार्य करने हेतु विशेष योग्यता रखने वाले विशेषज्ञों की आवश्वकता होती है। प्राध्यापकों द्वारा कक्षा में विद्यार्थी के अन्दर विशेषज्ञ बनने के गुण विकसित कर उनका अभ्यास करवाएं। उनको व्यावहारिक तौर पर विशेषज्ञ के रूप में जीविका अर्जन हेतु सक्षम बनाया जा सकता है।
10. **समाचार पत्रों, चैनलों व समाचार पोर्टलों के लिए राजनीति संबंधित समाचार एंव विश्लेषण लिखना**—राजनीतिक क्षेत्र में अनेक ऐसे मुद्दे होते है जो कि समाचार पत्र व सोशल मीडिया पर सुर्खियों के रूप में प्रस्तुत किए जाते है। यदि विद्यार्थी को कक्षा में प्राध्यापकों की मद्द से इन ज्वलंत मुद्दों की व्यावहारिक समझ के साथ—साथ मुख्य समाचारों को बोलना या लिखना आ जाए तो वह समाचार पत्रों में लेखक के रूप में व टी0वी0 चैनलों व पोर्टलों पर वक्ता या लेखक के रूप में अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर जीविका कमाने में स्वावलम्बी हो सकता है।

रसायन विज्ञान

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	जल की शुद्धता के विभिन्न परीक्षणों को करने की विधि।
2.	वायु की शुद्धता के विभिन्न परीक्षणों को करने की विधि।
3.	मुख्य खाद्य पदार्थों दूध, तेल, घी व मसाले आदि में मिलावट के परीक्षण की विधियाँ।
4.	छोटे उद्योगों में उपकरणों के मापांकन की दक्षता।
5.	प्रदूषित जल एवं वायु से बचने की परामर्शदाता का प्रशिक्षण।
6.	आम–जन द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले उपकरणों की बैटरी के रखरखाव के बारे में परामर्शदाता बनना।
7.	छोटे रसायन उद्योगों में विश्लेषक के कार्य का प्रशिक्षण।
8.	घरों, होटलों व छात्रावासों में मक्खी–मच्छर एवं हानिकारक कीड़ों से बचाव के प्रबंधन का व्यापार।
9.	किसानों के लिए उर्वरकों आदि के विषय में परामर्शदाता बनना।
10.	समाचारपत्रों, चैनलों व पोर्टलों पर विज्ञान संबंधी लेखन, विश्लेषण व वीडियो आदि।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **जल की शुद्धता के विभिन्न परीक्षणों के करने की विधि**– वर्तमान समय में समाज को स्वच्छ पेय जल अपलब्ध करवाना सबसे बड़ी चुनौती है। अतः स्नातक स्तर पर प्राध्यापकों को कक्षा में जल को शुद्ध करने की विभिन्न विधियों व तकनीकों का सैंद्धातिक ज्ञान देने के साथ–2 उन्हें व्यावहारिक तौर पर भी अभ्यास करना सिखाना चाहिए। जल शुद्धता परीक्षण की विधियों में सर्वेक्षेष्ठ शुद्धीकरण विधि पानी को उबालकर पीना, कैंडर वाटर फिल्टर, मल्टी स्टेज शुद्धीकरण, क्लोरोनेशन हैलोजन टेबलेट, आर.ओ. सिस्टम, यूवीरेडिएशन सिस्टम, बड़े स्तर पर पानी साफ करने हेतु डी–आयोनाइजेशन व अल्ट्रा फिल्टरेशन सिस्टम आदि विधियों का व्यावहारिक ज्ञान युवा पीढ़ी को स्वरोजगार व जीविका कमाने में सफल बना सकता है।
2. **वायु की शुद्धता के विभिन्न परीक्षणों को करने की विधि**– किसी भी परीक्षण हेतु की जाने वाली निर्धारित प्रक्रिया परीक्षण विधि कहलाती है। वर्तमान समय में वायुप्रदूषण बहुत अधिक बढ़ जाने से मानव व पर्यावरण को बहुत हानि उठानी पड़ रही है। मानव स्वास्थ्य हेतु शुद्ध वायु की नितांत आवश्यकता है। रसायन विज्ञान के विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में प्राध्यापकों द्वारा वायु को शुद्ध करने हेतु विभिन्न विधियों व तकनीकों का अभ्यास करवाया जाना चाहिए।
3. **मुख्य खाद्य पदार्थों दूध, तेल, घी व मसाले आदि में मिलावट के परीक्षण की विधियां**– वर्तमान समय में खाने–पीने की हर चीज में अशुद्धता या मिलावट की जा रही है। व्यापार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा व मुनाफाखोरी के कारण दूध, घी, तेल व मसालों में अवांछित पदार्थों को डालकर मिलावट की जाती है जिसका हमारे स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ता है। अतः कक्षा में स्नातक स्तर पर रसायन विज्ञान पढ़ने वाले छात्रों को सभी खाद्य पदार्थों की जांच करने की विधियां सिखायी जानी चाहिए जैसे कि लाल मिर्च में मिलावट को पानी में डालकर देखा जा सकता है। हल्दी की जांच हेतु हाइड्रोक्लोरिक एसिड व पानी, इसी तरह से सभी खाद्य पदार्थों को मिलावट को परखने की विभिन्न विधियां व तकनीक है। अतः प्राध्यापकों को प्रयोगशाला में विद्यार्थियों को इस सब विधियों का अभ्यास कर सभी पदार्थों में मिलावट की जांच करनी सिखानी चाहिए ताकि भविष्य में वह इन विधियों के व्यावहारिक ज्ञान के बल जीविका कमाने में सफल हो सके।
4. **छोटे उद्योगों में उपकरणों के केलिब्रेशन की दक्षता –** छोटे उद्योगों को चलाने हेतु विभिन्न प्रकार के उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन उपकरणों के खराब होने पर उद्योगों को भारी नुकसान होने की संभावना रहती है। अतः प्राध्यापकों को कक्षा में किसी भी उपकरणों पर मापन ईकाईयों के निर्धारण की प्रक्रिया का आकलन करना सिखाया जाना चाहिए जैसे कि थर्मामीटर एक मापक उपकरण है इस उपकरण द्वारा तापमान मापने भी विधि सिखाना तथा विभिन्न आई.टी.ई. सेंटर में भी इन उपकारणों को सुचारू रूप चलाने व केलिब्रेशन करने की तथा कोई खराबी होने पर उन्हें ठीक करने की ट्रेनिंग दी जाती है। इस प्रकार की ट्रेनिंग करना विद्यार्थियों के लिए रोजगार का बेहतरीन विकल्प बन सकता है।
5. **प्रदूषित जल एवं वायु से बचने के परामर्शदाता का प्रशिक्षण –** प्रदूषित जल व हवा पर्यावरण की प्रमुख समस्या हैं वर्तमान समय में मानव प्रदूषित जल व वायु के कारण बहुत सी बीमारियों से ग्रस्त होता जा रहा है। यदि स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों को कक्षा में दूषित जल व वायु से बचने का निदान व विधियां सिखा दी जाए और सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण

कोर्स, जो इस उद्देश्य हेतु चलाए जाते है उनका ज्ञान विद्यार्थी को प्राप्त हो तो वह प्रशिक्षण प्राप्त कर, जल व वायु के शुद्ध करने के तरीकों को सीखकर, परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवाएँ देकर जीविका कमाने में सक्षम हो सकता है।

6. **सामान्यजन द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले उपकरणों की बैटरी के रखरखाव के बारे में परामर्शदाता –** वर्तमान समय में बाजार में बहुत से प्रकार की बैटरी उपलब्ध है जैसे कि वाहनों में प्रयुक्त होने वाली बैटरी, लाईट जाने की अवस्था में इनवर्टर में उपयोग होने वाली बैटरी, अंधेरे स्थानों में रोशनी हेतु भी बैटरी का प्रयोग किया जाता है। रसायन विज्ञान पढ़ने वाले विद्यार्थियों को स्नातक स्तर पर इन विभिन्न प्रकार की बैटरियों के रखरखाव की विधियों व तकनीकों का ज्ञान कक्षा में प्राध्यापकों द्वारा दिया जाना चाहिए जैसे कि निरंतर वर्तमान चार्जिंग विधि, लगातार वोल्टेज चार्जिंग विधि, निश्चित प्रतिरोध के साथ लगातार वोल्टेज चार्जिंग, फ्लोटिंग चार्जिंग विधि आदि का अभ्यास सिखाया जाना चाहिए ताकि छात्र भविष्य में इस जानकारी का उपयोग, आम जनता के मध्य में परामर्शदाता के रूप में करके जीविका कमाने में कर सके।
7. **छोटे रसायन उद्योगों में एनालिस्ट के कार्य का प्रशिक्षण –**रसायनिक उद्योग में वे सब उद्योग आते है जोकि औद्योगिक रसायनों का उत्पादन करते है। ये उद्योग कच्चे माल जैसे तेल, प्राकृतिक गैस, वायु, जल, धातु व खनिज आदि उत्पादों से अपना माल प्राप्त करते है। तेल व वसा रसायन उद्योग, इत्र और फ्लेवर, कृषि रसायन आदि उद्योग है जिनकी विधिवत जानकारी व ज्ञान विज्ञान पढ़ने वाले छात्रों को विशेषज्ञ बनाने के अवसर प्रदान कर सकता है। विभिन्न सरकारी व निजी कंपनियां भी इन रसायन उद्योगों से संबंधित प्रशिक्षण व ट्रेनिंग प्रदान करती है। अतः युवा प्रशिक्षण प्राप्त कर एनालिस्ट के रूप में जीविका कमाने में सफल हो सकता है।
8. **घरों, होटलों व छात्रावासों में मक्खी–मच्छर एवं हानिकारक कीड़ो से बचाव के प्रबंधन का व्यापार –** भारत की जलवायु विविध है इसी विविधता के कारण मौसम व एक विशेषासमयावधि में घरों, होटलों व छात्रावासों में मक्खी व मच्छर पनपते रहते है कई बार गंदगी, प्रदूषण व खड़े पानी की वजह से भी विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ पैदा करने वाले मच्छर पनप जाते है जिनकी रोकथाम हेतु अनेक प्रकार से रसायनों का उपयोग किया जाता है। रसायन विज्ञान पढ़ने वाले छात्रों को प्राध्यापकों द्वारा कीट प्रबंधन से संबंधित सभी रसायनों की व्यावहारिका जानकारी दी जानी चाहिए। जैसे –मक्खी व मच्छरों को मारने हेतु काला हिट, लाल हिट व बहुत से रासयनिक उर्वरक भी बाजार में उपलब्ध है। यदि युवा इन सब उर्वरकों व रसायनों के उपयोग का सैंद्धातिक व व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लेगा तो वह थोडी से पूंजी निवेश से, स्वयं का व्यापार कर भी आय प्राप्त कर सकता है।
9. **किसानों को उर्वरकों आदि के विषय में परामर्शदाता बनना –** वर्तमान समय में किसानों को खेतों में विभिन्न प्रकार के रसायनों व उर्वरको का प्रयोग करते हैं। स्नातक स्तर पर रसायन विज्ञान पढ़ने वाले विद्यार्थियों को कक्षा में विभिन्न रसायनों व उर्वरकों की जानकारी व विस्तृत ज्ञान व्यावहारिक तौर पर दिया जाना चाहिए ताकि वे किसानों को बता सके कि कौन–सी फसल हेतु कौन–कौन से उर्वरक व रसायन उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं तथा मृदा की उर्वरता को ध्यान में रखकर उर्वरक व रसायन की मात्रा का ज्ञान देना। इस ज्ञान के आधार पर

किसानों के मध्य उनकी पैदावार बढ़ाने के संदर्भ में परामर्शदाता के रूप में आय कमाने में सफल बन सकते है।

10. **समाचारपत्रों, चैनलों व पोर्टलों पर विज्ञान संबंधी लेखन, विश्लेषण व वीडियो आदि–** रसायन विज्ञान पढ़ने वाले विद्यार्थी स्नातक की डिग्री के पश्चात, यदि रसायन विज्ञान से संबंधित विषयों जैसे– जल की शुद्धता, वायु की शुद्धता, खाद्य पदार्थों में मिलावट के तरीकों व विधियों को सीखना तथा उपकरणों, बैटरी के रख–रखाव व कीट प्रबंधन संबंधी रसायनों आदि का ज्ञान कक्षा में व्यावहारिक तौर पर प्राध्यापकों की मदद से प्राप्त कर लेता है तो वह भविष्य में बेरोजगार होने की स्थिति में विभिन्न टी.वी. यू–टूब चैनलों व रेडियों शो के माध्यम से वीडियो बनाकार व पत्र–पत्रिकाओं में लेख लिखकार वक्ता/ लेखक के रूप में रोजगार प्राप्त कर आय कमाने में स्वाबलम्बी बन सकता है।

लोक प्रशासन

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	सरकार की ग्रामीण विकास योजनाओं का ग्राम पंचायत के लिए कार्य करना।
2.	स्वयंसेवी संस्थाओं में सरकारी योजनाओं के लाभ पहुँचाने का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में करना।
3.	अपनी एन. जी. ओ. बनाकर ग्रामीण व नगरीय विकास के कार्य करना।
4.	जिला व पंचायत स्तर के राजनीतिज्ञों के सहायक के रूप में कार्य करना।
5.	राजनीतिक दलों व राजनीतिज्ञों के जनसंपर्कों का प्रबंधन करना।
6.	जनमानस की अपेक्षाओं समस्याओं व शिकायतों का आकलन करना।
7.	सामाजिक सर्वेक्षण करने का अभ्यास।
8.	राजनीतिज्ञों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए भाषण लिखना।
9.	ज्वलंत विषयों पर अभियान चलाने की विशेषज्ञता।
10.	समाचार पत्रों चैनलों व समाचार पोर्टल के लिए स्थानीय निकायों संबंधित समाचार एवं विश्लेषण लिखना और वीडियों बनाना।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **सरकार की ग्रामीण विकास योजनाओं का ग्राम पंचायत के लिए कार्य करनाः–** ग्रामीण विकास जहाँ एक ओर कृषि, पशुपालन और कुटीर उद्योगों के विकास पर निर्भर है। इन सभी आधारभूत संसाधनों की आवश्यकता हेतु सरकार द्वारा चलाई गई बहुत सी ग्रामीण विकास योजनाओं का व्यावहारिक ज्ञान कक्षा में सीखकर स्नातक डिग्री प्राप्त विद्यार्थी मध्यस्थ की भूमिका के रूप में जीविका अर्जन कर सकता है।
2. **स्वयंसेवी संस्थाओं में सरकारी योजनाओं के लाभ पहुँचाने का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में करनाः–** ग्रामीण विकास में स्वयंसेवी संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। स्वयंसेवी संस्थाएँ संगठित कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक सेवाएँ प्रदान करती है। इस क्षेत्र में खादी ग्रामोद्द्योग संघ का नाम उल्लेखनीय है। इस संगठनों के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रशिक्षण, वित्त प्रबंधन, विपणन, किसान मजदूर संगठनों की व्यावहारिक तौर पर जानकारी देकर उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने हेतु स्वावलम्बी बनाया जा सकता है।
3. **अपनी एन. जी. ओ. बनाकर ग्रामीण व नगरीय विकास के कार्य करनाः–** एन. जी. ओ. संस्थाएं ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में संगठित रूप में विकास कार्यों व सामाजिक सेवा के कार्य करती है। यदि स्नातक डिग्री प्राप्त विद्यार्थियों को एन.जी.ओ. से संबंधित सभी कार्यों जैसे ग्रामीण साक्षरता, बंजर भूमि विकास, आधुनिक प्रौद्योगिकी का विकास, मूलभूत अधिकारों के प्रति जागरूकता, टीकाकरण, परिवार नियोजन, बंधुआ मजदूरी आदि बहुत से कार्यों को करने का व्यावहारिक ज्ञान यदि विद्यार्थी कक्षा में प्राप्त कर लेगा तो वह एन. जी.ओ. संस्थाओं में भागीदारी देकर जीविका कमाने में सक्षम हो सकेगा।
4. **जिला व पंचायत स्तर के राजनीतिज्ञों के सहायक के रूप में कार्य करनाः–**जिला व पंचायत स्तर के राजनीतिज्ञ बहुत सी ग्रामीण विकास योजनाओं को बनाने व करवाने का काम किसी मध्यस्थ या सहायक व्यक्ति को सौंपते है जिन्हें इस योजनाओं की पूरी तरह से जानकारी हो। कक्षा में विद्यार्थियों को राजनीतिज्ञों के सहायक व मध्यस्थ बनने का काम सिखाकर भी जीविका अर्जन करने में स्वावलम्बी बनाया जा सकता है।
5. **राजनीतिक दलों व राजनीतिज्ञों के जनसंपर्कों का प्रबंधन करनाः–** वर्तमान सामय में प्रत्येक राजनीतिक दल को जनसंपर्क की जरूरत होती है। बिना जनसंपर्क के कोई भी राजनीतिक दल अपनी स्थिति को सख्त नहीं बना सकता। वर्तमान समय में यदि जनता के साथ संवाद स्थापित करना हो तो इस कार्य हेतु जनसंपर्क विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ती है। अतः कक्षा में व्यावहारिक तौर पर यदि विद्यार्थियों में एक कुशल विशेषज्ञ के सभी गुणों को विकसित कर दिया जाए तो स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र विशेषज्ञ के रूप में अपनी जीविका कमा सकते हैं।
6. **जनमानस की अपेक्षाओं समस्याओं व शिकायतों का आकलन करनाः–** मनुष्य जीवन में मानव संघर्ष करते हुए सुख–दुख रूपी अनेक उतार–चढ़ावों को पार करता है। ऐसे में सरकार व प्रशासन से उसे बहुत सी उम्मीदें व शिकायतें होती है। लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था में जनता की अपेक्षाओं, समस्याओं व शिकायतों का आकलन करना सीखना भी एक महत्त्वपूर्ण काम है। यदि प्राध्यापकों द्वारा कक्षा में इस प्रकार की समझ विद्यार्थियों में विकसित कर दी जाए जो स्नातक डिग्री प्राप्त विद्यार्थी व्यावहारिक जीवन मूल्यों के प्रति जागरूक बनकर एक अच्छा इंसान व नागरिक होने की भूमिका निभा सकता है।

7. **सामाजिक सर्वेक्षण करने का अभ्यासः—**सामाजिक सर्वेक्षण एक वैज्ञानिक अध्ययन है, एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में घटित होने वाली घटनाओं के विषय में विश्वसनीय तथ्यों का विस्तृत संकलन किया जाता है। सर्वेक्षक के रूप में घटनाओं के तथ्यों को कैसे संकलित करना है, का व्यावहारिक ज्ञान विद्यार्थी कक्षा में सीख ले तो वे सर्वेक्षक के रूप में जीविका अर्जन का कार्य कर सकते है।

8. **राजनीतिज्ञों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए भाषण लिखनाः—**राजनीतिज्ञ सामाजिक कार्यकर्त्ता देश का नेतृत्व करते है। वर्तमान समय में इनके द्वारा कहे गए शब्द समाज को प्रभावित करते है। ऐसे में इन राजनीतिज्ञों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए भाषण तैयार करने की कला को विकसित कर विद्यार्थी को लेखक के रूप में जीविका अर्जन करने में स्वावलम्बी बनाया जा सकता है।

9. **ज्वलंत विषयों पर अभियान चलाने की विशेषज्ञताः—** वर्तमान समय में सामाजिक व राजनीति के क्षेत्र में कई ज्वलंत विषय है। स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया सबसे महत्त्वपूर्ण स्वच्छता अभियान है। इसमें भारत देश के लगभग 50,000,00 कर्मचारियों ने भाग लिया था। प्रत्येक ज्वलंत मुद्दे के लिए विशेष योग्यता वाले विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। ऐसे में विद्यार्थियों में विशेषज्ञ के गुणों को विकसित करने का अभ्यास व्यावहारिक तौर पर सिखाकर विशेषज्ञ के रूप में आजीविका प्राप्त करने में सक्षम बनाया जा सकता है।

10- **समाचार पत्रों चैनलों व समाचार पोर्टल के लिए स्थानीय निकायों संबंधित समाचार एवं विश्लेषण लिखना और वीडियों बनानाः—** इस वैज्ञानिक युग में पत्रकारिता भी आधुनिक हो गई है। स्थानीय निकायों जैसे पंचायत नगर पालिका या नगर निगम के विशेष सामाजिक, आर्थिक, राजनीति के ज्वलंत मुद्दो पर, समाचारों का आकलन करने की जानकारी सीखना। इस जानकारी का उपयोग विद्यार्थी समाचारों के विश्लेषण, टी.वी. चैनलों व समाचार पत्रों में लेख/वीडियों के रूप में कर, आय प्राप्त कर सकते है।

वनस्पति शास्त्र

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	वर्मीकम्पोस्ट (केंचुओं) के उपयोग से खाद बनाने का स्वरोजगार।
2.	मशरूम की खेती करने का स्वरोजगार।
3.	फूलों की खेती करने का स्वरोजगार।
4.	औषधीय पौधों की खेती का स्वरोजगार।
5.	पार्कों की लैंडस्केप प्लानिंग का परामर्शदाता।
6.	पार्कों की लैंडस्केप प्लानिंग का स्वरोजगार।
7.	घरों में लॉन व किचन गार्डन का परामर्श व ठेके में कार्य करना।
8.	जैविक खेती के विषय में परामर्शदाता।
9.	सब्जियों व फलों व उत्पादन को विस्तार देने के लिए परामर्श।
10.	समाचार पत्रों, चैनलों व पोर्टलों पर वनस्पति शास्त्र संबंधी लेखन, विश्लेषण व वीडियों आदि।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **वर्मीकम्पोस्ट (केंचुओं) के उपयोग से खाद बनाने का स्वरोजगार**–वर्तमान समय में वर्मीकम्पोस्टिंग एक लाभदायक उद्यम व रोजगार के रूप में स्नातक डिग्री प्राप्त युवाओं के लिए बढ़िया विकल्प है। पिछले दस वर्षों में भारत में एक संगठन ने 2000 से अधिक किसानों व संस्थानों को पारंपरिक रसायनों से जैविक उर्वरकों, वर्मीकम्पोस्ट पर कार्य करने हेतु प्रेरित किया है। इस तकनीक के अंतर्गत लगभग 1000 किसानों ने अंगूर, अनार और केले के लिए मृदा संशोधन के रूप में वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग करके रासायनिक उर्वरकों का उपयोग 90 प्रतिशत तक कम कर दिया है। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को वर्मीकम्पोस्टिंग तकनीक के उपयोग व विधि को उचित प्रकार से व्यावहारिक तौर पर खेतों में अभ्यास करवाकर करना सिखाएँ ताकि वे इस व्यवसाय को भविष्य में स्वरोजगार हेतु उपयोग में ला सके।
2. **मशरूम की खेती करने का स्वरोजगार**– कवक प्रजातियों से संबंधित मशरूम एक पौष्टिक शाकाहारी व्यंजन है जिसमें उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीन पाया जाता है। वर्तमान में भारतीय घरों में मशरूम की सब्जी आमतौर पर बनाई जाती है, परंतु इस सब्जी का उत्पादन मौसमी फसल के रूप में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों में होता है। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को मशरूम की सभी किस्मों जैसे सफेद मशरूम, धान–पुआल मशरूम व सीप मशरूम की किस्मों से अवगत करवाने के साथ–साथ, यह फसल किस क्षेत्र विशेष में किन पर्यावरणीय परिस्थितियों में उत्पादित की जाती है, का व्यावहारिक ज्ञान खेतों में फसल के रूप में उत्पादित करना सिखाना, ताकि विद्यार्थी भविष्य में मशरूम की खेती का स्वरोजगार कर आय प्राप्त कर सके।
3. **फूलों के खेती करने का स्वरोजगार** – वर्तमान समय में शहरों व महानगरों में विवाह, पार्टियों व अन्य कार्यक्रमों में फूलों से सजावट आम बात हो गई है। सामाजिक व धार्मिक उद्देश्यों से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों में फूल न केवल सौंदर्य, अपितु सजावट हेतु भी उपयोग में लाए जाते है। अतः फूलों की खेती व सजावटी पौधों की खेती व्यावहारिक व्यवसाय के रूप में विस्तार पा रही है। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को फूलों की खेती करने से संबंधित सभी विधियों व तकनीकों का अभ्यास करना सिखाएँ ताकि वे अपनी स्वयं की जमीन उपलब्धता होने पर, थोड़े से पूंजी निवेश के साथ फूलों की खेती को व्यवसाय के रूप में आरंभ कर रोजगार प्राप्त कर सके।
4. **औषधीय पौधों की खेती का स्वरोजगार**– वर्तमान समय में बीमारियों की अधिकता व अंग्रेजी दवाईयों के दुष्प्रभाव के कारण आर्युवैदिक जीवन पद्धति व आर्युवैदिक दवाओं से इलाज की परंपरा को महत्त्व दिया जा रहा है। अतः प्राध्यापकों को वनस्पति छात्र के विद्यार्थियों को विभिन्न औषधीय पौधों के नाम, पहचान के साथ–साथ उन औषधीय पौधों के औषधीय गुणों से भली–भाँति परिचित करवाना चाहिए तथा विद्यार्थियों को औषधीय पौधों की खेती हेतु भी प्रेरित किया जाना चाहिए तथा विभिन्न आर्युवैदिक कंपनियों दवाईयों के निर्माण हेतु कच्चे माल की आपूर्ति इन लोगों से कर सके। औषधीय पौधों की खेती एक बेहतर व्यवसाय के रूप में उभर के सामने आ रही है। भविष्य में विद्यार्थी अपने ज्ञान का उपयोग इस क्षेत्र में करके विभिन्न

आर्युवैदिक कंपनियों जैसे वैद्यनाथ, डाबर, पंतजलि आदि को कच्चे माल की आपूर्ति कर रोजगार प्राप्त कर, आय कमाने में सक्षम हो सकते है।

5. **पार्कों की लैंडस्केप प्लानिंग का परामर्शदाता –** बगीचों व पार्कों की लेंडस्केप प्लानिंग के अंर्तगत पार्कों के सौंदर्य, बागवानी, पौधों की बनावट व सजावट व रखरखाव के साथ–साथ लैंडस्केप डिजाइन से संबंधित वास्तुकला, सिविल इंजीनियरिंग, भूमि सर्वेक्षण, लैंडस्केप कॉन्ट्रेक्टिंग आदि सभी कार्य आते है। यदि वनस्पति शास्त्र से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को प्राध्यापकों द्वारा इन सभी तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान व विधियाँ सिखा दी जाए तो वह पार्कों की लैंडस्केप प्लानिंग के परामर्शदाता के रूप में कार्य कर जीविका कमाने में सफल हो सकते है।
6. **पार्कों की लैंडस्केप प्लानिंग का स्वरोजगार–** वर्तमान समय में शहरों व महानगरों में लोगों की सुविधाओं व फिटनेस उद्देश्य को ध्यान में रखकर बड़े–बड़े पार्कों का निर्माण नगर निगम प्रशासन के द्वारा किया जाता है, लेकिन भूनिर्माण व पार्कों की डिजाइनिंग में एक लैंडस्केप आर्किटेक्ट की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में कैरियर की दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है। यदि प्राध्यापकों द्वारा वनस्पति शास्त्र के विद्यार्थियों को इस व्यवसाय संबंधी औपचारिक शिक्षा जैसे पौधों, झाड़ियों, घास व पौधों के बारे में व्यापक ज्ञान के साथ–साथ उन्हें कीटनाशक व सिंचाई प्रणाली का अनुभव आदि सभी दिशा–निर्देशों का ज्ञान दिया जाना चाहिए ताकि वह भविष्य में पार्कों की लैंडस्केप प्लानिंग से संबंधित ज्ञान का उपयोग स्वरोजगार हेतु कर सके।
7. **घरों में लॉन व किचन गार्डन का परामर्श व ठेके में कार्य करना–** वर्तमान समय में लॉन और किचन गार्डन का व्यवसाय दिन–प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा हैं। यदि वनस्पति शास्त्र के विद्यार्थियों को प्राध्यापकों द्वारा इस विषय में संबंधित व्यावहारिक ज्ञान उचित प्रकार से प्रदान किया जाए तो वे भविष्य में बागवानी विशेषज्ञ, पुष्पविज्ञानी व पॉमोलोजिस्ट बनकर जीविका प्राप्त कर सकते है। बागवानी क्षेत्र में तो निजी व सार्वजनिक कंपनिया नौकरियाँ भी उपलब्ध करवाती है।
8. **जैविक खेती के विषय में परामर्शदाता –** जैविक खेती के तरीकों को अपनाकर, पारंपरिक खेती की तुलना में अधिक पैदावार को प्राप्त किया जाता है। अतः प्राध्यापकों को चाहिए कि वे कक्षा में विद्यार्थियों को जैविक खेती के अंतर्गत फसल उत्पादकता, फसल अवशेषों, पशु–खाद, हरी खाद, जैव उर्वरकों के उपयोग द्वारा मिट्टी की उत्पादकता को बढ़ाने के सभी तरीकों व विधियों से अवगत करवाएं तथा किन–किन तरीकों व कौन–सी उर्वरकों व खरपतवार के उपयोग से पैदावार को बढ़ाया जा सकता है। सभी तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान दें ताकि वे भविष्य में उत्पादन बढ़ाने की इस तकनीक की जानकारी सामान्य किसानों को देकर परामर्शदाता के रूप में जीविका कमाने में सक्षम बन सके।
9. **सब्जियों व फलों व उत्पादन को विस्तार देने के लिए परामर्श –**वर्तमान समय में फलों व सब्जियों का उत्पादन का ज्ञान प्राप्त कर, वनस्पति छात्र का विद्यार्थी न केवल अपने शहर में अपितु फलों व सब्जियों के अधिकाधिक उत्पादन को निर्यात करके भी आजीविका कमा सकता है। अतः प्राध्यापकों को कक्षा में विद्यार्थियों को इस व्यवसाय को अपनाने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। अतः क्षेत्र विशेष में उगाए जाने वाले सभी फलों और सब्जियों उनके रखरखाव

व कटाई आदि का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाना चाहिए ताकि वे इस ज्ञान का उपयोग किसानों के लिए परामर्शदाता के रूप में कर सके।

10. **समाचार पत्रों, चैनलों व पोर्टलों पर वनस्पति शास्त्र संबंधी लेखन, विश्लेषण व वीडियों आदि–** समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, टेलीविजन–चैनलों, ऑनलाइन पत्रिकाओं, ऑनलाइन वीडियों व रेडियों शो के माध्यम से भी, विज्ञान विषय के विद्यार्थी वनस्पति शास्त्र में उपलब्ध रोजगार के अवसरों को समझ सकते है। विभिन्न विषयों पर अपने ज्ञान के साथ इन उपरोक्त स्त्रोतों की मद्द से वे अपने कैरियर को बना सकते है। विभिन्न प्रकार के ज्ञान, तकनीकों व विधियों के उपयोग की जानकारी वीडियों के रूप में बनाकर चैनलों पर अपलोड करना तथा पत्र–पत्रिकाओं में लेख लिखकर वक्ता/ लेखक के रूप में भी व्यक्ति आजीविका कमाने में सफल हो सकता है।

वाणिज्य

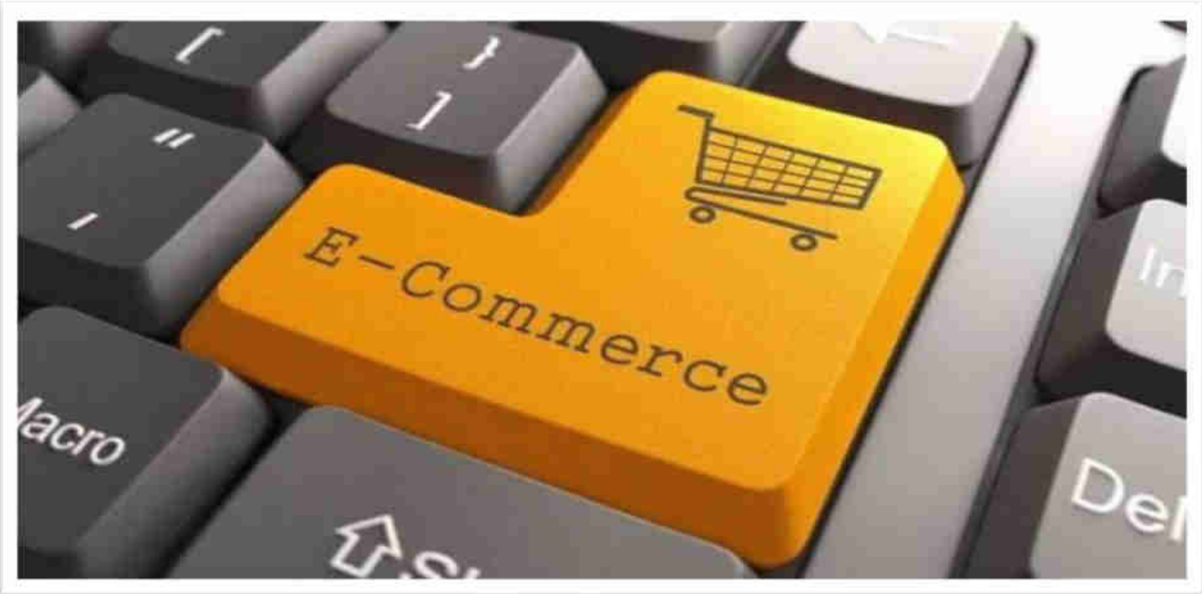

<u>**जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास**</u>

1.	व्यक्तियों, परिवारों, लघु उद्योगों एवं छोटे व्यापारियों की आयकर रिटर्न भरने का अभ्यास।
2.	अपने राशि से स्टॉक मार्केट में निवेश करना।
3.	फसल बीमा करने व करवाने का व्यवसाय।
4.	लघु उद्योग एंव छोटे व्यापारियों का GST रिटर्न भरने का अभ्यास।
5.	स्टॉक मार्केट में निवेश के लिए एजेंट का काम करना।
6.	समाचार पत्रों, टेलिविजन चैनलों व ऑनलाईन पोर्टल के लिए वित्त संबंधित समाचार एवं विश्लेषण लिखना।
7.	जीवन बीमा कंपनियों के एजेंट के काम का अभ्यास।
8.	छोटे व्यापारियों एवं लघु उद्योगों का लेखा–जोखा लिखने का कार्य करना।
9.	वाहन बीमा कंपनियों के एजेंट का अभ्यास।
10.	जन सामान्य को विभिन्न संस्थानों के ऋण संबंधित परामर्श देना और सहायक बनना।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **व्यक्तियों, परिवारों, लघु उद्योगों एवं छोटे व्यापारियों की आयकर रिटर्न भरने का अभ्यास**:– व्यक्तियों, परिवारों, लघु उद्योगों एवं छोटे व्यापारियों की आयकर रिटर्न भरने के अभ्यास हेतु कक्षा में, उससे संबंधित सभी व्यक्तियों, लघु उद्योगों और छोटे व्यापारियों के परफोर्मों के द्वारा उनको भरना सिखाना, जिससे विद्यार्थी इन्कम टैक्स भरने में निपुण होकर स्वावलम्बी बन सकें।
2. **लघु उद्योग एवं छोटे व्यापारियों का जी.एस.टी. रिटर्न भरने का अभ्यास**:–वस्तु एवं सेवाकर (जी.एस.टी.) भारत सरकार की नई अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था है। वर्तमान टैक्स संरचना को कैसे सुधार करना है, इस व्यवस्था को समझाना क्योंकि वस्तु निर्माण से लेकर अंतिम उपभोक्ता तक कर कई चरणों के माध्यम से गुजरता है। पहला चरण में कच्चे माल को खरीदना, दूसरे चरण में उत्पादन एवं निर्माण तथा सामग्री के भंडारण की व्यवस्था । इसके बाद उत्पादित माल उत्पाद रिटेलर या फुटकर विक्रेता के पास आता है और अंतिम चरण में रिटेलर उपभोक्ता को माल बेचता है। इस व्यवस्था को विद्यार्थियों को समझाकर जी.एस.टी. के विषय में व्यावहारिक ज्ञान देकर निपुण बनाया जा सकता है।
3. **जीवन बीमा कंपनियों में एजेंट के काम का अभ्यासः–** जीवन बीमा कंपनियाँ वर्तमान समय में एक बड़े स्तर पर व्यवसाय के रूप मे कार्य कर रही है और सबसे बड़ी भूमिका एजेंट के रूप में कार्य करने की हैं और एजेंट बनने के लिए विद्यार्थियों को जीवन बीमा व्यवसाय से संबंधित व्यावहारिक ज्ञान देकर उनको सक्षम बनाया जा सकता है और भविष्य में एजेंट के रूप में या सलाहकार के रूप में अपनी जीविका कमाने में सक्षम हो सकते है।
4. **वाहन बीमा कंपनियों के एजेंट का अभ्यासः** – वाहन बीमा को सामान्य बीमा कंपनियों के रूप में जाना जाता है। आजकल वाहनों की संख्या लगातार बढ़ने की वजह से आज वाहन बीमा कंपनियों को ऐसे व्यक्तियों की जरूरत है जोकि सामान्य बीमा के कार्य संबंधी जानकारी रखते हो ऐसी जानकारी विद्यार्थियों को कक्षा में सिखाकर उन्हें सामान्य बीमा संबंधी व्यावहारिक ज्ञान देकर जीविकोपार्जन में निपुण बनाया जा सकता हैं।
5. **अपनी राशि से स्टॉक मार्किट में निवेश करनाः** – स्टॉक मार्किट एक ऐसा मार्किट है जहाँ कंपनियों के शेयर खरीदे व बेचे जाते है। स्टॉक मार्किट के बारे में अपना पैसा किस कंपनी में लगाया जाए किस में नहीं लगाया जाए, किसमें जोखिम ज्यादा है किस में कम है, विद्यार्थियों को सही मार्किट स्थिति के तरीकों का आकलन व्यावहारिक रूप से सिखाना, ताकि विद्यार्थी अपना स्टॉक मार्किट में निवेश करने के ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर जीविका कमाने में सक्षम बन सके।
6. **स्टॉक मार्किट में निवेश के लिए एजेंट का काम करनाः** – स्टॉक मार्किट वह जगह होती है जहां शेयर, Deventures, Mutual Fund, Derivaties वायदा व अन्य प्रतिभूतियां को स्टॉक Exchange के माध्याम से खरीदा व बेचा जाता है। भारत में BSC (Bombay Stock Exchange) NSC (National Stock Exchange) मुख्यतः दो Exchange है। स्टॉक मार्किट के व्यापार में सभी प्रकार की प्रतिभूतियों में निवेश किस प्रकार किया जाता है, विद्यार्थियों को Mode Of Deventures, Mutual Fund की व्यावहारिक जानकारी देकर जीविकोपार्जन में स्वावलम्बी बनाया जा सकता है।

7. **छोटे व्यापारियों व लघु उद्योगों का लेखा–जोखा करनाः** – छोटे व्यापारियों व लघु उद्योगों का लेखा–जोखा लिखने के लिए Accounting की प्रारंभिक लेखन से लेकर लाभ–हानि व आर्थिक स्थिति जानने में विद्यार्थियों को व्यावहारिक रूप से स्वावलम्बी बनाना।
8. **जनसामान्य को विभिन्न संस्थाओं के ऋण संबंधित परामर्श देना और सहायक बनानाः**– आजकल बैंकों वित्तिय कंपनियों और सरकारी योजनाएं भिन्न–2 प्रकार से ऋण देने के लिए योजना बनाती है। उन योजनाओं के द्वारा ऋण संबंधी प्रक्रिया को व्यावहारिक रूप से परफोर्मों के द्वारा विद्यार्थियों को जानकारी देना व उन्हें इस योग्य बनाना कि ऋण संबंधी जानकारियों को हासिल कर सके। उससे अपनी जीविका कमाने के योग्य बन सके।
9. **फसल बीमा करने व करवाने का व्यवसायः** – फसल बीमा योजना किसानों को होने वाले नुकसान से बचाने हेतु सभी आवश्यक जरूरी दस्तावेज़ों की जानकारी व परफोर्मों को भरने का तरीका व योजना के फायदों का व्यावहारिक ज्ञान विद्यार्थियों को देकर जीविकोपार्जन हेतु स्वावलम्बी बनाना।
10. **समाचार पत्रों, टेलिविजन चैनलों व ऑनलाईन पोर्टल के लिएः** – विद्यार्थियों को समाचार पत्रों, टेलिविजन चैनलों से संबंधित जानकारी किन–2 माध्यमों से सीखी जा सकती है और उनमें वित्तिय संबंधी कार्य विश्लेषण कर का अभ्यास सिखाकर उन्हें आनलाईन पोर्टल व टेलिविजन चैनलों में डाटा को अपलोर्ड करना सिखाकर सक्षम बनाया जा सकता है। इस जानकारी का उपयोग विद्यार्थी भविष्य में आय कमाने में कर सकेंगे।

शिक्षा

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	एक या दो विषयों का घरों में जाकर ट्यूटर बनना।
2.	ट्यूशन/कोचिंग के लिए केन्द्र चलाना।
3.	बालक/बालिका देखभाल केन्द्र का संचालन करना।
4.	कैरियर काउंसलर का कार्य करना।
5.	बच्चों व युवाओं में अवसाद व तनाव मुक्ति के लिए परामर्शदाता बनना।
6.	विद्यालयों के प्रबंधन का विशेषज्ञ बनना।
7.	स्मार्टकक्षा बनाने का विशेषज्ञ बनना।
8.	शिक्षा में प्रयोग होने वाले उपकरणों का व्यापार।
9.	पाठ्यपुस्तकें एवं सहायक पुस्तकों के लेखन का कार्य करना।
10.	पुस्तकों के क्रय–विक्रय का कार्य।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **एक या दो विषयों का घरों में जाकर ट्यूटर बनना** – प्रत्येक विद्यार्थी स्नातक पर 4 या 5 विषयों का गहन अध्ययन करता है और किसी एक या दो विषय में उसकी अच्छी पकड़ व रूचि होती है अतः प्राध्यापकों द्वारा विद्यार्थी को विषय विशेष में और अधिक निपुण बनाया जाना चाहिए ताकि छात्र भविष्य में स्वतंत्र रूप से विषय विशेष का टयूटर बनकर जीविका कमाने में सफल हो सके।
2. **ट्यूशन/ कोचिंग के लिए केन्द्र चलाना**– वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा का युग है। हर कोई विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करना चाहता है। प्राध्यापकों को कक्षा में प्रतियोगी परीक्षाओं में आने वाले विषयों के व्यावहारिक ज्ञान में छात्रों को निपुण बनाना चाहिए ताकि वे भविष्य में विषय विशेष में निपुणता व ज्ञान प्राप्त होने पर थोड़े से पूंजी निवेश के साथ अपना कोचिंग सेन्टर या ट्यूशन सेन्टर खोलकर आय प्राप्त कर सके।
3. **बालक/बालिका देखभाल केन्द्र का संचालन करना**– शिक्षा विषय से डिग्री प्राप्त विद्यार्थी को बाल मनोविज्ञान की अच्छी समझ हो और प्राध्यापकों की मद्द से यदि वह व्यावहारिक तौर पर किसी भी बालक/बालिका देखभाल केन्द्र में जाकर सेन्टर की देखभाल संबंधी गतिविधियों का अवलोकन करें तो वह भविष्य में थोड़े से पूंजी निवेश से घर पर या किराये पर जगह लेकर बालक/बालिका देखभाल केन्द्र को खोल सकता है व इसके संचालन से अपनी आय अर्जित कर सकता है।
4. **कैरियर काउंसलर का कार्य करना** – स्नातक डिग्री प्राप्त छात्र यदि महाविद्यालय स्तर पर कैरियर कांउसलर प्राध्यापक की मद्द से विभिन्न कोर्सों व प्रतियोगी परिक्षाओं से संबंधित सभी पक्षों का गहन अध्ययन कर व्यावहारिक जानकारी का ज्ञान प्राप्त कर लें तो वह इस क्षेत्र में अपना कैरियर चुनकर सफलता प्राप्त कर सकता है और कांउसलर के तौर पर जीविका कमाने में सक्षम बन सकता है।
5. **बच्चों व युवाओं में अवसाद व तनाव मुक्ति के लिए परामर्शदाता बनना**– वर्तमान समय में विभिन्न तरह के माहौल व परिस्थितियों के मध्य आम आदमी, युवा व बच्चे परीक्षा या प्रतिस्पर्धा के समय अवसाद व तनाव से ग्रस्त दिखाई देते है। ऐसी परिस्थितियों में उनकी सोचने समझने की शक्ति लगभग खत्म सी हो जाती है। यदि स्नातक डिग्री प्राप्त विद्यार्थी कक्षा में प्राध्यापकों की सहायता से अवसाद दूर करने की सभी विधियों व तकनीकों का अभ्यास करना सीख लेगा तो वह परामर्शदाता के रूप में जीविका कमाने में सफल हो सकता है।
6. **विद्यालयों के प्रबंधन का विशेषज्ञ बनना**–विद्यालय व महाविद्यालय प्रबंधन के विभिन्न आयाम होते है जैसे दाखिला करने से लेकर विद्यालय प्रशासन संबंधी विभिन्न तरह के रजिस्टरों की देख–रेख का कार्यभार संभालना यदि स्नातक डिग्री प्राप्त विद्यार्थी इन सभी प्रबंधन के कार्यों को विद्यालयों में नियुक्त प्रंबधकों की मद्द से सीख लेगा तो वह विद्यालय प्रबंधक के रूप में जीविकोपार्जन कर सकता है।
7. **स्मार्ट कक्षा बनाने का विशेषज्ञ बनना**–आजकल विद्यालयों व महाविद्यालयों में विद्यार्थियों को सिखाने के लिए विभिन्न तरह की तकनीकों की सहायता ली जाती है। स्मार्ट कक्षा भी इसी

तकनीक का हिस्सा है। विभिन्न तरह की कंपनियां वर्तमान समय में स्मार्ट कक्षा संबंधी सॉफ्टवेयर उपलब्ध करवा रही है। यदि छात्र इन सभी तकनीकों की जानकारी व्यावहारिक तौर पर सीख लें तो वह व्यवसाय के तौर पर स्मार्ट कक्षा बनाने के विशेषज्ञ के रूप में आय कमा सकते है।

8. **शिक्षा में प्रयोग होने वाले उपकरणों का व्यापार–** विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों जैसे भूगोल रसायनशास्त्र प्राणी विज्ञान, भौतिकी, गणित आदि बहुत से विषयों का व्यावहारिक ज्ञान समझाने हेतु विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। यदि स्नातक स्तर डिग्री प्राप्त विद्यार्थी विज्ञान व अन्य विषयों से संबंधित प्रयोग में आने वाले उपकरणों की जानकारी प्राध्यापकों की मद्द से सीख लेगा तो वह इसे व्यवसाय के रूप अपना कर सफल हो सकता है।
9. **पाठ्यपुस्तकें एवं सहायक पुस्तकों के लेखन का कार्य करना–**प्रतिस्पर्धा के इस युग में प्रतियोगी परीक्षा के लिए छात्र बेसिक पुस्तकों के साथ–2 विभिन्न तरह की सहायक पुस्तकों का सहारा भी लेते है। इन पुस्तकों में विवरणात्मक पुस्तकें तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्नों वाली पुस्तकें विद्यार्थियों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध होती है। प्राध्यापकों को चाहिए कि अगर कक्षा में कुछ ऐसे छात्र है जिनकी लेखन में रूचि व विषय की गहरी समझ है तो वे अच्छे लेखक बन सकते है तो उन्हें पुस्तकें लिखने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि वे रूचिनुसार सरल भाषा में पुस्तकें लिखकर रॉयल्टी के रूप में अपनी जीविका कमा सके।
10. **पुस्तकों के क्रय–विक्रय का कार्य–** एन.सी.ई.आर.टी. व प्रतियोगी परीक्षा की पुस्तकों के अलावा भी प्राईवेट पब्लिकेशन्स के द्वारा विभिन्न विषयों की विविध ज्ञान संबंधी पुस्तकें उपलब्ध करवायी जाती है। इन पुस्तकों को प्राईवेट विद्यालय व विद्यार्थी लेना प्रसन्द करते है। अतः विभिन्न प्रकाशकों से संपर्क कर डिग्री प्राप्त छात्र पुस्तकों के क्रय–विक्रय संबंधी व्यवसाय को अपना कर जीविका अर्जन का कार्य कर सकता है।

संस्कृत

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	जनमानस को प्रचलित श्लोकों के शुद्ध उच्चारण अर्थ सहित व्याख्या एवं प्रयोग विधि सिखाना।
2.	सामान्य परिवारों में सत्यनारायण की कथा, रामायण पाठ, गरूड़ पुराण पाठ इत्यादि अनुष्ठान करवाना।
3.	कुंडली बनाना, मिलाना व दोष निवारण के उपाय सुझाना।
4.	लघु व मध्यम पूजा स्थलों–मंदिरों आदि का प्रबंधन।
5.	मंदिर में पुजारी का कार्य।
6.	संस्कृत भाषा से हिन्दी में अनुवाद कार्य।
7.	संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद कार्य।
8.	संस्कृत सन्भाषण का प्रशिक्षक बनना।
9.	दैनिक भविष्य व मौसम की जानकारी देना।
10.	संस्कृत भाषा में समाचार, लेख, विश्लेषण और पटकथा आदि का लेखन बनना।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **चुने हुए मंत्रों का उच्चारण, अर्थ, प्रयोग व वर्तमान संदर्भ** – प्रत्येक भारतीय अपने इष्ट को स्मरण करते हुए मंत्र जाप कर सामाजिक व आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने की भावना रखता है। शुद्ध उच्चारण व शुद्ध भाव से की गई मंत्र–प्रार्थना निश्चित रूप से प्रभावकारी होती है। गायत्री मंत्र, मृत्युजय मंत्र आदि चुने हुए मंत्रों का उच्चारण, अर्थ, प्रयोग व विधियों की जानकारी का ज्ञान वर्तमान के संदर्भ में देना, जीविकोपार्जन में उपयोगी हो सकता है।
2. **चुने हुए श्लोकों का उच्चारण, अर्थ, प्रयोग व वर्तमान संदर्भ**– प्रातः से रात्रि तक, प्रत्येक कार्य में विशिष्ट श्लोकों का उच्चारण भारतीय परंपरा का अंग है। दीप प्रज्वलन, सरस्वती वन्दना, नवग्रह श्लोक, प्रातः स्मरण, गणपति वन्दना, शिव स्तुति के शुद्ध उच्चारण, अर्थ, प्रयोग व विधियों की जानकारी का ज्ञान वर्तमान संदर्भ में देना, जिससे विद्यार्थी आय कमाने में स्वावलंबी बन सके।
3. **ज्योतिष–कुण्डली निर्माण, कुण्डली मिलान व दोषनिवारण** – भारतीय पद्धति से विवाह कार्य में कुण्डली निर्माण व कुण्डली मिलान, समाज में आज भी प्रचलित है। दोष निवारण हेतु अनेक उपाय भी बताए जाते है। इस कार्य में कुशल संस्कृतज्ञ इस माध्यम से जीविकोपार्जन तो कर ही सकता है, साथ ही समाज में समरसता व परस्पर अनुकूलता उत्पन्न कर ज्योतिष विद्या की सार्थकता प्रमाणित करता है तथा अपने ज्ञान का उपयोग जीविका अर्जित करने में भी समर्थ बनता है।
4. **अनुवाद कार्य–संस्कृत से हिन्दी व हिन्दी से संस्कृत** – संस्कृत से हिन्दी व हिन्दी से संस्कृत में–अनुवाद कार्य में कुशल संस्कृत का विद्यार्थी समाज में आज भी वांछित है। अनुवाद कार्यों के माध्यम से जीविकोपार्जन कर वर्तमान में संस्कृत की उपयोगिता भी प्रमाणित हो जाती है। अतः यदि छात्रों को हिन्दी व संस्कृत भाषा पर पूर्णतया समझ, ज्ञान रूचि, व पकड़ है तो वह हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद कर और संस्कृत भाषा का हिन्दी में अनुवाद कर, अनुवादक के रूप में कार्य कर रोजगार प्राप्त कर सकता है।
5. **संस्कृत समाचार–संस्कृत समाचार लेखन प्रशिक्षण** – संस्कृत समाचार न केवल आकाशवाणी व दूरदर्शन पर अपनी विशिष्टता रखते हैं, अपितु आज भी संस्कृत भाषा की जीवन्तता को प्रबलता से प्रमाणित करते है। संस्कृत का विद्यार्थी समाचार लेखन की विद्या में प्रशिक्षित होकर जीविकोपार्जन की ओर अग्रसर हो सकता है। संस्कृत को सामाजिकता व व्यावहारिकता से जोड़कर सर्वग्राह्य व सर्व सुलभ बनाया जाना आज की परम आवश्यकता है। अतः प्राध्यापकों को कक्षा में संस्कृत भाषा में रूचि रखने वाले छात्रों को संस्कृत भाषा में किसी भी विषय पर लेख लिखने का अभ्यास कार्य करवाना चाहिए ताकि वे भविष्य में समाचार लेखक के रूप में आय प्राप्त कर सके।
6. **संस्कृत सम्भाषण शिक्षण** – संस्कृत सम्भाषण शिविरों के माध्यम से संपूर्ण भारत में युवा वर्ग में संस्कृत के प्रति एक उत्साह का वातावरण बनता है। दस दिनों में सरल व प्रत्यक्ष पद्धति से संस्कृत सम्भाषण में दक्षता प्राप्त कर विद्यार्थी आत्मविश्वास से भर कर जीविकोपार्जन के क्षेत्र में सफल हो रहे है। भारतीय संस्कृत की विशेषताओं को आत्मसात् करने में संस्कृत सम्भाषण बहुत उपयोगी व सार्थक उपाय है।

7. **संस्कृत में पटकथा लेखन–** संस्कृत माध्यम से आदि शंकराचार्य, श्रीमद्भगवद्गीता, अभिज्ञान–शाकुन्तलम्, मृच्छकटिक आदि पटकथाएं चलचित्र के माध्यम से लोकप्रिय हुई है। संस्कृत में पटकथा लेखन का प्रशिक्षण, विद्यार्थियों में विशेष योग्यता उत्पन्न कर जीविकोपार्जन में अत्यन्न सहायक हो सकता है।
8. **संस्कृत में अनुष्ठान व संस्कार कर्म–** भारत वेद भूमि है। वैदिक अनुष्ठान व संस्कार कर्म कथा–प्रवचन सब संस्कृत माध्यम से आज भी हो रहे हैं। आवश्वकता है आज का संस्कृत का अध्येता विद्यार्थी इन सबमें प्रशिक्षित किया जाए। इस कार्य में दक्ष विद्यार्थी जीविकोपार्जन कर ओरों के लिए आदर्श स्थापित कर सकता है।
9. **गीता पाठ व गीता यज्ञ प्रशिक्षण–** विश्व मंच पर 'श्रीमद्भगवद्गीता' भारतीय मनीषा की सर्वोत्तम पहचान है। गीता पाठ व गीता यज्ञ की अक्षुण्ण परम्परा हमारा गौरव बिन्दु है। इस माध्यम से गीताज्ञान के प्रसार के साथ–साथ सम्मानपूर्वक जीविकोपार्जन की अपार सम्भावना है।
10. **मन्दिर प्रबन्धन व शिक्षण –** भारत वर्ष अध्यात्म भूमि है। प्रत्येक गांव व प्रत्येक नगर में छोटे–बड़े अनेकों शिव मन्दिर, विष्णु मन्दिर, राम मन्दिर, कृष्ण मन्दिर और हनुमान मन्दिर सभी बिन्दुओं के श्रद्धा केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित है। गणपति मन्दिरों की विशाल परम्परा भारत की पहचान है। इन मन्दिरों का प्रबंधन–प्रशिक्षण संस्कृत विद्यार्थी को दिया जाए तो उसके जीविकोपार्जन में यह अत्यंत महत्तपूर्ण उपाय सिद्ध होगा।

समाज शास्त्र

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	ग्रामों एवं शहरों की सामाजिक रचना की नवीनतम जानकारी एकत्रित करने में दक्षता (मार्किटिंग संस्था, राजनीतिक दलों एवं स्वयंसेवी संस्थायों हेतु)।
2.	लघु एंव मध्यम स्तर के सामाजिक सर्वेक्षणों की योजना, डाटा संग्रहण, विश्लेषण एवं रिपोर्ट प्रस्तुति में दक्षता प्राप्त करना।
3.	सरकार की ग्रामीण विकास योजनाओं का ग्राम पंचायत के लिए कार्य करना।
4.	स्वयंसेवी संस्थाओं में सरकारी योजनाओं का लाभ पहुँचाने का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में करना।
5.	अपनी एन.जी.ओ. बनाकर ग्रामीण व नगरीय विकास के कार्य करना।
6.	जिला व पंचायत स्तर के राजनीतिज्ञों के सहायक के रूप में कार्य करना।
7.	जनमानस की अपेक्षाओं, समस्याओं व शिकायतों का आकलन करना।
8.	राजनीतिज्ञों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए भाषण लिखना।
9.	संभ्रात व्यक्तियों का सोशल मीडिया का लेखन एवं प्रबंधन।
10.	समाचार पत्रों, चैनलों व समाचार पोर्टलों के लिए सामाजिक विषयों पर समाचार एवं विश्लेषण लिखना।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **ग्रामों एवं शहरों की सामाजिक रचना की नवीनतम जानकारी एकत्रित करने में दक्षता (मार्किटिंग संस्था, राजनीतिक दलों एवं स्वयंसेवी संस्थायों हेतु)–** समाजशास्त्र के विद्यार्थियों को कक्षा में प्राध्यापकों द्वारा ग्रामों एवं शहर की सामाजिक रचना के साथ–2 उनकी शिक्षा उनकी विचारधारा व उनके विकास के स्तर को जाँचने हेतु जो भी तकनीक विधियाँ होती है, सिखाई जानी चाहिए ताकि वे ग्रामों व शहरों के आर्थिक, सामाजिक विकास की जानकारी के आधार पर, सरकार द्वारा चलाई गई विकास परियोजनाओं की सभी नीतियों को उनके स्तर के आधार पर लागू करवाने में सक्षम बन सके। डाटा संग्रहकर्त्ता के रूप में भी वे स्वयंसेवी संस्थाओं व राजनीतिज्ञों के लिए कार्य कर सकते है।
2. **लघु एवं मध्यम स्तर के सामाजिक सर्वेक्षणों की योजना, डाटा संग्रहण, विश्लेषण एवं रिपोर्ट प्रस्तुति में दक्षता प्राप्त करना–** सरकार द्वारा ग्रामों व शहरों के विकास हेतु सरकार द्वारा चलायी गयी विभिन्न योजनाओं से कितने लोगों को लाभ पहुँचा है या सभी लोगों को इनकी जानकारी है, या नहीं। ऐसे सामाजिक सर्वेक्षणों के परर्फोमें तैयार करना यदि विद्यार्थी सीख लें तो वह भविष्य में डाटा संग्रहकर्त्ता के रूप में योजनाओं के विश्लेषक के रूप में कार्य कर जीविका कमाने में स्वावलंबी बन सकते है।
3. **सरकार की ग्रामीण विकास योजनाओं का ग्राम पंचायत के लिए कार्य करना–** समाजशास्त्र पढ़ने वाले विद्यार्थी को कक्षा में प्राध्यापकों द्वारा ग्रामों से संबंधित पंचायीराज अधिनियम के तहत आने वाली सभी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध करवायी जानी चाहिए। दूसरी ओर कृषि, पशुपालन और कुटीर उद्योगों से संबंधित आधारभूत संसाधनों की आवश्यकता पूर्ति भी सरकार, ग्रामीणों को लॉन बगैरा देकर करती है। इन सबका व्यावहारिक ज्ञान होने, युवा पीढ़ी ग्राम पंचायत के मध्यस्थ की भूमिका के रूप में कार्य कर जीविका कमाने में सफल हो सकती है।
4. **स्वयंसेवी संस्थाओं में सरकारी योजनाओं का लाभ पहुँचाने का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में करना–** वर्तमान समय में अनेकों स्वयंसेवी संस्थाएं ग्रामों के विकास हेतु कार्य कर रही है। समाचारपत्र पढ़ने वाला विद्यार्थी ग्रामों के आर्थिक व सामाजिक विकास हेतु इन योजनाओं का लाभ स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से ग्रामीणों तक पहुँचाकर, मध्यस्थ की भूमिका निभाने का कार्य कर सकता है। यदि वह प्राध्यापकों की मदद से वित्त प्रबंधन, विपणन, किसान मजदूर संगठनों जैसे कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त कर लेगा तो वह जीविका कमाने में सक्षम हो सकता है।
5. **अपनी एन.जी.ओ. बनाकर ग्रामीण व नगरीय विकास के कार्य करना–**एन.जी.ओ. संस्थाएं ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों के आर्थिक व सामाजिक विकास हेतु कार्य करती है। वह ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण साक्षरता, उनकी सोच व विचारधारा, उनके विकास के उद्देश्य को जानकार व समझकर, विभिन्न प्रकार की योजनाएँ लागू करती है जिसमें परिवार नियोजन, बँधुआ मजदूरी, जल संरक्षण लघु उद्योगों व कुटीर उद्योगों की जानकारी आदि आते है। यदि इन सब कार्यों को करने का व्यावहारिक ज्ञान छात्र कक्षा में प्राध्यापकों की मदद से सीख लेगा तो वह एन.जी.ओ. संस्थाओं में भागीदारी देकर स्वावलंबी बन सकेगा।
6. **जिला व पंचायत स्तर के राजनीतिज्ञों के सहायक के रूप में कार्य करना–**समाजशास्त्र पढ़ने वाले विद्यार्थी जिला पंचायत स्तर के राजनीतिज्ञों के सहायक के रूप में कार्य कर आजीविका

कमा सकते है क्योंकि समाजशास्त्र के विद्यार्थियों को समाज की संरचना संबंधी सैंद्धातिक व व्यावहारिक होता है। समाजशास्त्र विषय को पढ़कर वे प्राध्यापकों द्वारा जिला पंचायत स्तर की सभी ग्रामीण योजनाओं को, कक्षा में प्राध्यापकों की मदद से क्रियान्वित करने का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लेते है तो सहायक की भूमिका निभाकर जीविका अर्जन कर सकते है।

7. **जनमानस की अपेक्षाओं, समस्याओं व शिकायतों का आकलन करना—** लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था में जनमानस को सरकार व प्रशासन से बहुत सी उम्मीदें होती है। समाजशास्त्र पढ़ने वाले विद्यार्थियों को प्राध्यापकों को आकलन करना सिखाना जाना चाहिए। यदि इस प्रकार की समझ प्राध्यापकों द्वारा, उनमें विकसित कर दी जाती है तो वे स्नातक की डिग्री के पश्चात आकलनकर्त्ता या विश्लेषक के रूप में जीविका कमाने में सफल हो सकते है।
8. **राजनीतिज्ञों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के लिए भाषण लिखना—**लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था में राजनीतिज्ञ व सामाजिक कार्यकर्त्ता समय—2 पर समाज के विकास से संबंधित गतिविधियों को उद्घोषणा हेतु मंच पर आकर भाषण देते है या मीडिया के समकक्ष अपने विचार रखते है। यदि समाजशास्त्र पढ़ने वाले विद्यार्थियों, को प्राध्यापकों द्वारा कक्षा में समाज के लोगों की विचारधारा को समझने की समझ का विकास कर दिया जाए और भाषण लिखने की कला में निपुण बना दिया जाए तो वे सामाजिक कार्यकर्त्ताओं व राजनीतिज्ञों के लिए भाषण लिखकर जीविका अर्जन कर सकते है।
9. **संभ्रात व्यक्तियों का सोशल मीडिया का लेखन एवं प्रबंधन—** वर्ममान समय में बड़े—2 राजनेता लोग व व्यवासायिक लोग अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने हेतु सोशल मीडिया का सहारा लेते है तथा अपने मान सम्मान व यश को बढ़ाने हेतु वे बड़े—2 महापुरूषों व धर्मगुरूओं के विचार भी अपने लेखन में शामिल करते है ताकि समाज में उनके विचारों को देखकर उनकी प्रतिष्ठा बढ़े यदि समाजशास्त्र पढ़ने वाला विद्यार्थी प्राध्यापकों की मदद से इस प्रकार के लेखों को लिखना व उनका प्रबंधन करने का ज्ञान अर्जित कर लेगा तो वह इस कार्य के माध्यम से भी आय प्राप्त करने में सक्षम हो सकेगा।
10. **समाचार पत्रों, चैनलों व समाचार पोर्टलों के लिए सामाजिक विषयों पर समाचार एवं विश्लेषण लिखना—**समाज में अनेक ऐसे विषय व मुद्दे होते है, जिन्हें समाचार पत्रों व सोशल मीडिया पर प्रमुखता के साथ उभारा जाता है। यदि कक्षा में प्राध्यापकों द्वारा विद्यार्थी को समाज कल्याण व समाज विकास संबंधी मुद्दों पर लेख हेतु प्रेरित किया जाए व उनके ज्ञान को परखते हुए, उन्हें समाचारों के समाधान हेतु विभिन्न प्रकार के वीडियों चैनलों हेतु बनाने का प्रशिक्षण प्रदान कर दिया जाए तो वे समाचार पत्र व पत्रिकाओं में लेखन के रूप में, टी.वी. चैनलों पर वक्ता के रूप, में अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर जीविका कमाने में सफल हो सकते है।

हिन्दी

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने की क्षमता।
2.	कंप्यूटर पर हिन्दी में लेख संबंधी तैयार करने की दक्षता।
3.	हिन्दी में बोले हुए शब्दों की कंप्यूटर पर टंकण करने की दक्षता।
4.	कार्यालयों में हिन्दी में पत्राचार व टिप्पणी लिखने की दक्षता।
5.	अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद की दक्षता।
6.	हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद की दक्षता।
7.	संभ्रांत व्यक्तियों का सोशल मीडिया का लेखन एवं प्रबंधन।
8.	हिन्दी में वेबसाईट पोर्टल इत्यादि बनाने की दक्षता।
9.	मंच संचालक व उद्‌घोषक के कार्य में दक्षता।
10.	लेखक व समीक्षक के रूप में जीवनयापन।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने की क्षमता** – महाविद्यालय में विद्यार्थियों को व्यावहारिक तौर पर हिन्दी का कार्य कंप्यूटर पर करने में सक्षम बनाना, इसके लिए प्राध्यापकों को चाहिए कि वे बेसिक स्तर पर हिन्दी के वेब पोर्टलस व सॉफ्टवेयर की जानकारी देकर उन्हें अभ्यास से करना सिखाएं, ताकि वे कंप्यूटर पर हिन्दी कार्य करने में सक्षम हो सके। ऐसी जानकारी भविष्य में जीविकोपार्जन में उपयोगी हो सकती है।
2. **कंप्यूटर पर हिन्दी में लेख संबंधी तैयार करने की दक्षता** – विद्यार्थियों को विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लेख लिखने संबंधी प्रोत्साहन देने हेतु उन्हें व्यावहारिक ज्ञान देना कि किस प्रकार से वे विभिन्न फॉन्टस का प्रयोग कर कंप्यूटर पर लेख इत्यादि टाईप कर अपना कैरियर बना सकते है।
3. **हिन्दी में बोले हुए शब्दों की कंप्यूटर पर टंकण करने की दक्षता** – हिन्दी में बोले हुए शब्दों की कंप्यूटर पर टंकण करने की दक्षता के विकास हेतु देवनागरी लिपि के विभिन्न सॉफ्टवेयर आजकल उपलब्ध है, उन सभी सॉफ्टवेयरों की जानकारी देकर हम विद्यार्थियों की टंकण संबंधी दक्षता का विकास कर सकते है।
4. **कार्यालयों में हिन्दी में पत्राचार व टिप्पणी लिखने की दक्षता** – कार्यालयों में हिन्दी में पत्राचार व टिप्पणी लिखने की दक्षता को विकसित करने हेतु विद्यार्थियों को पत्राचार के विभिन्न रूपों को व्यावहारिक रूप में सिखाना ताकि कार्यालयों में पत्राचार के स्वरूप को समझकर क्लर्क के रूप में अपना कैरियर बना सके। कार्यालयी टिप्पणी कैसे, कितने शब्दों में तैयार करनी है, इन सब का व्यावहारिक ज्ञान छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।
5. **अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद की दक्षता** – हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद की दक्षता का विकास कर भी विभिन्न रोजगार के अवसर खोले जा सकते है। आजकल दवाईयों तथा प्रत्येक उत्पाद पर अंग्रेजी में ही लिखा जाता है। ग्रामीण जनता को उत्पाद की विस्तृत जानकारी देने के लिए अनुवाद ही सहायक है। इस प्रकार से विद्यार्थी अनुवादक के क्षेत्र में भी जीविका अर्जन कार्य कर सकता है।
6. **हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद की दक्षता** – अनुवाद का काम सिर्फ लिखने व पढ़ने तक सीमित नहीं है। प्राध्यापकों को चाहिए कि विद्यार्थियों को किसी भी भाषा के मूलज्ञान की समझ पूर्णतः विकसित कर उन्हें अनुवाद करने संबंधी गुण सिखाना कि किस तरह से अंग्रेजी भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद कर अनुवादक के रूप में अपनी पहचान बना सकता है।
7. **संभ्रांत व्यक्तियों का सोशल मीडिया का लेखन एवं प्रबंधन** – वर्तमान समय में सोशल मीडिया का वर्चस्व होने के कारण संभ्रांत व्यक्तियों को दिन–प्रतिदिन संवाद हेतु एक मर्यादित व उपयुक्त भाषा की आवश्यकता होती है अतः स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावहारिक ज्ञान में भाषा कुशलता के साथ–2 उनकी लेखन शैली को विकसित करना जीविकोपार्जन में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।
8. **हिन्दी में वेबसाईट पोर्टल इत्यादि बनाने की दक्षता** – वर्तमान समय में अंग्रेजी भाषा में तो पोर्टल व वेबसाईट उपलब्ध है लेकिन यदि विद्यार्थियों को हिन्दी में भाषा की देवनागरी लिपि के माध्यम से हिन्दी भाषा के वेबसाईट व पोर्टल बनाने का व्यावहारिक ज्ञान जैसे शुद्ध लेखन व पत्राचार की जानकारी, सरकारी पोर्टलों का सही उपयोग की जानकारी देकर उन्हें

जीविकोपार्जन के योग्य बनाया जा सकता है। अनुवाद कार्यों के माध्यम से जीविकोपार्जन कर वर्तमान में हिन्दी की उपयोगिता भी प्रमाणित हो जाती है।

9. **मंच संचालक व उद्घोषक के कार्य में दक्षता** – वैश्वीकरण के इस युग में अच्छे वक्ता व भाषा पर पकड़ रखने वाले विशेषज्ञों की आवश्यकता अति महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विभिन्न मंचों पर आज का विद्यार्थी अपनी भाषा कुशलता को विकसित कर विभिन्न क्षेत्रों में एंकर मंच संचालक व उद्घोषक के रूप में जीविकोपार्जन कर सकता है।
10. **लेखक व समीक्षक के रूप में जीवनयापन** – हिन्दी भाषी विद्यार्थी वर्तमान समय में भाषा के व्यावहारिक स्तर के ज्ञान की प्राप्त करने के बाद यदि समाज की स्थिति का भावात्मक स्तर पर मूल्यांकन करें व साहित्य में रूचि रखने वाले छात्र लेखक, कवि व समीक्षक के रूप जीविकोपार्जन कर सकते है।

होटल एवं पर्यटन

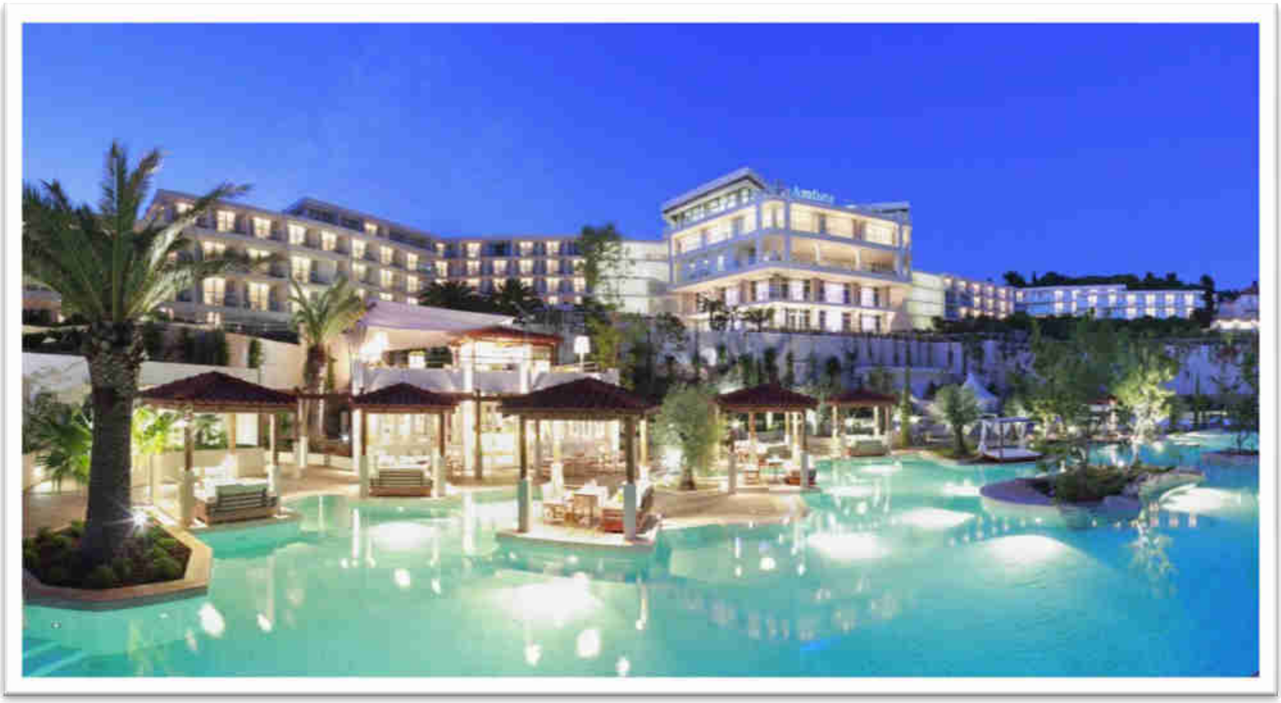

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास

1.	मध्यम वर्गीय भोजनालय में मैनेजर का कार्य सीखना।
2.	हॉस्टल व होटलों के मैनेजर का कार्य सीखना।
3.	स्थानीय पकवानों को पकाने की विशेषज्ञता प्राप्त करना।
4.	सामाजिक अवसरों पर कैटरिंग का व्यवसाय करना।
5.	ऑनलाइन होटलों एवं धर्मशालाओं में रहने के लिए बुकिंग का कार्य करना।
6.	तीर्थयात्रा व पर्यटन यात्रा प्रबंधन का विशेषज्ञ बनना।
7.	पेईंग गेस्ट की व्यवस्था करने का व्यवसाय करना।
8.	यात्रियों के लिए बस रेल एवं हवाई जहाज की बुकिंग की सेवाएं का व्यवसाय।
9.	अपना रेस्टोरेंट या अपना होटल चलाने हेतु प्रशिक्षित करना।
10.	समाचार पत्रों चैनलों में समाचार पोर्टल के लिए होटल व पर्यटन संबंधित विश्लेषण लिखना और वीडियो बनाना।

जीविका उपार्जन के लिए अभ्यास – व्याख्या

1. **मध्यम वर्गीय भोजनालय में मैनेजर का कार्य सीखना**–कैरियर की दृष्टि से होटल इंडस्ट्री एक उपयुक्त क्षेत्र है। कम पूंजी की लागत से छोटे भोजनालय अथवा मध्यम वर्गीय भोजनालय में कार्य करने का प्रशिक्षण यदि विद्यार्थी कक्षा में प्राप्त करने के साथ–साथ, यदि इन भोजनालयों में व्यावहारिक तौर पर कार्य करने का अभ्यास करें तो उचित प्रशिक्षण व ज्ञान प्राप्त होने पर वह मैनेजर के रूप में जीविका अर्जित कर सकता है।
2. **हॉस्टल व होटलों के मैनेजर का कार्य सीखना**–किसी भी होटल के कार्यभार को अच्छी तरह से संभालना ही होटल मैनेजमेंट कहलाता है। होटलों में ग्राहकों को तरह–तरह की सुविधाएं व सेवाएं प्रदान करना भी होटल मैनेजमेंट का एक हिस्सा है। यदि विद्यार्थी होटल मैनेजमेंट से संबंधित विभिन्न कोर्सो जैसे डिप्लोमा प्रोग्राम, अंडर ग्रैजुएट कोर्स, पोस्ट ग्रेजुएशन एंड डिप्लोमा कोर्स आदि के माध्यम से बेसिक जानकारी प्राप्त करने के बाद यदि विभिन्न तरह के होटलों में इस कार्य को प्रशिक्षण अभ्यास से प्राप्त कर लेगा तो वह अपनी आजीविका कमाने में स्वावलम्बी बन सकेगा।
3. **स्थानीय पकवानों को पकाने की विशेषज्ञता प्राप्त करना**–वर्तमान समय में छोटे भोजनालयों, होटलों व हॉस्टलों में विशेष प्रकार के व्यंजनों की माँग रहती है। कुछ स्थानीय व परम्परागत पकवानों को पकाने की विशेषज्ञता प्राप्त करके अपने व्यवसाय को शुरू किया जा सकता है। कक्षा में विद्यार्थी इस प्रकार का प्रशिक्षण व्यावहारिक तौर पर प्राप्त कर विभिन्न व्यँजनों को बनाने में निपुणता हासिल करके भी जीविका अर्जन कर सकते है।
4. **सामाजिक अवसरों पर कैटरिंग का व्यवसाय करना**–हमारे समाज में विभिन्न अवसरों पर जैसे विवाह, शादियों, जन्मदिन पार्टी, जगराते आदि में कैटरिंग के सामान की मांग बहुत अधिक रहती है। यदि विद्यार्थी कैटरिंग के सामान को तैयार करने का प्रशिक्षण कक्षा में प्राप्त कर लेगा तो वह इस कार्य को व्यवसाय के रूप में अपना कर जीविका अर्जन का कार्य कर सकता है।
5. **ऑनलाइन होटलों एवं धर्मशालाओं में रहने के लिए बुकिंग का कार्य करना**–वर्तमान समय में पर्यटक यात्री व सैलानी अधिकाधिक सुविधाएँ प्राप्त करना चाहता है। तो किसी भी स्थान पर घूमने जाने से पहले वह अपनी सुविधानुसार होटलों व धर्मशालाओं में अग्रिम बुकिंग करवा देता है ताकि उसे किसी भी परेशानी का सामना न करना पड़े। तो भारतीय बाजार में यह व्यवसाय भी जीविकोपार्जन का बढ़िया माध्यम है यदि होटल मैनेजमेंट में डिग्री प्राप्त करने वाला विद्यार्थी इस क्षेत्र में होटल व धर्मशालाओं में ऑनलाईन बुकिंग संबंधी कार्य को सीख ले तो आजीविका कमाने में स्वावलम्बी बन सकता है।
6. **तीर्थ यात्रा व पर्यटन यात्रा प्रबंधन का विशेषज्ञ बनना**–हमारे देश में लोगों की बड़ी धार्मिक आस्था है जिसके फलस्वरूप बहुत से लोग मनोरंजन के उद्देश्य से तीर्थयात्रा व पर्यटन यात्रा करने में रूचि रखते है। इन तीर्थ यात्रियों के लिए भोजन, बस तथा ठहरने की व्यवस्था आदि कार्यों का प्रशिक्षण यदि विद्यार्थी सीख लेगा तो वह पर्यटन यात्रा प्रबंधक के रूप में अपनी आजीविका कमा सकते हैं।

7. **पेइंग गेस्ट की व्यवस्था करने का व्यवसाय करना–** पेइंग गेस्ट आमतौर पर पी.जी. के नाम से प्रसिद्ध है। यदि व्यक्ति के पास अपना अच्छा बड़ा घर है तो वह पी.जी. खोलकर व व्यावसायिक तौर पर इस कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार प्राप्त कर सकता है।
8. **यात्रियों के लिए बस रेल एवं हवाई जहाज की बुकिंग की सेवाओं का व्यवसाय–** इस व्यवसाय को ट्रेवल एजेंसी के द्वारा किया जाता है। भारत में टूर एंड ट्रेवल एजेंसी का बड़ा उद्योग है। हवाई जहाज की टिकट, रेलटिकट, होटल टिकट बुंकिंग का कार्य यदि विद्यार्थी कक्षा में कम्प्यूटर व लैपटॉप पर व्यावहारिक तौर पर अभ्यास कर बनाना सीख लें तो वह कम लागत से भी स्वयं का व्यवसाय शुरू कर जीविका अर्जित कर सकता है।
9. **अपना रेस्टोरेंट और होटल चलाना –** भारत में रेस्टोरेंट और होटल का बिजनेस बहुत अधिक तेजी से बढ़ रहा है। यदि होटल व रेस्टोरेंट की सर्विस व क्वालिटी अच्छी हो तो आपको ग्राहक अवश्य ही मिल जाएंगें। डिग्री स्तर पर इस विषय के विद्यार्थी को विभिन्न रेस्टोरेंट व होटलों की विजिट करके काम को बारीकी से सीखने का अभ्यास करना चाहिए जब छात्र इस क्षेत्र विशेष से संबंधित सभी समस्याओं का ज्ञान व्यावहारिक तौर पर सीख व समझ लेगा तो वह एक व्यवसाय के रूप में इस कार्य को करने में सक्षम बन सकेगा।
10. **समाचार–पत्रों चैनलों में समाचार पोर्टल के लिए होटल में पर्यटन से संबंधित सार एवं विश्लेषण लिखना और वीडियो बनाना–** भारत में होटल और पर्यटन के क्षेत्र में काफी अवसर है, इससे संबंधित जानकारियाँ समाचार पत्रों और चैनलों पर अपलोड की जा सकती है। यदि विद्यार्थी को इस विषय से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी कक्षा में सामान्य व व्यावहारिक तौर पर प्राप्त हो तो वह विभिन्न होटलों व पर्यटन संबंधी सार तैयार कर फोटो के साथ वीडियो अपलोड कर आय प्राप्त करने में सफल हो सकता है। सोशल मीडिया पर सुन्दर तरीके से आवश्यक व ज्ञानवर्द्धक जानकारी अपलोड करना भी जीविका का माध्यम बनता जा रहा है।

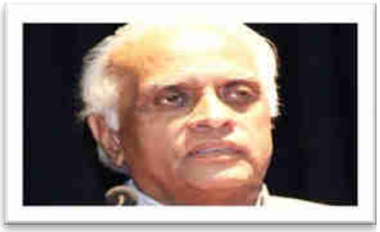

युवाओं को स्वावलंबी बनाकर उन्हें समाज के प्रति दायित्व की भावना से ओतप्रोत करने वाले संस्कार ही वास्तविक शिक्षा है। प्राचीन काल में हुए अनुसंधानों को वर्तमान की आवश्यकताओं से प्रासंगिक बनाने की व्यवस्थाएं बनानी होंगी । शाश्वत मूल्यों की वैज्ञानिकता तभी उपयोगी सिद्ध होगी जब हम अपना विवेक जागृत रखेंगे। उच्च शिक्षण संस्थानों का कार्य युवा वर्ग में ऐसी दक्षता निरंतर सृजित करने का ही है।

प्रोकुठियाला किशोर बृज .

अध्यक्ष,

हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद

हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद

पंचकूला -134109 (हरियाणा)

दूरभाष : 0172-2570743,

अणुडाक : chairpersonhshec@gmail.com